रुद्रप्रयाग से केदारनाथ का यात्रा-मार्ग
केदारनाथ
त्रियुगीनारायण
गौरीकुंड
सोनप्रयाग
फाटा
दिउरी ताल
गुप्तकाशी
ऊखीमठ
कुंड
अगस्त्य मुनि
रुद्रप्रयाग
सतोपंथ
वसुधारा
माणा
फूलों की घाटी
हेमकुंड
बदरीनाथ
घघरिया
भ्यूडर
गोविन्द घाट
विष्णुप्रयाग
जोशीमठ
गोपेश्वर
चमोली
पीपलकोटी
नंदप्रयाग
कर्णप्रयाग
रुद्रप्रयाग
देवप्रयाग
श्रीनगर
ऋषिकेश
हरिद्वार
हरिद्वार से बदरीनाथ का यात्रा-मार्ग
(मानचित्र पैमाने के अनुसार नहीं है)
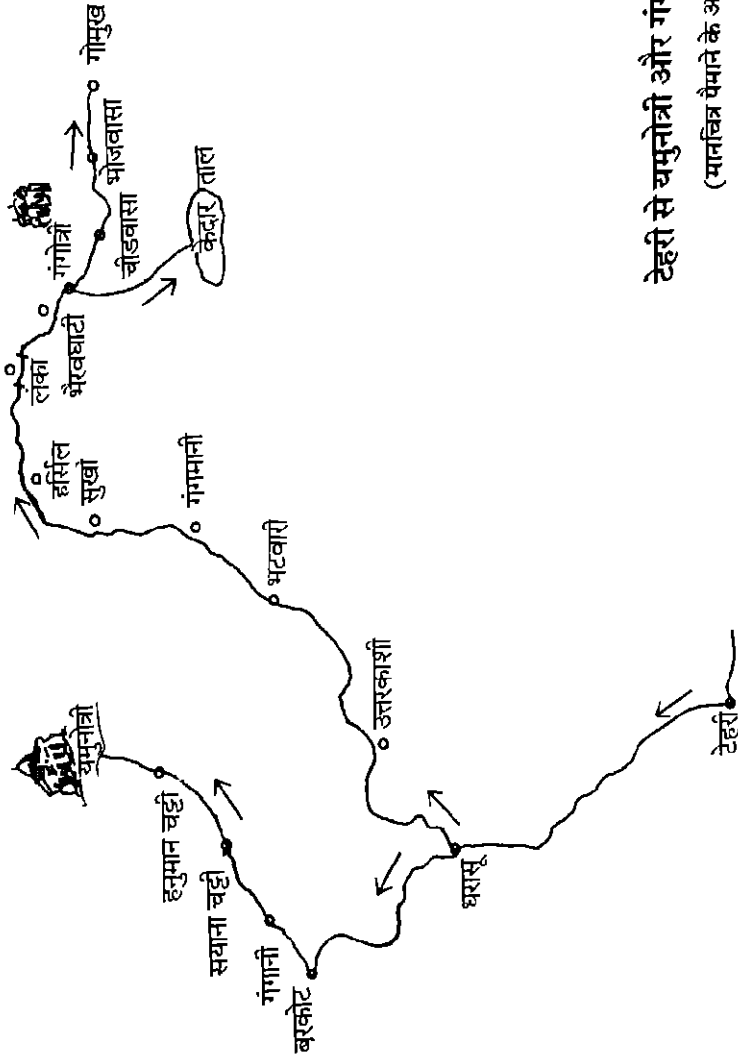
टेहरी से यमुनोत्री और गंगोत्री का यात्रा-मार्ग

(मानचित्र पैमाने के अनुसार नहीं है)

उत्तराखंड की यात्रा

उत्तराखंड की यात्रा

डा० एस० केशवमूर्ति

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्राक्कथन

राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों में अच्छे पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के साथ-साथ हमारी परिषद् छात्रों के उपयोग के लिए पूरक अध्ययन की पुस्तकें भी समय-समय पर तैयार करवाती रही है। इस क्षेत्र में अब तक पचास से अधिक पुस्तकें हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में प्रकाशित की जा चुकी है। प्रस्तुत पुस्तक इसी शृंखला में तैयार की गई एक और कड़ी है।

पुस्तक के लेखक हमारे ही सहयोगी डा० एस० केशवमूर्ति हैं जो इस समय मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक है। डा० केशवमूर्ति ने उत्तराखंड की यात्रा अपनी रुचि की दृष्टि से की थी और उसी दृष्टि से उन्होंने इस यात्रा का वर्णन भी लिखा था। किन्तु परिषद् के कुछ कार्यकर्ताओं ने जब उस वर्णन को पढ़ा तो उन्हें लगा कि इससे न केवल विद्यार्थियों को, अपितु प्रौढों को भी उत्तराखड की बहुत रोचक जानकारी मिल सकेगी। इस दृष्टि से हमने इस पुस्तक को कुछ गोष्ठियों में संपादित कर वर्तमान रूप प्रदान करने के लिए डा० केशवमूर्ति से कहा।

इस पुस्तक की भाषा और शैली बहुत ही सहज और रोचक है। एक अहिन्दी भाषी विद्वान के द्वारा इतनी सुन्दर पुस्तक लिखी गई है, यह और भी श्रेय की बात है। हमें विश्वास है कि इस पुस्तक का भारत के विभिन्न भागो में स्वागत होगा और इसके अध्ययन से छात्रों मे उत्तराखड की तथा भारत के अन्य भागों की यात्रा करने में रुचि उत्पन्न होगी। इस पुस्तक का कथ्य और भाषा-शैली 14 से 17 वर्ष के आयु वर्ग के बालकों के लिए उपयुक्त है, किन्तु विषय की रोचकता और भाषा की सरलता के कारण युवा और प्रौढ़ व्यक्ति भी इसके अध्ययन से लाभ उठा सकेंगे ऐसा हमारा विश्वास है। हम चाहेंगे कि इस प्रकार के और भी यात्रा-वर्णन छात्रों और प्रौढ़ों के लिए हम लोग प्रस्तुत कर सकें।

मैं पुस्तक के लेखक डा० केशवमूर्ति को उनके इस सफल प्रयास के लिए हार्दिक बधाई और धन्यवाद देता हूँ। पुस्तक के संपादन में श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय', श्री प्रभाकर द्विवेदी, प्रो० अनिल विद्यालंकार, श्री निरंजनकुमार

सिंह, डा० शशिकुमार शर्मा, डा० रामजन्म शर्मा और डा० अनिरुद्ध राय ने विशेष रूप से योग दिया है। मैं इन सबके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

इस पुस्तक में छपे सभी छायाचित्र हमे उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। आवरण पर जिस पारदर्शी को छापा गया है वह डा० ध्रुवज्योति लाहिड़ी की खींची हुई है। मैं इनका विशेष आभारी हूँ।

पी०एल० मल्होत्रा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
मई 1986

अनुक्रम

हरिद्वार

हरिद्वार दिल्ली से पूर्वोत्तर दिशा में 263 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यह शिवालिक पहाड़ी का पाद-प्रक्षालन करनेवाली गंगा के दाहिने किनारे पर बसा हुआ है। नगाधिराज हिमालय के वक्ष से उतरकर पुण्यसलिला गंगा प्रथम बार यहाँ समतल प्रदेश में प्रवेश करती है। हरिद्वार को हरद्वार भी कहते हैं, क्योंकि 'हरि' और 'हर' अर्थात् विष्णु और शिव के धामों के लिए यही प्रवेश द्वार है। अतः दोनों नाम प्रचलित है। श्रद्धालु जन हरिद्वार में स्नान करने के बाद हिमालय के आँचल में स्थित बदरीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री आदि की यात्रा प्रारंभ करते हैं।

हरिद्वार पुराने जमाने में मायावती के नाम से प्रसिद्ध था। चीनी यात्री ह्वेनसाङ ने अपने यात्रा-वर्णन में इसका नाम 'मो-यू-लो' लिखा है। कहा जाता है कि कपिल मुनि के शाप से राजा भगीरथ के पूर्वज भस्म हो गए थे। उनके उद्धार के लिए गंगा का अवतरण आवश्यक था। इसके लिए भगीरथ ने कठिन तपस्या की और गंगा को उतार लाने मे वे सफल हुए। इस कथा से संबंधित होने के कारण हरिद्वार कपिल स्थान के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसे गंगाद्वार भी कहते है।

पुराणो में प्राप्त एक अन्य विवरण से भी हरिद्वार के महत्त्व पर प्रकाश पड़ता है। अमृत प्राप्त करने के लिए सुरो और असुरों ने समुद्र का मंथन किया था। इससे जो चौदह रत्न प्राप्त हुए, उनमे से एक अमृत-कलश भी था। सुर और असुर दोनों उस पर अपना अधिकार चाहते थे। कलश सुरों के हाथ पड़ गया था इसलिए वे उसे लेकर भागे। असुरों ने उनका पीछा किया। वे बारह दिन और बारह रात लगातार सुरों के पीछे दौड़ते रहे। इस भाग-दौड़ में सुरों ने अमृतकलश को देवलोक के आठ स्थानों के साथ-साथ हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में भी रखा था जहाँ अमृत की कुछ बूँदे गिर गई थीं। अतः इसकी पवित्र स्मृति मे इन चारो जगहों पर हर बारहवे वर्ष कुभ का पर्व मनाया जाता है। देश भर के श्रद्धालु जन यहाँ स्नान करने के लिए आते है। कुभ-पर्व पर इन स्थानो मे स्नान करना मोक्षदायक माना जाता है।

अपनी विशालता में ये मेले विश्व के सबसे बड़े मेले है। इनमें भारत की सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शुक्र और बृहस्पति कुंभ राशि पर तथा सूर्य और चंद्र क्रमशः मेष और धनु राशि पर होते है, तभी कुंभ मेला लगता है। यह स्थिति बारह साल मे एक बार आती है। छह वर्ष पर अर्धकुंभ का मेला लगता है।

हरिद्वार का क्षेत्रफल 10 4 वर्ग किलोमीटर है। यह समुद्रतल से 294 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। अप्रैल से नवंबर तक का मौसम अत्यंत सुहावना होता है। पर यात्रियो की भीड़ बारहो महीने लगी रहती है। सर्दी मे काफी ठंड पड़ती है। गर्मियों मे दिन गर्म और राते ठंडी रहती है। लोग गर्मियों में सूती और सर्दी मे ऊनी कपड़े पहनते है। मुख्य भाषा हिन्दी है। पर यात्रा स्थान होने के कारण अन्य भाषाएँ भी लोग आसानी से समझ जाते है। अंग्रेजी से भी काम चलता है। यात्रियो के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाएँ है। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से भी पर्यटक आवास-गृह है। इसके अलावा होटल और अन्य आवास-स्थान भी ठहरने के लिए मिल जाते है।

हम लोग दिल्ली से ट्रेन द्वारा हरिद्वार पहुँचे। नई जगह होने के कारण रहने की व्यवस्था करने मे कुछ असुविधा होना स्वाभाविक था। पर सुरसरि के तट, विशेष रूप से हरि की पैड़ी के दर्शन और स्नान ने सारी क्लांति हर ली।

'हरि की पैड़ी' एक अत्यत प्राचीन स्नान-घाट है, जहाँ श्री विष्णु के पैरों की छाप पत्थर की दीवार पर अंकित है। यह ब्रह्मकुंड के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसी जगह पर राजा श्वेत ने ब्रह्मा की तपस्या की थी और वरदान प्राप्त किया था। अतः इसका नाम ब्रह्मकुंड पड़ा। यही राजा भर्तृहरि ने बड़ी कठिन तपस्या की थी। उनके भाई विक्रमादित्य ने यहाँ पर घाट और पैड़ियो का निर्माण किया। यहा हरिचरण मंदिर, राजा मानसिंह की छतरी, गंगा जी का मन्दिर आदि दर्शनीय स्थान है।

हरि की पैड़ी पर घंटाघर के सामने एक चबूतरा है। चबूतरा इतना विशाल है कि हजारो लोग एक साथ खड़े हो सकते हैं। [illegible] बड़ी [illegible] बनाए [illegible]। यात्रीगण [illegible] पकड़ [illegible] स्नान करते [illegible]।

स्नान घाट पर [illegible]। [illegible] पकड़ना मना है। मछलियों [illegible] है। आप गोलियाँ खरीदकर [illegible] पानी मे फेंकिए, उसे [illegible] मछलियाँ [illegible] है। [illegible] देखने योग्य है [illegible]।

शाम का समय अत्यंत सुहावना होता है। यद्यपि गंगा जी की आरती शाम के सात बजे शुरू होती है, फिर भी पाँच बजे से ही भीड दोनों किनारे जम जाती है। सैकड़ो लोग फूल भरे दोनों में घी का दीप जलाकर गंगा में बहा देते हैं। गंगा मे सैकड़ो तैरते हुए दीप मन को मोह लेते है। मैने भी कई दीप बहाए।

हरिद्वार मे बहुत-से घाट है। सुभाष-घाट पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर की एक मूर्ति स्थापित है। इसी घाट पर कथा, कीर्तन और भजन हुआ करते हैं, जिनमें हजारो की सख्या में लोग भाग लेते है। शाम के समय अनगिनत नर-नारी अपने बच्चो सहित बैठकर गगा की धारा के दर्शन का आनंद लेते है। यहाँ कई सेवा-समितियों के दफ्तर है जिनके कार्यकर्ता यात्रियों की सेवा करते हैं। रोगियो को मुफ्त दवा बाँटी जाती है और गरीबो को रोटियाँ।

आगे चलें तो कुशावर्त घाट मिलेगा जहाँ अहल्याबाई ने अपनी सारी संपत्ति गरीबो मे बाँट दी थी। श्रवणनाथ घाट के पास श्रवणनाथ का मंदिर है। गणेशघाट छोटे-छोटे मदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हनुमान का मंदिर है जिसमे उनकी बहुत बड़ी मूर्ति है। इसके आगे गोघाट है जहाँ लोग प्रायश्चित करने के लिए जाते है। गोघाट के सामने एक बड़ा मैदान है जिसमे कुंभ और अर्द्धकुभ के समय विभिन्न प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

हरिद्वार में चद्रग्रहण, सूर्यग्रहण, पूर्णमासी, अमावस्या एव गंगा दशहरा पर भी काफी भीड़ होती है और मेले लगते है।

हरिद्वार में स्थित श्री गोरखनाथ का गुप्त मदिर दर्शनीय है। श्री काल भैरव मंदिर एव वहाँ सगमरमर से बनी विश्वरूपदर्शन की मूर्ति अपनी सुन्दरता मे अद्वितीय है। इनके अतिरिक्त यहाँ और भी अनेक मंदिर है। यहाँ के देव-मंदिरो मे सोने-चाँदी के गहनों से मूर्तियों को अलकृत करने की प्रथा नहीं है। केवल चमकदार कपड़े और नकली मणियो की माला पहनाते है। न तो यहाँ दक्षिण के मदिरो की भाँति नारियल फोडकर पूजा करते हैं न केला जैसा फल भोग मे चढता है। आरती कपूर की नही, घी की बत्ती की होती है। जब दक्षिण भारत के लोग मदिर में देवताओं के दर्शन करते है तब यह महसूस करते है कि देवताओ के अलंकार मे सोने-चाँदी के जेवरों की कमी है। उनके यहाँ तो देवताओ के हजारो-करोड़ो रुपयो के सोने-चाँदी के जेवर होते हैं।

हरिद्वार मे मद्य-मास-मछली का सेवन निषिद्ध है। हर कही शाकाहारी भोजन मिलता है। [illegible] के लिए यह स्थान प्रसिद्ध है। मनोरजन के लिए अनेक सिनेमा गृह है। यहाँ तीन बाजार है — मोती बाजार, बड़ा बाजार और अपर रोड बाजार।

हरिद्वार से चार किलोमीटर दूर भीमगोड़ा है। यहाँ एक छोटा-सा तालाब,

एवं भीम का मंदिर है। कहा जाता है कि प्यास लगने पर पांडुनंदन भीम ने इस सरोवर को अपने घुटनों से खोदा था। उस समय पांडव हिमालय की यात्रा पर थे।

भीमगोड़ा का नहर-निकास दर्शनीय स्थान है। यहाँ जाने के लिए मैंने गंगा नहर, हरिद्वार के सहायक अभियंता से अनुमति ले ली थी, क्योंकि बिना अनुमति के यहाँ नहीं जा सकते। यहीं से ऊपरी गंगा-नहर निकली है। गंगा-नहर का निर्माता 'काटले' नामक एक अंग्रेज इंजीनियर था। इस नहर से उत्तर प्रदेश के एक विशाल भू-भाग की सिंचाई होती है। साथ ही इस पर बिजली घर भी बनाए गए हैं।

सबको मोहित करने वाला स्थान है सप्तऋषि आश्रम एवं सप्त सरोवर। यह हरिद्वार से पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सप्त गोत्र के प्रवर्तक ऋषिगण गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि है। इन सात ऋषियों की तपस्या में बाधा न डालकर उनके लिए रास्ता छोड़, उनकी कुटियों के सामने ही बहती है सात धाराओं में विभक्त होकर गंगा। वहाँ जाते ही मन स्नान करने को ललच उठा और मैं आधे घंटे तक गंगा में नहाता रहा। शांत वातावरण में स्थित आश्रम की शोभा अवर्णनीय है। वहीं ठहर जाने के लिए मन लालायित हो उठता है। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए किराए पर आवास-गृह भी मिलते हैं। इच्छा होते हुए भी मैं वहाँ ठहर न सका, क्योंकि पट खुलने के दिन बदरीनाथ पहुँचना था।

आश्रम का घेरा लगभग एक किलोमीटर है। इसके अंदर शंकर, लक्ष्मी और सरस्वती के मंदिर हैं जिनमें संगमरमर की सुन्दर मूर्तियां स्थापित हैं। आश्रम में एक वेद-पाठशाला भी है, जहां अनेक कवियों के नाम कक्षों पर अंकित हैं जैसे—कालिदास-कक्ष, भास-कक्ष, भवभूति-गृह आदि। यहां एक वेधशाला भी है, जो मानसिंह के जमाने की है।

आश्रम के बाहर पंचमुखी हनुमान, राधाकृष्ण, सीताराम एवं गणेश जी के अलग-अलग मंदिर हैं। यहाँ से कुछ दूर आगे बढ़े तो परमार्थ आश्रम मिलता है जो अपने नाम के अनुरूप है। यहां रामायण, महाभारत, पुराणों की कथाओं आदि के आधार पर कई घटनाएँ और कथा-प्रसंग मनोरम शिल्प द्वारा दर्शित हैं। दर्शक अपना हृदय यहाँ खो बैठते हैं। यहां एक ऐसा शिवलिंग है जिस पर एक हजार आठ छोटे-छोटे शिवलिंग अंकित हैं। दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मीनारायण की मूर्तियों के सैकड़ों बिंब आइनों के द्वारा प्रतिबिंबित हैं।

हरिद्वार से लगभग छह किलोमीटर की दूरी पर स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय है। संस्कृत और आयुर्वेद की शिक्षा के लिए यह विशेष प्रसिद्ध है। विदेश से भी लोग यहां आकर पढ़ते हैं।

हरिद्वार से चार किलोमीटर दूर स्थित कनखल मे दक्षेश्वर महादेव मंदिर है। कहा जाता है कि सती के पिता दक्ष प्रजापति ने यहाँ महायज्ञ किया था। दक्ष अपने दामाद भगवान् शकर से बहुत असंतुष्ट रहते थे। अतः उन्होने उन्हें उस यज्ञ में नहीं बुलाया। शकर के मना करने पर भी सती अपने पिता के महायज्ञ मे पहुँची। पर दक्ष प्रजापति ने उनका भी अपमान किया। इस पर सती ने उसी यज्ञ-कुड मे कूदकर अपने प्राणो की आहुति दे दी। जब यह खबर शिवजी को मिली, तो वे क्रोधाभिभूत हो उठे। उनके गणो ने यज्ञ को विध्वस कर दिया एवं दक्ष का सिर काट डाला। भगवान् विष्णु के प्रयत्न से शकर का क्रोध शांत हुआ। इसकी याद मे इस जगह पर दक्षेश्वर महादेव मदिर की स्थापना की गई है। उसके समीप ही सती-ताल भी है। यहाँ दक्ष-यज्ञ की कहानी चित्रों द्वारा मंदिर मे अंकित है। यह दक्ष-मदिर पचतीर्थो मे से एक माना जाता है।

हरिद्वार मे स्थित बिल्व पर्वत पर मनसा देवी का मंदिर है। चढ़ाई बड़ी कठिन है, यद्यपि सीढ़ियाँ बनी हुई है। यदि प्रातःकाल चढ़ेंगे तो चढ़ने में कठिनाई महसूस न होगी। मै अपने परिवार के साथ सवेरे ही पहाड पर चढा था। ऊपर से हरिद्वार का दृश्य अति सुन्दर दीख पड़ता है। अब रज्जु-मार्ग बन जाने से यहाँ पहुँचना सरल हो गया है।

नील पर्वत पर चंडी देवी का मंदिर है जिसका निर्माण जम्मू के महाराज सरजीत सिंह ने सन् 1829 ई० मे कराया था। गंगा को पार कर मदिर जाना पडता है। वहाँ गौरीशकर, नीलेश्वर महादेव तथा हनुमान जी की माता अजनादेवी का मदिर है।

हरिद्वार के पास एक ओर भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स का बहुत बड़ा सर-कारी कारखाना है जिसमें विद्युत उत्पादन के विशाल उपकरण तैयार किए जाते है। दूसरी ओर औषधि-निर्माण का नवीनतम केन्द्र है जो जीवनदायिनी दवाओं के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। इन दोनों संस्थाओ की स्थापना से हरि-द्वार को नवीन महत्त्व मिल गया है और यह स्थान धार्मिक मान्यता और वैज्ञानिक प्रगति का अद्‌भुत संगम हो गया है।

मनुष्य समाज मे सब जगह अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं। जो अच्छे हैं, हर कहीं अच्छे होते हैं। बुरों के लिए तो तीर्थ की पवित्रता का भी कोई महत्त्व नही। इसका कटु अनुभव मुझे पहले ही दिन हो गया जबकि स्नान करते समय किसी ने बडी चतुराई से मेरे बैग मे से नौ सौ रुपये के नोट निकाल लिए। इस स्थिति में आगे की यात्रा की व्यवस्था करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। पर इससे यह सबक मिला कि यात्रा मे पूरी सावधानी बरतनी चाहिए।

हरिद्वार के दर्शनो के बाद हम लोग देहरादून की ओर रवाना हुए। हरिद्वार से तीन घंटे का रास्ता था। हम देहरादून में एक जैन आश्रम मे स्थित धर्मशाला में ठहर गए।

देहरादून की औसत ऊँचाई समुद्रतल से 640 मीटर है। दून शब्द मूलतः संस्कृत शब्द द्रोण का बिगडा हुआ रूप है। हिमालय के पाद-प्रदेश और शिवालिक की पहाड़ियों के बीच पश्चिमी दून, हर की दून, पूर्वी दून, पाताल दून, आदि बहुत-सी घाटियाँ या द्रोणियाँ है। उनमे देहरादून सबसे विस्तृत, प्राकृतिक सौंदर्य में भरपूर, हरी-भरी और सबसे सुहावनी घाटी है।

इस घाटी की बाह्य सीमाएँ पश्चिम में यमुना और पूर्व में गंगा नदियाँ बनाती है। घाटी के मध्य में रिस्पना और बिन्दाल नाम की बरसाती नदियाँ है, जिनमें केवल वर्षा-काल में ही पानी रहता है। घाटी की दो अन्य नदियाँ है—टोंस और सोंग। इनके बीच देहरादून नगर बसा हुआ है जहाँ गुरु रामराय का 'देहरा' या पवित्र स्थल है जो देहरादून नाम पड़ने का कारण है। यहाँ गुरु रामराय का गुरुद्वारा भी है।

सन् 1878 ई० में देहरादून में 'फारेस्ट रेंजर्स स्कूल' खुला। वही कालांतर मे विकसित होकर 'इंडियन फारेस्ट रेंजर्स कॉलेज' बन गया। यहाँ वन अनुसंधान संस्था विश्वविद्यालय स्तर की है और वन्य जीवन सबंधी सभी विद्याओ और काष्ठ उद्योगों पर अन्वेषण करती है। 'दून स्कूल' भी यहाँ की एक प्रमुख शिक्षा सस्था है। पर्वतारोहण के प्रशिक्षण के लिए भी एक संस्था काम करती है।

देहरादून से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित प्रेमनगर मे 'इंडियन मिलिटरी एकेडेमी' स्थापित की गई है। यही विगत द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मन और इतालवी नजरबदों के शिविर थे। युद्ध के उपरांत उन नजरबदों के चले जाने पर, पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियों को बसाने के लिए इसका उपयोग किया गया। देहरादून के निकट तिब्बती शरणार्थियों की भी एक बस्ती है। यहाँ चाय के कुछ बाग भी है। देहरादून का बासमती चावल बहुत प्रसिद्ध है।

तेल और प्राकृतिक गैस आयोग, पेट्रोलियम इंस्टीट्यूट तथा सेटेलाइट यानी भू-उपग्रह आदि केन्द्रों की स्थापना ने देहरादून नगर की महत्ता को चार चाँद लगा दिए है।

हम देहरादून से तेरह किलोमीटर की दूरी पर स्थित सहस्रधारा देखने गए। सहस्रधारा एक दर्शनीय स्थान है। वहाँ पानी की सहस्रधाराएँ फुहारे की तरह गिरती रहती हैं। घंटों मैंने फुहार का आनंद उठाया। पहाड़ के ऊपर चढ़कर उस झील को मैंने ढूँढ़ने का प्रयत्न किया, जिसमें से ये सहस्रधाराएँ निकलती

हैं। पर सारा प्रयास व्यर्थ हुआ क्योंकि वहाँ कोई झील है ही नही। पानी का स्रोत खेतों की मेडो मे कही है जहाँ से वह टपकता रहता है। सहस्रधारा में एक गरम पानी का भी स्रोत है। गधकयुक्त इस गरम जल मे स्नान करने के आकर्षण से लोग दूर-दूर से यहाँ आते रहते हैं।

स्वतत्रता-प्राप्ति के बाद देहरादून नगर का औद्योगीकरण हुआ है। यहाँ के बने छोटे बल्ब विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

हम देहरादून से मसूरी गए। मसूरी अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण 'पहाड़ों की रानी' नाम से प्रसिद्ध है। देहरादून से मसूरी की दूरी 35 किलो-मीटर है। यह समद्र तल से 2005.5 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। ग्रीष्म व शरद ऋतु का मौसम अत्यत सुहावना होता है। सितम्बर-अक्तूबर में यहाँ शरदोत्सव भी मनाया जाता है।

हरियाली से ढकी मसूरी की पहाड़ियाँ चित्ताकर्षक हैं। जब नागिन की तरह बल खाते टेढे-मेढ़े मसूरी मार्ग पर बस चलती है, तब वे बच्चों के खिलौनों की भाँति दिखाई देती हैं। मसूरी के आस-पास अनेक जलप्रपात हैं। इनमे 'कैम्प्टी फॉल्स' विशेष दर्शनीय है। यह 186 मीटर की ऊँचाई से फव्वारे के रूप मे गिरता है।

गनहिल पर जाने के लिए यहाँ 400 मीटर लंबा एक रज्जु-मार्ग बना है। यात्री इसमे बैठकर ऊपर जाते है और वहाँ पहुँचकर मसूरी के चारों ओर की प्राकृतिक सुषमा का आनद उठाते हैं।

अंग्रेजी राज्य के समय यहाँ दो तोपें रखी रहती थीं। इसी से इसका नाम तोप टिब्बा या गनहिल पड़ा। यहाँ से नीचे की ओर मसूरी एवं देहरादून का सुंदर दृश्य दिखाई देता है और दूसरी ओर टिहरी गढ़वाल की ऊँची-नीची पहाड़ियो का, जिनके अंक मे सीढ़ीनुमा छोटे-छोटे खेत हैं। यहाँ से हिमालय की हिमाच्छादित पर्वतमालाओं के दिव्य दर्शन भी होते हैं। साथ ही जहाँ तक दृष्टि जाती है, हरियाली ही हरियाली नज़र आती है और इस हरियाली के भी अनेक रूप है।

पहाड़ी पर एक सड़क है जो बैठे ऊँट के समान प्रतीत होती है। अतः उसका नाम 'केमल्स बैक रोड' पड़ा है। कपनी बाग एक सुदर पिकनिक स्थल है जहाँ नगरपालिका ने कृत्रिम ताल बना कर तैरने तथा नौकायन की सुविधा सुलभ कर दी है।

मसूरी का सबसे ऊँचा पिकनिक स्थल समुद्रतल से 2250 मीटर की ऊँचाई पर स्थित नाग टिब्बा है। यहाँ से भी मसूरी, देहरादून, टिहरी गढ़वाल व गगनचुंबी हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों के मनोहारी दृश्य दिखाई देते है। यहाँ पर टेलीविजन रिले टावर भी स्थापित किया गया है।

साँझ ढलते ही गांधी चौक, कुलडी बाजार अथवा माल रोड से देहरादून में चमकते असंख्य विद्युत दीपकों की चमचमाहट देखते ही बनती है। लगता है जैसे आकाश नीचे उतर आया हो और उसमे सहस्रो तारिकाएँ चमक रही हों।

मसूरी में ठहरने के लिए अनेक छोटे-बड़े होटल तथा सरकारी विश्राम-गृह हैं। बगले अधिकांश टीलों और चट्टानों को तोड़कर बनाए गए है। यहाँ भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के प्रशिक्षार्थियों के प्रशिक्षण के लिए 'श्री लाल-बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी' स्थापित की गई है। यहाँ अखिल भारतीय सेवाओं के लिए चुने गए अधिकारियो को प्रशिक्षित किया जाता है।

मसूरी के दर्शनीय स्थलों को देखकर हम देहरादून होते हुए दो मई के सवेरे छह बजे ऋषिकेश के लिए रवाना हो गए।

ऋषिकेश

ऋषिकेश, हृषीकेश का बिगड़ा हुआ रूप है। हृषीकेश का अर्थ है इंद्रियों का स्वामी अर्थात् विष्णु या कृष्ण। विष्णु का धाम होने से इसका नाम ऋषिकेश पड़ा। यह हरिद्वार से 24 किलोमीटर दूर गंगा के दाहिने तट पर बसा हुआ है। चारों ओर पर्वतों से घिरा हुआ ऋषिकेश, प्रकृति की गोदी मे खेलते शिशु-सा लगता है मानो प्रकृति ने अपनी सारी छटा इस पर लुटा दी हो।

ऋषिकेश की गणना भारत के प्रमुख तीर्थों में की जाती है। यह समुद्र-तल से 336 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और इसका क्षेत्रफल 7.52 वर्ग किलोमीटर है। ग्रीष्म और शरद ऋतु मे यहाँ का मौसम अत्यत सुहावना होता है। स्नान करने के लिए यहाँ तीन घाट है—त्रिवेणी, लक्ष्मण झूला एव स्वर्गाश्रम घाट। यहाँ भी मद्य-मांस-मछली का प्रयोग निषिद्ध है। ऋषिकेश, 'चारो धाम' के लिए प्रवेश द्वार है। कहा जाता है कि श्रीरामचद्र के अनुज भरत ने यहाँ कठिन तपस्या की थी जिनकी स्मृति में यहाँ एक भरत मदिर है।

यात्रियो के ठहरने के लिए यहाँ अनेक धर्मशालाएँ है। मैं अपने परिवार के साथ 'आंध्र आश्रम' में ठहरा जो तिरुपति देवस्थानम् की ओर से संचालित है। आश्रम की बाईं ओर बालाजी का मदिर है जिसकी मूर्ति तिरुपति बालाजी की याद दिलाती है। दाईं ओर शिवजी का मंदिर है। यहाँ के पुजारी दक्षिण के है और दक्षिण भारतीय विधि से पूजा करते है। यहाँ की मूर्तियाँ सोने-चाँदी, हीरे पन्ने के बने आभूषणों से सुशोभित है।

ऋषिकेश मे स्वर्गाश्रम के निकट ही रामचन्द्र जी के अनुज शत्रुघ्न का एक छोटा-सा मंदिर है। यहाँ से छह किलोमीटर की दूरी पर लक्ष्मण का मदिर है। कहा जाता है कि लक्ष्मण ने वहाँ कठिन तपस्या की थी। मदिर से कुछ आगे बढे तो लक्ष्मण झूला मिलेगा। 40 मीटर लंबा यह झूला-पुल गंगा नदी पर सन् 1939 मे बनाया गया था। इस पुल की विशेषता यह है कि दोनों सिरों को छोड़, बीच में कहीं भी आधार प्रदान नही किया गया है। सच्चे

अर्थ में यह झूला बना हुआ है। कभी-कभी हवा के झोके या यात्रियों के भार से थोड़ा-थोड़ा हिलता भी है। इस पुल के ऊपर खच्चर सामान लेकर चलते है। काफ़ी दूरी से भी यह पुल दीख पड़ता है। इस पर चलने वाले यात्री दूर से रग-बिरंगी चीटियों जैसे लगते है।

लक्ष्मण झूला के दूसरे सिरे पर स्थित है 'कैलास आश्रम'। असल में यह आश्रम नही वरन् 13 मजिलो वाला एक सुंदर भवन है जो ऊँचाई के कारण कैलास पर्वत की याद दिलाता है। हर मजिल में देव-देवियो की मूर्तियाँ स्थापित है और आखिरी मंजिल मे शंकर भगवान् की मूर्ति है। आपको ऐसा भ्रम होगा कि असल में आप कैलास पर आरूढ होकर नीचे देख रहे है। ऊपर से ऋषिकेश की सुन्दर झाँकी दिखाई देती है।

ऋषिकेश से एक किलोमीटर की दूरी पर ऋषिकुंड है। कहा जाता है कि श्री रामचन्द्र जी ने इस कुंड मे स्नान किया था। उसके पास ही रघुनाथ मंदिर है। इस कुड मे नहाकर हमने मदिर के दर्शन किए।

मुनि की रेती से होते हुए आप आगे बढेगे तो गगा के बाएँ तट पर कई दिव्य भवनों के दर्शन होंगे। वहाँ जाने के लिए नाव से गंगा पार करते हैं। गंगा के तट पर गीता भवन, स्वर्गाश्रम, परमार्थ निकेतन, आनंदाश्रम आदि उल्लेखनीय हैं। इसी से कुछ आगे ऊँचाई पर महेशयोगी का योगाश्रम स्थित है। ऋषिकेश में योग तथा ध्यान का प्रशिक्षण देने वाली एक अन्य प्रसिद्ध संस्था है—योग निकेतन। ऋषिकेश में बहुत बड़ी सख्या में साधु-संत निवास करते है। अत: इसे साधु-सतों की नगरी कहे तो अत्युक्ति न होगी।

तीन मई की शाम को चार बजे बदरीनाथ की ओर जाने के लिए टिकट आरक्षित करवाने गया। पूछताछ के बाद मालूम हुआ कि केवल यातायात पर्यटन विकास सहकारी संघ वाले आज से बदरीनाथ की ओर बस चला रहे है। अन्य संस्थाओं ने बस चलाना अभी आरंभ नहीं किया है क्योंकि बदरीनाथ का मंदिर पाँच तारीख को खुलने वाला है। यात्रा के दिनो में टिकट खरीद लेने से पहले हैजे का टीका लगवाना और उसका प्रमाण-पत्र पास में रखना आवश्यक होता है। इसकी व्यवस्था करके जब मैं टिकट की खिड़की पर पहुँचा तो टिकट देने वाले ने पूछा—आपको फर्स्ट क्लास चाहिए या सैकंड क्लास? मैं कुछ समझ न पाया। किसी न किसी तरह टिकट खरीद कर बाहर आ जाना चाहता था। बोला, "दो फर्स्ट क्लास टिकट"। बाद में सोचा कि रेलगाड़ी मे तो फर्स्ट और सैकंड क्लास होते हैं, पर बस में यह कैसे? वहाँ एक कंडक्टर खड़ा था। उससे इसके संबंध में पूछा। उसने मुझे सिर से पैर तक देखा और बोला, "बस मे प्रथम छह सीटें, जो ड्राइवर के पास हैं, वे फर्स्ट

क्लास की हैं, उनके पीछे सकड क्लास होता है।" सामने की सीटों पर बैठने से बाहर का दृश्य देखने में सुविधा होती है। यात्रा का मार्ग पहाड़ी है, अतः वहाँ छोटी बसें ही चलती है। हमे सवेरे ही उठकर यहाँ आना था। अतः बदरीनाथ जाने के लिए आवश्यक सामग्री का इतजाम रात मे ही कर लिया।

बदरीनाथ

चार मई के सवेरे चार बजे ही मेरी आँखें खुल गई। मैंने सबको जगाया, स्नान किया और सामान बाँध लिया। जिन चीजो की हमें जरूरत नही थी, उनकी एक गठरी आंध्र आश्रम के 'क्लोक रूम' में छोड़ दी। यहाँ एक गठरी के लिए एक रुपया किराया लेते है चाहे कितने ही दिन रखिए। यात्रियों को इससे बड़ी सुविधा होती है। फिर हम बस-स्टैण्ड की ओर निकल पड़े। बस हमारे इंतजार में खड़ी थी। हम चाय पीकर बस में बैठ गए। ठीक साढे पाँच बजे बस बदरीनाथ की ओर रवाना हुई। हमारी बस से स्पर्धा करती हुई और सात बसें भी एक साथ निकल पड़ी। ऐसा लग रहा था मानो रेल के आठ डिब्बे एक के बाद एक लगे हो। घूम-घूमकर चलने के कारण इस यात्रा मे कितने ही लोगों को मिचली होने लगती है। नीबू या पिपरमैंट की गोलियो से आराम मिलता है। अतः यात्री ये चीजें अपने साथ ले जाते है।

ऋषिकेश से 71 किलोमीटर चलने पर देवप्रयाग मिला। धर्मग्रथों में इसे सुदर्शन क्षेत्र भी कहा गया है। यही पर अलकनंदा और भागीरथी का संगम होता है और इसके बाद ही यह नदी 'गंगा' के पवित्र नाम से विख्यात होती है। दो पवित्र नदियो का सगम प्रयाग कहलाता है। प्राचीन ग्रथों मे प्रयाग का महत्त्व इस प्रकार बताया गया है—

"प्रयाग तुअनरोयस्तु माघस्नान करोति च।

न तस्य फलं सख्याप्ति श्रणुदेवर्षिनत्।।"

अर्थात् हे देवर्षि! प्रयाग में जो स्नान करता है, उसके पुण्यो की गणना नही है।

देवप्रयाग एक छोटी पहाडी बस्ती है जहाँ लगभग दो सौ घर हैं। नदी के किनारे-किनारे बस का मार्ग है। देवप्रयाग इस यात्रा-मार्ग के पच प्रयागों में प्रथम है। दो नदियों के संगम पर पानी की धारा इतनी तीव्र है कि यात्री को स्नान करने मे बहुत सावधान रहना पड़ता है। यहाँ नदी पार करने के लिए एक पुराना झूले का पुल है।

यह नगर नदी की धारा से करीब तीस मीटर ऊपर एक मजबूत चट्टान पर बसा है और इसके पृष्ठ का पहाड़ सीधी दीवार की तरह खड़ा है।

यहाँ का रघुनाथ मंदिर शिल्प की दृष्टि से दर्शनीय है। मंदिर में स्थापित रघुनाथ जी की मूर्ति काले पत्थर से बनी है जिसकी ऊँचाई लगभग दो मीटर है। मंदिर के पुजारी महाराष्ट्र के भट्ट ब्राह्मण होते है। मंदिर के बाहर शिला पर ब्राह्मी लिपि के अनेक लेखो से बदरी-केदार की यात्रा की प्राचीनता सिद्ध होती है। यहाँ पर मंदिरो मे टंगे घंटों पर भी ऐतिहासिक लेख है। मंदिर की पृष्ठभूमि में शंकराचार्य जी की गुफा है। किंवदंती है कि इस गुफा से अंदर ही अंदर गंगोत्री, यमुनोत्री, बदरीनाथ एवं केदारनाथ के लिए मार्ग बना है।

देवप्रयाग से साठ किलोमीटर आगे जाने पर गढ़वाल की पुरानी राजधानी श्रीनगर मिलता है। चौदहवीं शताब्दी में महाराजा जयपाल द्वारा बसाए गए इस नगर में कमलेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है।

अलकनंदा इस घाटी मे धनुषाकार होकर बहती है। कमलेश्वर महादेव के मंदिर के संबंध में यह कथा प्रचलित है कि रामचंद्र जी जब रावण का वध करके उत्तराखंड के तीर्थों के दर्शन करते हुए यहाँ आए तो उन्होंने सहस्र कमलों से शिवजी की अर्चना आरंभ की। शिव ने उनकी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए एक कमल छिपा लिया। अर्चना के समय राम ने जब एक कमल कम पाया तो वे अपना एक कमल-नयन चढाने को उद्यत हो गए। उसी समय शिवजी ने प्रकट होकर उनका हाथ पकड़ लिया। तभी से यह मंदिर कमलेश्वर महादेव के मंदिर के नाम से विख्यात है।

यहाँ अनंत चतुर्दशी को इस क्षेत्र का सबसे बड़ा मेला लगता है। ऐसी मान्यता है कि जो महिलाएँ रात में जलता हुआ दीपक हाथ मे लिए मंदिर के सामने खडी रहेंगी, उनकी मनोकामना पूरी हो जाएगी। प्रतिवर्ष मेले के अवसर पर अब भी इस पर्वतीय अंचल की महिलाओं को हाथों मे जलते दीप लेकर पूरी रात खड़े हुए देखा जा सकता है।

श्रीनगर में गढवाल विश्वविद्यालय स्थित है। श्रीनगर के पास कालामठ तथा प्रसिद्ध शक्ति साधना केन्द्र चंद्रबदनी सिद्ध पीठ भी हैं।

अलकनंदा की दूसरी ओर इंद्रकील पर्वत है। कहा जाता है कि पांडवों के वनवास काल मे धनुर्धर वीर अर्जुन ने यहाँ दिव्यास्त्र प्राप्त करने के लिए तप किया था। यहीं भगवान् शिव ने किरात वेष में अर्जुन के शौर्य की परीक्षा के लिए युद्ध किया था। यह भी कहा जाता है कि संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भारवि ने यहाँ की यात्रा के बाद ही महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्' की रचना की थी। यह भी प्रसिद्ध है कि ऋषि विश्वामित्र की योग-साधना को भंग करने के लिए इंद्र ने स्वर्ग की अप्सरा मेनका को यहाँ भेजा था।

श्रीनगर से लगभग 30 किलोमीटर दूर पौड़ी नगर है। यहाँ पौड़ी जिले

का मुख्यालय है। पौड़ी से हिमालय की बड़ी मनोरम छटा के दर्शन होते है। आप किसी भी स्थान पर खड़े हो जाइए। यदि आकाश मे बादल न हों तो नगाधिराज की एक-एक चोटी गिन सकते है। पर्यटन की दृष्टि से पौड़ी को विकसित करने की योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही है।

अब हम रुद्रप्रयाग की ओर रवाना हुए, जो पंचप्रयागो मे द्वितीय प्रयाग है। यह श्रीनगर से 34 किलोमीटर दूर है। अपराह्न डेढ़ बजे रुद्रप्रयाग पहुँचे। रुद्रप्रयाग का पुराना नाम पुनाड था। कहा जाता है कि यहाँ नारदजी ने भगवान् शंकर की आराधना कर संगीत के मर्म को जान लिया था।

रुद्रप्रयाग मे एक बड़ा बाजार है जहाँ यात्रियो के लिए सभी चीजे मिलती हैं। हम जल्दी-जल्दी भोजन से निबट कर संगम की ओर चले। यहाँ बदरीनाथ से आने वाली अलकनंदा और केदारनाथ से निकलने वाली मदाकिनी नदियो का संगम है। रुद्रप्रयाग एक ऐसा केन्द्र है जहाँ से केदारनाथ एव बदरीनाथ के रास्ते अलग-अलग हो जाते है।

बस रवाना हुई। बत्तीस किलोमीटर आगे चलने पर कर्णप्रयाग मिला जो समुद्र तल मे 788 मीटर ऊँचा है। यह पचप्रयागो मे तृतीय प्रयाग है। यह एक छोटी बस्ती है जिसकी आबादी लगभग पाँच हजार है। यहाँ पिंडर और अलकनंदा नदियो का संगम होता है। पिंडर का उद्गम स्थान उत्तर प्रदेश का मनोरम पिंडारी ग्लेशियर है। कुती पुत्र कर्ण ने यही तपस्या एव यज्ञ किया था। अतः इसका नाम कर्णप्रयाग पडा। किनारे पर कर्ण और उमा के छोटे-छोटे मंदिर है।

यहाँ भी बस नदी के किनारे-किनारे ही चलती है। एक ओर ऊँचे पहाड़ हैं तो दूसरी ओर कल-कल करती बहती फेनिल धारा।

पहाड़ो पर चीड के बड़े-बड़े वन है। इनकी इमारती लकड़ियो को नीचे मैदान मे लाने के लिए सड़क का मार्ग खर्चीला होता है। इसलिए इन पेड़ों को काटकर नदी के प्रवाह मे उनके पट्टे बहा दिए जाते है। धारा के साथ बहकर ये शहतीर नीचे मैदान मे पहुँच जाते है। रास्ते मे हमने अनेक स्थानो पर नदी के तेज प्रवाह मे इस प्रकार के शहतीरों को बहते हुए देखा।

इस मार्ग पर जगह-जगह पहाड़ की चट्टानो पर बड़े-बड़े अक्षरो मे राष्ट्र प्रेम को जगाने वाली घोषणाएं अंकित हैं, जैसे—

"हम भारत के वीर सैनिक हैं, सर कटा सकते है पर सर झुका नहीं सकते।"

"प्राणों से भी प्यारी है मिट्टी हिन्दुस्तान की।"

"सावधान भारत के नौजवान।"

"देश के बहादुरो, मातृभूमि की लाज बचाओ।"

"भारत की रक्षा हमारी रक्षा।"
"हम मातृभूमि के सैनिक है, तन-मन-धन अर्पित है।"
"हम भारत के रखवारे है।"
"जय जवान, जय किसान।"

स्थान-स्थान पर सैनिकों का आवागमन दिखाई दिया। भारत के सीमा प्रांत के प्रारंभ होते ही सैनिको का भारी इंतजाम है। सैनिको की बावन लारियाँ एक साथ हमारे देखते-देखते गुजरी। 1962 मे चीनी आक्रमण के बाद सीमा की सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

रास्ते भर इधर-उधर छोटी-छोटी बस्तियाँ दृष्टिगोचर होती है। पहाड़ी लोग भेड-बकरियाँ चराते हुए मधुर राग छेड़ते रहते है। हर कही पहाड को काट-काट कर सीढीनुमा खेत बनाए गए है। उनकी लहराती हरियाली को देखकर किसका मन मुग्ध नही होता! खेतों मे लहराते गेहूँ के पौधे सिर हिलाकर मानो हमारा स्वागत कर रहे थे। कल-कल निनाद करते पहाड़ी झरने निर्मल व मीठे पानी से अमृत की याद दिलाते थे। यहाँ के लोग बड़े परिश्रमी है। स्त्रियाँ तड़के ही उठकर चारा और ईंधन एकत्र करने में लग जाती हैं। यहाँ की खेती बहुत कुछ महिलाओ के परिश्रम पर निर्भर है। उनका नैसर्गिक सौंदर्य देखते ही बनता है। उनका रूप-रंग अप्सराओं जैसा है।

21 किलोमीटर आगे बढने पर नदप्रयाग मिला। कण्वाश्रम से लेकर नदगिरि तक जो क्षेत्र है उसे नंदप्रयाग कहते है। यह पंचप्रयागो मे चतुर्थ प्रयाग है। यहाँ पर गोपालजी तथा चडिका देवी के मदिर है।

यह रमणीक स्थान समुद्रतल से 914 मीटर की ऊँचाई पर है। पुराने कागजो मे इसका नाम कडासु है जो काडव आश्रम का अपभ्रंश है। यहाँ से 9 किलोमीटर दूर अलकनदा के तट पर बैरास कुड और महादेव का मदिर है। इस स्थान पर दशानन ने तपस्या की थी, अत: इस क्षेत्र का नाम दशोली पडा।

नदप्रयाग से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है - चमोली। चमोली जिले के मुख्यालय गोपेश्वर मे शिव मदिर है, जो केदारनाथ के पश्चात उत्तराखड के सबसे प्राचीन मदिरो मे गिना जाता है। यहाँ एक त्रिशूल पर पाली भाषा मे एक लेख अकित है जो पुरातत्त्व की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

गोपेश्वर से उन्नीस किलोमीटर दूर तुगनाथ का मदिर है। यह समुद्रतल से 2072 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। उत्तराखड के सभी प्रसिद्ध मदिरों से अधिक ऊँचाई पर स्थित होने के कारण ही शायद इसे तुगनाथ (उत्तुग-

नाथ) नाम दिया गया है। यहाँ के पुजारी भी केरलीय नंबूदरी ब्राह्मण हैं। यहाँ खूब हरियाली छाई रहती है।

तुंगनाथ के निकट ही आकाशगंगा नामक स्रोत है। तुंगनाथ के शिव मंदिर के आँगन में खड़े होकर एक ओर हिम का साम्राज्य और दूसरी ओर नीली, काली और हरी चोटियों की शृंखला देखते ही बनती है।

चमोली से 17 किलोमीटर दूर पहाड़ों के बीच पीपलकोटी नामक नगर बसा है। समुद्र तल से 1300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह स्थान अत्यंत रमणीक एवं स्वास्थ्यवर्धक है। पीपलकोटी गढ़वाल में अपने माल्टा, नारंगी, नींबू तथा अन्य नींबू प्रजातीय फलों के लिए प्रसिद्ध है।

फिर हमारी बस बिरही पहुँची। बिरही मछलियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ मछली पकड़ने का एक केंद्र भी है। यहाँ अलकनंदा एवं बिरही नदी का संगम होता है।

रास्ते में हमने देखा कि भोटिया लोग भेड़-बकरियों पर नमक लादे जा रहे थे। उत्तर प्रदेश के उत्तर में अवस्थित जिला पिथौरागढ़ के उत्तरी भू-भाग को भोट कहते हैं। यहाँ के निवासी भोटिया कहलाते हैं। इनका पुराना नाम शौका है। यह जाति परंपरागत रूप से भेड़-पालन तथा ऊन-उद्योग पर जीवित है। ये सौम्य प्रकृति के होते हैं। ये भोटिया बोली बोलते हैं। उनके रहन-सहन और रीति-रिवाजों में कुछ अंश तक तिब्बती प्रभाव परिलक्षित होता है।

भोटिया लोग मध्यम कद के होते हैं। उनके गालों की हड्डियाँ उभरी होती हैं और आँखें छोटी होती हैं। ये एक जगह से दूसरी जगह पर पड़ाव डालते रहते हैं।

इनके सबसे बड़े मददगार होते हैं कुत्ते। इनके गले में लोहे की कीलें लगा हुआ पट्टा पड़ा रहता है। इसी से वे भेड़िया और भालू जैसे खूँखार जानवरों से भी टक्कर ले लेते हैं। ये कुत्ते दिन में तो शांत और चुपचाप रहते हैं पर रात में खूँखार बन जाते हैं।

मोटर-मार्ग बनने से पहले जब लोग पैदल यात्रा करते थे, तब पैदल चलने वालों के लिए जगह-जगह पर आराम करने या रात में ठहरने के लिए पड़ाव बने थे, जिनको चट्टी कहते हैं। हर 5-7 किलोमीटर पर ऐसी चट्टियाँ बनी हुई थीं। चट्टियों में कहीं पक्के मकान थे तो कहीं कच्चे। पैदल यात्रा कम हो जाने के कारण इनकी संख्या बहुत कम हो गई है। यहाँ खाने की सब चीजें — दूध, दही, मेवा, पेड़ा आदि मिल जाती हैं, पर यात्रा मार्ग होने के कारण सब महँगी मिलती हैं। यहाँ यात्रियों को किराए पर बिछौना एवं रजाइयाँ मिल जाती हैं। कालीकमली वाले बाबा की धर्मशालाएँ यात्रियों को ठहरने के लिए मुफ्त में मिल जाती हैं।
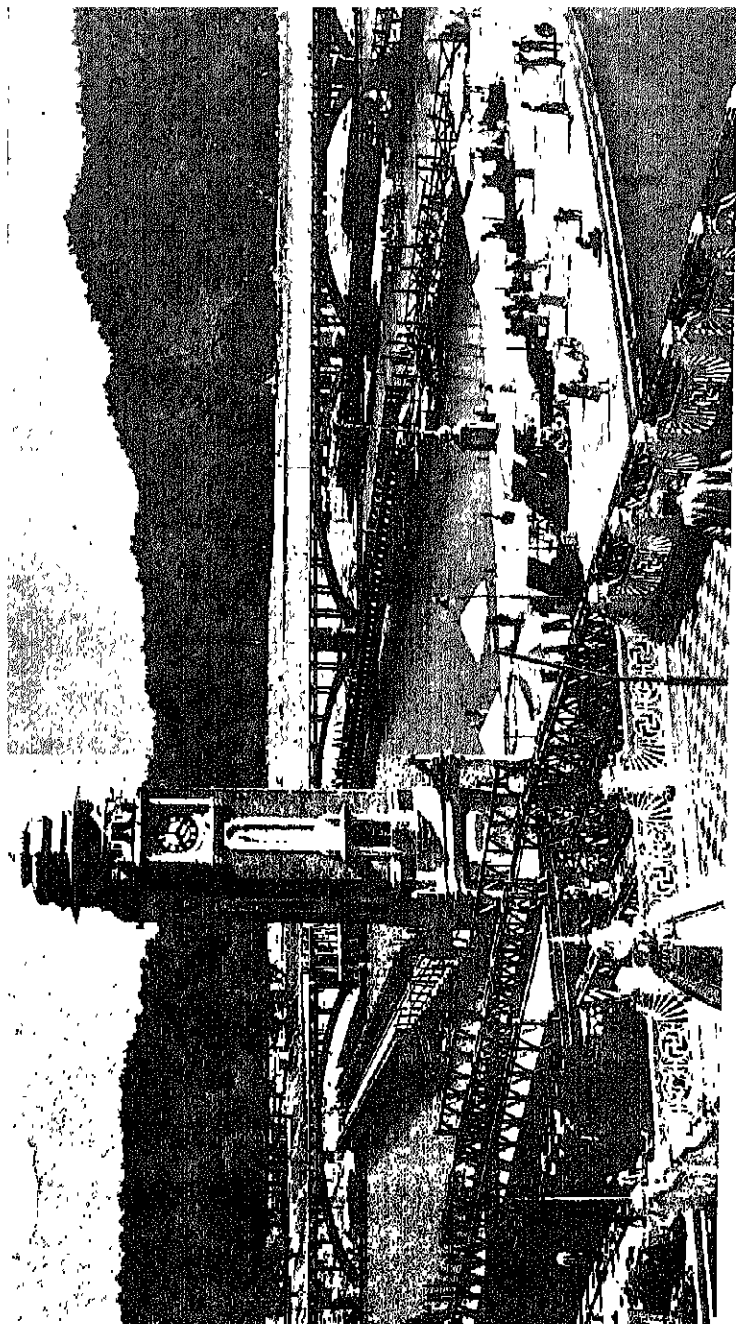
हरिद्वार में 'हरि की पैड़ी' नामक स्नानघाट के सामने बना घंटाघर और चबूतरा।
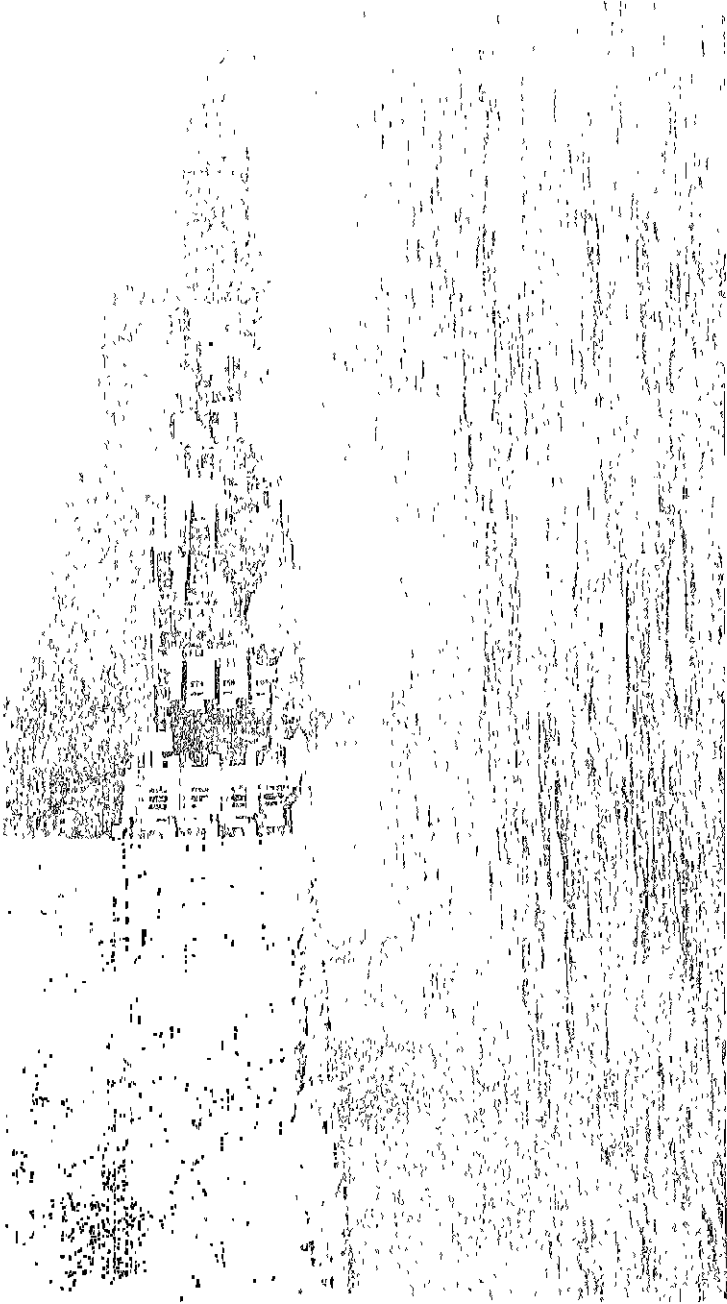
हरिद्वार में गंगा नहर का एक दृश्य। इस नहर से उत्तर प्रदेश के एक विशाल भू-भाग की सिंचाई होती है।
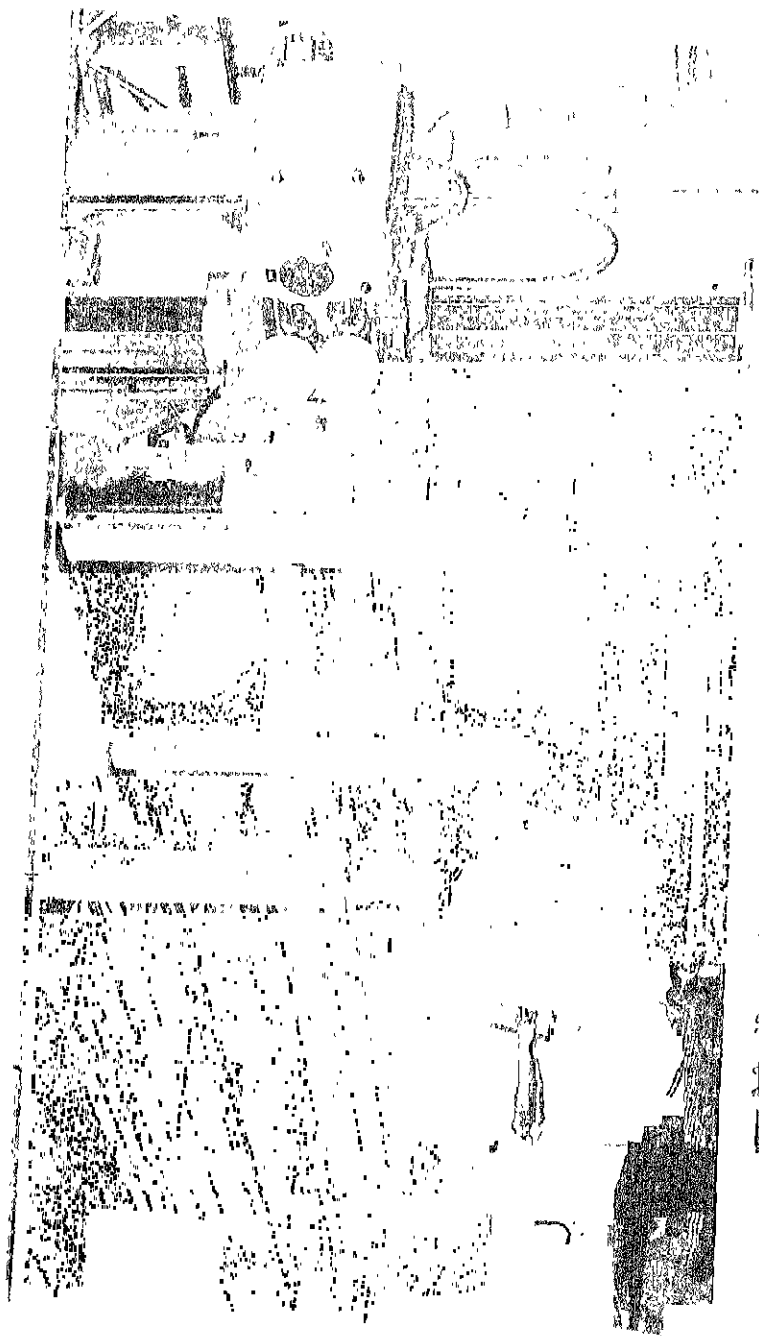
भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स के हरिद्वार स्थित सरकारी कारखाने का एक दृश्य। इसमें विद्युत उत्पादन के विशाल उपकरण तैयार किए जाते हैं।

देहरादून के वन अनुसंधान केन्द्र का भवन।
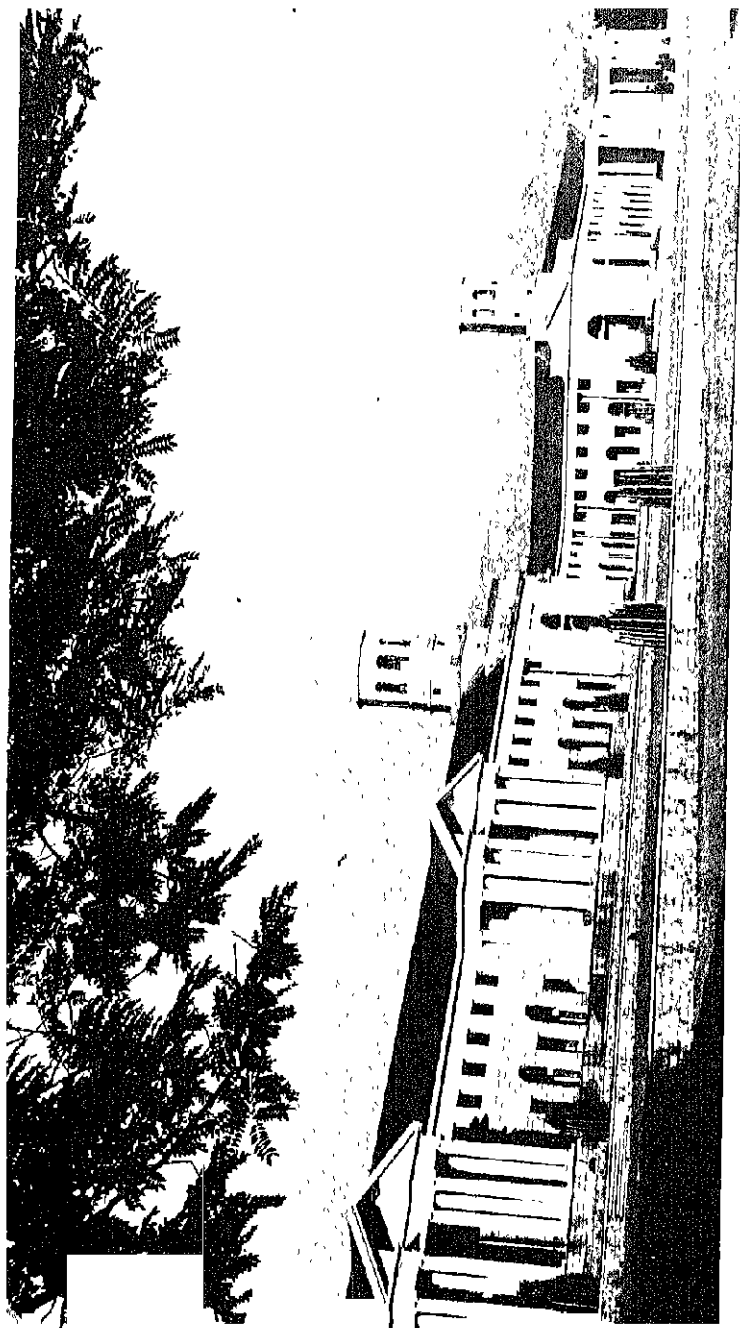
यात्रा-मार्ग के पंच प्रयागो में प्रथम—देव प्रयाग।
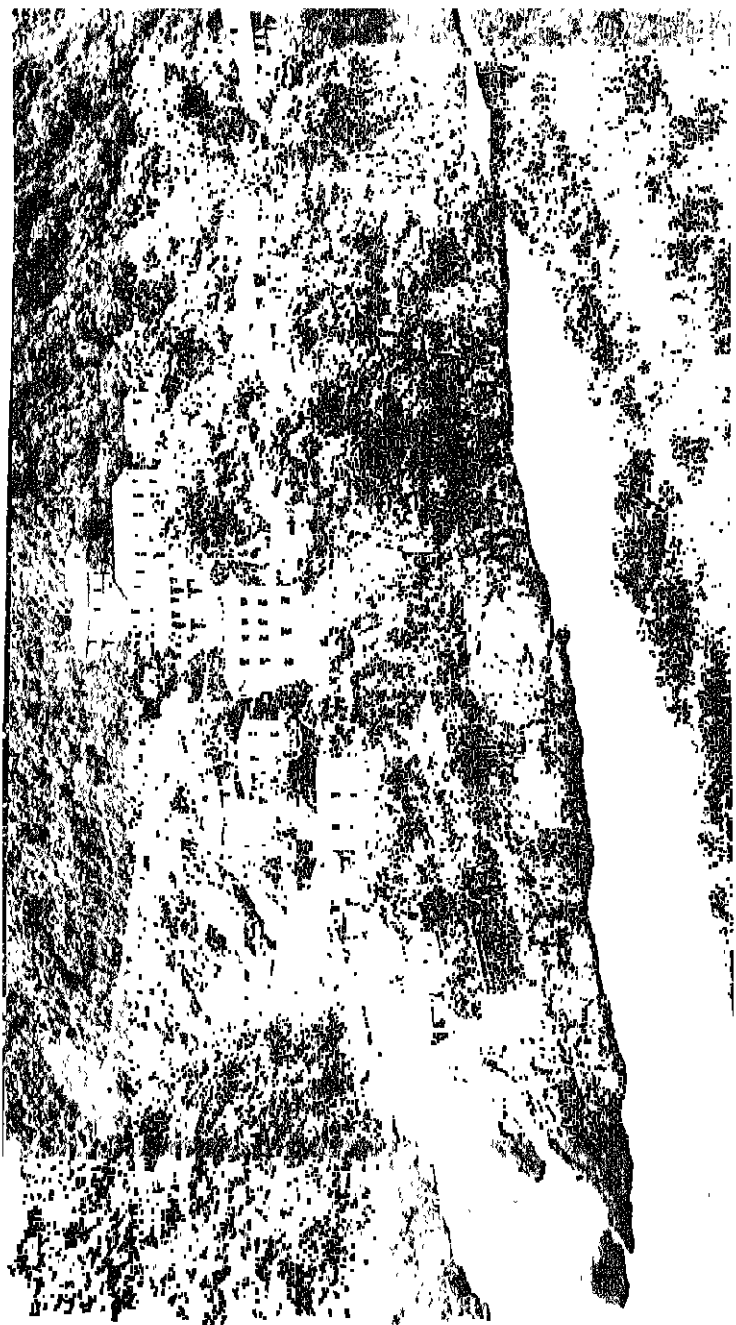
अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों के संगम पर बसा रुद्र प्रयाग।

जोशीमठ का एक दृश्य। आदि शंकराचार्य ने इसी स्थल पर तपस्या की थी।
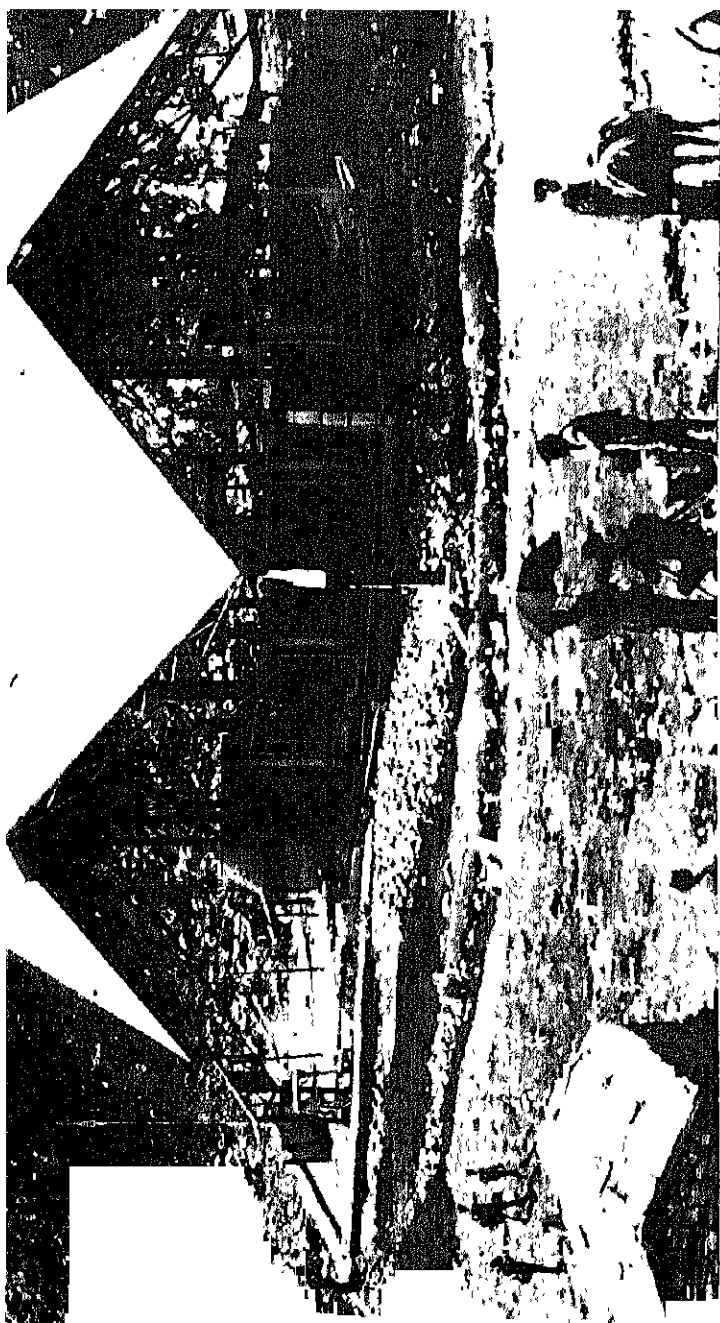
हेमकुंड लोकपाल का गुरुद्वारा। यह सिखों का पवित्र तीर्थ स्थान है।

पीपलकोटी से आगे बढने पर गरुड़गंगा और अलकनंदा का संगम है जिसके किनारे गरुड़ का एक छोटा मंदिर है। आस्तिक लोग यहाँ नहा-धोकर यहाँ के पत्थर के टुकडों को घर ले जाते हैं। उनका विश्वास है कि घर में इन पत्थरों के टुकड़ों की पूजा करने से साँप का डर नही रहता। यहीं से पाताल गंगा की चढाई शुरू होती है। अपने नाम को सार्थक करते हुए यह पाताल की याद दिलाती है। यदि नीचे देखते है तो हृदय धक-धक करने लगता है। सैकड़ों मीटर नीचे मटमैले पानी की धारा बड़ी तेज़ी से बहती है। दो-तीन किलोमीटर तक यह भयानक रास्ता चलता है। अतः बस चालक को बहुत सावधान रहना पड़ता है।

उसके आगे गुलाबकोटी है। कहा जाता है कि सतयुग में पार्वती ने यहाँ तप किया था। शिवजी से विवाह करने की इच्छा से उन्होंने वर्षों तक पत्ते खाकर तपस्या की। इसी कारण पार्वती का एक नाम 'अपर्णा' भी है।

शाम को साढ़े चार बजे हम जोशीमठ पहुँचे। इसे ज्योतिर्मठ भी कहते हैं। यह स्थान पीपलकोटी से 34 किलोमीटर दूर है और यह समुद्र तल से 1,890 मीटर ऊँचा है। यहाँ जगद्गुरु शंकराचार्य का मंदिर और मठ है। यहाँ श्री बदरीनारायण की एक गद्दी भी है। आदि शंकराचार्य ने यहाँ कठिन तपस्या की थी। उन्होंने अद्वैत मत का प्रतिपादन किया और पूरब में जगन्नाथपुरी, पश्चिम में द्वारिका, उत्तर में जोशीमठ तथा दक्षिण में शृंगेरी, इन चार मठों की स्थापना की थी। इन मठों के गुरु आज भी शंकराचार्य ही कहलाते है। जोशीमठ में आदि शंकराचार्य ने ही बदरीनारायण की गद्दी बनवाई थी। यहाँ एक शहतूत (कीमू) का पेड़ है जिसके नीचे बैठकर शंकराचार्य ने कई शास्त्र रचे थे। यहाँ एक नरसिंह मंदिर है जिसकी मूर्ति काले पत्थर की बनी है। उस मूर्ति का बायाँ हाथ बड़ा पतला है। पुजारी का कथन है कि यह दिन-ब-दिन पतला होता जा रहा है। जब यह पूर्ण रूप से गलकर गिर जाएगा तब खंड प्रलय होगी। बदरीनाथ के सब रास्ते टूट जाएँगे और कोई वहाँ पहुँच न पाएगा।

नरसिंह मंदिर के बाहर द्रौपदी और गरुड़ की मूर्तियाँ हैं। नव दुर्गा आदि की मूर्तियों पर लोग घी चढाकर पूजा करते हैं। मंदिर के बगल में एक कुंड है जिसमें नरसिंह एवं दंड नामक दो जल धाराएँ आकर गिरती हैं।

सर्दी के मौसम में जब बदरीनाथ के पट छह महीने के लिए बंद हो जाते हैं तब यहीं बदरीनाथ की पूजा होती है। उस समय बदरीनाथ की चल मूर्ति के साथ पुजारी नंबूदरीपाद भी यहीं आकर रहते है। मंदिर के पट खुलने पर चल मूर्ति को साथ ले वे वापस चले जाते है।

उत्तरी सीमा की सुरक्षा के लिए जोशीमठ में एक सैनिक छावनी भी स्थापित की गई है।

जोशीमठ से आगे छह किलोमीटर की उतराई ही उतराई है। उतरते समय ऐसा लगता है कि मानो हमारा हृदय भी बैठा जा रहा हो। जोशीमठ से 'गेट सिस्टम' शुरू होता है। रास्ता तंग होने के कारण एक समय में एक ओर की बसों को जाने दिया जाता है। ऋषिकेश से जो आठ बसें चली थीं, उनमें केवल दो ही ठीक समय पर आ पाईं। गेट खुला था। हम बदरीनाथ की ओर चल पड़े। तुरंत गेट बंद हो गया। बाद में आने वाली छहों बसों को रात में यहीं पड़ाव डालना पड़ा। दूसरे दिन आठ बजे के बाद गेट खुलने पर ये बसें आगे बढ़ पाईं।

हमारी बस धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी। हिमालय की शोभा का अव-लोकन करते हुए, हम भविष्य बदरी आ गए। यहाँ अलकनंदा और धौली गंगा का संगम होता है। यह स्थान विष्णुप्रयाग नाम से प्रसिद्ध है जो पंचप्रयागों में अंतिम है। यह 1625 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। अति दुर्गम स्थान होने के कारण विष्णुप्रयाग में कोई बस्ती नहीं है। प्रयागों में सबसे अधिक वेगवती धाराएँ यहीं पर मिलती हैं जिनके दर्शन से श्रद्धा और भय दोनों का संचार होता है।

विष्णुप्रयाग से हम गोविन्द घाट पहुँचे। यहाँ पर मंदिरों के साथ-साथ एक गुरुद्वारा भी है। गोविंद घाट से दो मार्ग हैं। मोटर मार्ग बदरीनाथ की ओर जाता है और दूसरा पैदल मार्ग संसार प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' और हेमकुंड लोकपाल की ओर।

गढ़वाल मंडल में अनेक ऐसी फूल घाटियाँ हैं जिनका सौन्दर्य संसार में अद्वितीय है। उनमें मुख्य है—भ्यूंडर की फूल घाटी, रुद्र हिमालय की फूल घाटी, हर की दून की फूल घाटी, माँझी वन की फूल घाटी, सुक्खी और धराली की फूल घाटियाँ, कुशकल्याण और सहस्रताल की फूल घाटियाँ, क्यार्की बग्याल की फूल घा टयाँ आदि। कुछ घाटियाँ ऐसी हैं जहाँ पहुँचना अत्यंत कठिन है।

भ्यूंडर की फूल घाटी ही 'फूलों की घाटी' के नाम से विख्यात है। इसका वर्णन सबसे पहले प्रसिद्ध पर्यटक फ्रैंक स्मिथ ने 'वैली ऑफ फ्लावर्स' नामक अपनी पुस्तक में किया। यह पुस्तक 1931 में प्रकाशित हुई। उसे पढ़कर विश्व के अनेक पर्यटक, वनस्पति विशेषज्ञ तथा प्रकृति प्रेमी इस क्षेत्र में आने लगे। 'कामेट एक्सपेडिशन' वालों ने एक हजार फूलों के लिए नाम दिए हैं।

गोविन्द घाट से अलकनंदा का पुल पार कर पतली पहाड़ी पगडंडी से भ्यूंडर नदी के किनारे-किनारे चलकर दस किलोमीटर की दूरी पर भ्यूंडर गाँव है। भ्यूंडर गाँव से 5 किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई के बाद घघरिया नामक स्थान आता है। घघरिया में वन विभाग का डाक बंगला है। पर्यटक प्राय: घघरिया में डेरा डालकर सवेरे फूलों की घाटी में भ्रमण के लिए निकल जाते

हैं और तीसरे पहर लौट आते है। सामान्यत: तीसरे पहर के बाद वर्षा होने लगती है।

घघरिया डाकबंगले से करीब आधा मील भ्यूंडर नदी (जो लक्ष्मण गंगा के नाम से प्रसिद्ध है) के साथ-साथ जाने पर उत्तर की तरफ हेमकुंड लोकपाल के लिए मार्ग मुड़ जाता है। हेमकुंड मे एक गुरुद्वारा है। कहा जाता है कि सिक्खों के दसवे गुरु गोविन्द सिंह ने पूर्व जन्म मे यहीं कठिन तपस्या की थी। यहाँ एक ताल और लक्ष्मण का पुराना छोटा मंदिर है, जहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है।

फूलो की घाटी का मार्ग नदी के साथ-साथ पूर्व दिशा को जाता है। घघरिया से लगभग चार किलोमीटर जाने पर बामणीघाट नामक स्थान आता है जो कि अत्यंत संकरा है। यह फूलो की घाटी का प्रवेश द्वार है। इसे पार करते ही विश्व विख्यात फूलो की घाटी के दर्शन होने लगते है।

फूलो की घाटी लगभग 15 किलोमीटर तक फैली हुई है। यहाँ मखमली हरी दूब और हजारो प्रकार के रंग-बिरंगे फूल मन को मोह लेते है। घाटी में प्रवेश करने के बाद जैसे-जैसे आगे बढते जाते है, इसका ढाल कम होता जाता है और फैलाव विस्तार पाता जाता है। यह घाटी 3,352 मीटर से 3,658 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। कामेट पर्वत शृंखला का दृश्य भी इस घाटी का प्रमुख आकर्षण है।

इस घाटी मे जुलाई के अंतिम सप्ताह से सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक फूल खिले मिलते है। अगस्त मे संपूर्ण घाटी फूलो से सजी रहती है। अक्तूबर में बर्फ़ की पहली ठंडी हवा के साथ फूल मुरझाने लगते हैं और धीरे-धीरे बर्फ़ की मोटी चादर इनके ऊपर चढती जाती है।

गोविन्द घाट से लगभग 3 किलोमीटर आगे पांडुकेश्वर है। कहा जाता है कि इसे पांडवों के पिता पांडु ने बसाया था। महाराज पांडु यहीं रहते थे। पांडव भी यहीं पैदा हुए। शिवजी से धनुष लेने के लिए अर्जुन इसी मार्ग से तपस्या करने हिमालय पहुँचे। द्रौपदी के माँगने पर सौगंधिका पुष्प लाने के लिए भीम भी इसी मार्ग से गए। महाभारत के युद्ध के उपरांत पांडवों ने इसी मार्ग से स्वर्गारोहण किया था। पांडुकेश्वर से लगभग ग्यारह किलोमीटर आगे चलने पर हनुमान चट्टी मिलती है। यहाँ हनुमान का एक मंदिर है। कहा जाता है कि हनुमान से भीम यहीं मिले थे। हमने हनुमान-मंदिर मे दर्शन किए। इसके बाद ही हमारी बस 'देवदर्शिनी' नामक स्थान पर पहुँच गई। यहाँ से बदरीनाथ पुरी के दर्शन होने लगते हैं। लोग यहाँ पहुँचते ही "जय बदरी विशाल की" की जय-जयकार कर उठे। उस जय-जयकार से आकाश गूंज गया और हम गदगद हो यात्रा के सारे कष्टों को भूल गए।

अब तक हम 'बसस्टाप' पहुँच चुके थे। कड़ाके की सर्दी जोशीमठ से ही पड़ने लगी थी। अत अपना बोरिया-बिस्तर नीचे उतारकर हमने गरम कपड़े पहन लिए। एक कुली को बुलाकर बाजाली आश्रम ले चलने को कहा। वह आश्रम यहाँ से पौने तीन सौ मीटर की दूरी पर था। वहाँ के स्वामी जी ने सहर्ष हमारा स्वागत किया और ठहरने के लिए हमे एक कमरा दिया। अब तक साढ़े छह बज चुके थे। ठंड के कारण बाहर घूमने जाने का साहस नही हुआ। साथ ही बादलो के छा जाने से बाहर अँधेरा हो गया था। थोड़ी देर मे वर्षा भी होने लगी।

उस कमरे मे और भी दो लोग थे। साँवले रंग वाले हट्टे-कट्टे साठ-पैंसठ की उम्र के एक बुजुर्ग थे। उनकी पत्नी की उम्र लगभग पैंतालीस होगी। वे भी सोने के लिए बिस्तर बिछा रहे थे। स्टोव पर कुछ पक रहा था। गरम मसाले की सुगंध कमरे भर मे फैल रही थी, जिससे हमारे मुँह मे पानी आ रहा था। हम विवश थे। मैंने अपनी पत्नी से धीरे से कहा, "यदि हमे भी यह भोजन मिल जाता तो कितना अच्छा होता !" वह बोली, "तुम बेशरम हो। चुप रहो।"

इतने मे उस महिला ने मेरी पत्नी से इशारे से पूछा, "क्या आपने कुछ खाया ?" मेरी पत्नी ने भी इशारे से बताया कि अभी-अभी आए हैं। अभी पकाने का इरादा नही है। साथ मे पाव रोटी ले आए है, उसे अचार के साथ खा लेंगे। इन दोनों के हाव-भाव देख मुझे हँसी आ गई। इतने मे दो थालियों मे भात परोस कर वे बुजुर्ग मेरे सामने लाए और बोले, "खाओ साब।" मैं बोला, "आप खा लीजिए। हम बाद मे खाएँगे।" शायद उन्होने सोचा हो कि हम उन्हें निम्न जाति का समझकर नही खा रहे है। बोले, "हम अच्छी जाति के है। खाइए।"

मुझे हँसी आ गई। बोला, "हम जात-पाँत का भेद नहीं रखते। हमें अभी भूख नही है।" पर मेरी अंतरात्मा बोली, "तुम कितने झूठे हो ! यह दिखावा क्यों ?"

मैने उनसे पूछा, "आप कहाँ से आए है ?"

"कर्नाटक से।"

यह सुनते ही मैं बिस्तर से उछलकर उठ बैठा। संकोच का आवरण हट गया। अपनों से कौन-सा दुराव-छिपाव ? दोनो एक ही कर्नाटक प्रदेश से आए है। मैंने उनसे कन्नड़ में पूछा, "कर्नाटक मे कहाँ रहते है ?"

"मैसूर शहर में।"

"हम भी मैसूर शहर से आए हैं।"

"तो आप खा लीजिए न ।"

"बहुत धन्यवाद । अभी खा लूँगा ।" मैं खाने मे जुट गया। मेरी पत्नी की खुशी का ठिकाना न रहा । औरतो को कोई बोलने बतियाने वाला न मिले तो शायद उनका जीवन ही फीका हो जाए। आठ-दस दिन से उसकी बोली बंद थी; क्योंकि वह केवल मुझसे ही बात कर पाती थी । वह न तो हिन्दी जानती है और न अंग्रेजी । टूटी-फूटी हिन्दी मे औरों के साथ मेरे सामने बोलने मे शरमाती है । ऐसी अवस्था में जब अपनी बोली जानने वाला ढाई हजार किलोमीटर पार करके भी मिल गया है तो उस खुशी का वर्णन किन शब्दों मे किया जाए ।

यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बदरीनाथ से आकर्षित होकर सुदूर दक्षिण से पहले पहल अखंड ज्योति के दर्शन की लालसा लिए आने वालों में पहला व्यक्ति मै नहीं हूँ । पहले से ही ये बुजुर्ग पापय्या जी अपनी पत्नी राजम्मा के साथ आए हैं । इस अखंड ज्योति ने सबको एक सूत्र मे बाँध रखा है । भारत की अखंडता का साक्षात दर्शन हुआ ।

बातचीत से मालूम हुआ कि वे केवल बदरीनाथ के दर्शन कर लौटने वाले है । मेरे यह कहने पर कि हम केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री(गोमुख) भी जाने वाले है, उन्होने कहा, "आपको एतराज न हो तो हम भी साथ चलेंगे । ले चलिए । आप जैसे हिन्दी जानने वाले साथी से हमे बड़ी सुविधा होगी । खासकर मेरी पत्नी राजम्मा बहुत ऊब गई है । तीन महीने से उसके मुँह पर ताला पड़ा हुआ है । यह कन्नड़ के सिवा और कोई भाषा नहीं जानती । मैं तो किसी-न-किसी तरह टूटी-फूटी हिंदी में काम चला लेता हूँ । यह जल्दी गाँव लौटना चाहती है ।" मैं बोला, "अब तो बाते करने के लिए मेरी पत्नी है । चिंता न कीजिए ।" तब तक दोनो महिलाएँ बाते करने मे तल्लीन हो गई थीं। दोनों अपने-अपने अनुभव की बातें बता रही थीं। राजम्मा ने बताया कि आज सवेरे दो घंटे पकाने पर भी दाल नही पकी । आखिर थककर सूजी का उप्पमा बनाया था। गरम-गरम उप्पमा मुँह तक जाते-जाते ठंडा पड़ जाता था। वहाँ के स्वामी जी ने बताया कि ठंडे के कारण ही दाल जल्दी नही पकती है। स्वामी जी ने यह भी कहा कि देर तक स्टोव न जलाइए। यहाँ ऑक्सीजन की कमी है। स्टोव के जलने से ऑक्सीजन कम हो जाती है । साँस लेना कठिन हो जाता है। दम घुटने लगता है । कभी-कभी लोग दम घुटने से मर भी जाते हैं। अतः खिड़की खुली रहने दीजिए।

आज (5 मई को) साढे आठ बजे मंदिर के पट खुलने वाले थे । भीतर छह महीने से जलने वाली अखंड ज्योति के दर्शन आज होने वाले थे । अतः अखंड ज्योति के दर्शनों की लालसा लिए हम सपरिवार स्नान करने के लिए

तप्त कुंड की ओर चल पड़े। तप्त कुंड मंदिर के सामने पड़ता है। स्त्री और पुरुषों के नहाने के लिए अलग-अलग कुंड है। जहाँ स्त्रियाँ नहाती है, वहाँ पानी उतना गरम नही है, जितना पुरुषों के नहाने के कुंड में है। इनमें चौबीसों घंटे गरम पानी आता रहता है। यहाँ साबुन आदि लगाकर नहाना वर्जित है। कुंड मे प्रवेश करने पर लगता है कि मानो शरीर जल जाएगा, पर धीरे-धीरे उसका ताप सह्य हो जाता है। इतने तप्त जल में सिर देर तक नही डुबाना चाहिए, क्योंकि उससे चक्कर आने लगता है। इस पानी मे गंधक मिला हुआ है अतः इससे चर्म रोग दूर हो जाते है। इसका पानी पीना नही चाहिए क्योकि गंधक मिला होने से स्नायु रोग पैदा हो जाता है। इस तप्त कुंड के नीचे ही अलकनंदा का इतना शीतल जल बहता रहता है कि उसमे हाथ डालते ही उँगलियाँ ठंड के मारे अकड़ जाती हैं। प्रकृति की यह कैसी विचित्र लीला है।

तप्त कुंड से निकलकर हम मंदिर के सिंह द्वार पर आ गए। सामने हिम धवल चोटियों के दर्शन हुए। ठंड के कारण हाथ-पाँव ठिठुर रहे थे और दाँत किटकिटाने लगे थे। ठीक साढे सात बजे हिम की चोटियो से सूर्य भगवान् झाँकने लगे। हिममंडित शिखरों पर पड़ रही सूर्य की सुनहली किरणे अपूर्व दृश्य उपस्थित कर रही थी। हम सब सूर्य भगवान् की वंदना करने लगे।

बदरीनाथ का गुणगान महाभारत तथा अनेक पुराणो मे, विशेषतः स्कंद और पद्मपुराण में किया गया है। इसे देवताओं की अमर भूमि कहा गया है।

गायंति देवाः किलगीतकानि। धन्यास्तुते भारतभूमि भागे।
स्वर्गापवर्गाश्रितमार्गभूते। भवंति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

(देवता भी भारत भूमि का मधुर गुणगान करते हैं। धन्य है वह भारत भूमि जिसमे देवता गण अपने देवत्व को त्याग और स्वर्ग से उतर भारत भूमि में मनुष्य योनि मे जन्म लेकर अपने को धन्य समझते है)

बदरीनाथ की यात्रा तभी सफल मानी जाती है जब पंचबदरी के दर्शन हो जाते है। पंचबदरी ये है—

1. विशाल बदरी (जिनकी सीढ़ियों पर हम खड़े थे)
2. आदि बदरी (कर्ण प्रयाग से लगभग 18 कि० मी० दूर)
3. भविष्य बदरी (जोशीमठ के पास)
4. ध्यान बदरी (कुम्हार चट्टी के नीचे)
5. योग बदरी (पांडुकेश्वर में)

पुराणों में कहा गया है कि ब्रह्मा के कई बेटे थे। एक का नाम दक्ष था। दक्ष की सोलह पुत्रियाँ थी। उनमें तेरह का विवाह धर्मराज से हुआ। उनमे

से श्री मूर्ति अत्यत शीलवती एवं पतिव्रता थी। श्री मूर्ति के दो बेटे थे। छोटे का नाम नर और बड़े का नाम नारायण था। दोनों भाई एक दूसरे से बड़ा प्यार करते थे। उनका प्यार देखकर लोग उन्हे नर-नारायण कहकर पुकारते थे। दोनो ने माता की बड़ी सेवा की। माँ ने खुश होकर कहा, "बेटे, अपने मनोवांछित वर माँगो। मै देने के लिए तैयार हूँ।" अच्छा अवसर पाकर दोनों एक साथ बोल पड़े, "हम दोनों वन मे जाकर तपस्या करना चाहते है। आप हमे जाने की अनुमति दे दीजिए।"

माता के हृदय पर जैसे वज्र गिरा। अपने प्रिय पुत्रो से बिछुड़कर कैसे रह सकती थी ? पर साथ ही मनोवांछित वर देने का वचन दे चुकी थी। विवश हो उन्होंने भारी मन से उन्हें विदा किया। ये दोनों भाई वन-वन घूमते हुए हिमालय के इस वन प्रदेश मे आए। यहाँ बदरी (बेर) पेड़ो का सघन वन था। अत: इसका नाम बदरी वन पड़ गया था। कंदमूल फल तथा जड़ी-बूटियाँ यहाँ विपुल मात्रा मे मिलती थी। तपस्वियो को और क्या चाहिए। अलकनंदा के दोनो किनारों पर दो पहाड़ थे। दाहिनी ओर वाले पहाड़ पर नारायण तप करने लगे और बाईं ओर वाले पहाड़ पर नर। अतः उन पहाड़ों के नाम भी नर पर्वत और नारायण पर्वत पड़ गए।

उनकी कठोर तपस्या से इद्र डर गया। उनका तप भग करने के लिए उसने चार अप्सराओ को भेजा। अप्सराएँ अपने साथ कामदेव एवं ऋतुराज वसंत को ले आईं। उन्होंने नर-नारायण को मोहित करने के लिए अनेक प्रयत्न किए। पर नर-नारायण इससे प्रभावित न हुए। तप से वे नही डिगे।

जब नारायण की आँखे खुली तो उनसे तेज निकल रहा था। सब लोग डर गए और थर-थर काँपने लगे। उन्हे देखकर नारायण को दया आ गई। वे बोले, "आप लोग हमारे अतिथि है, भयभीत न हों। जाते समय इन्द्र के लिए मेरी ओर से एक भेंट लेते जाएँ।"

सब लोग भय से मुक्त हुए और बोले, "हम अभी जाना चाहते है। आज्ञा दीजिए।"

मुनिवर ने आम की एक डाली निकाली और अपनी जाँघ से रगड़कर मथने लगे। ऐसा करते ही कई अप्सराएँ पैदा हुईं। उनमे से अनन्य सुन्दरी उर्वशी को उन्होंने इंद्र के लिए भेंट के रूप मे दे दिया। बदरी वन में आज भी 'उर्वशी कुंड' है जो इस कथा की याद दिलाता है। इंद्र उर्वशी का सौन्दर्य देखकर अपनी करतूत पर लज्जित हुआ। उसने अनुभव किया कि ये मुनि साधारण नहीं, स्वय भगवान् के अवतार हैं। उसने उनसे क्षमा माँगी और उनकी वंदना की।

ये दोनों मुनि कलियुग के आने तक इसी जगह पर तपस्या करते रहे।

कहते हैं कि कालांतर में इन दोनों ने कृष्ण और अर्जुन के रूप में जन्म लिया। नया जन्म लेने के पूर्व उन्होंने ऋषि-मुनियों को बुलाकर कहा, "यहाँ से हम जा रहे हैं। नारदशिला के नीचे हमारी एक मूर्ति है, उसे निकालकर उसकी पूजा कीजिए।"

ऋषि मुनियों ने मूर्ति निकाली और मंदिर बनाकर उसमें उस मूर्ति की प्रतिष्ठा की। यह मूर्ति स्वयंभू है। इसी मूर्ति के दर्शन करने हम आज सवेरे से खड़े थे।

अब साढ़े आठ बज चुके थे। पूर्ण कुंभ लिए, वेद घोषों के साथ स्वामी जी और पुजारी रावल मंदिर का पट खोलने आए। सिंह द्वार खुला। हम मंदिर के प्रांगण में पहुँचे और घोष के बीच गर्भ-गृह की ओर बढ़े। भीड़ अधिक न थी, क्योंकि अब तक केवल दो ही बसें बदरी आ पाई थीं। गर्भ-गृह के बाहर चारों ओर गरुड़, हनुमान, लक्ष्मी और घंटाकर्ण की मूर्तियाँ हैं। गर्भ-गृह का द्वार खुला। अखंड ज्योति जल रही थी जिसे नंदा दीप कहते हैं। ज्योति के प्रथम दर्शन हुए। बदरीनारायण की मूर्ति श्यामल है, पद्मासन लगाए तप करते नजर आते हैं। उन्हें रेशम और मखमल के कपड़े पहनाए गए थे। हीरे और मोतियों के अमूल्य गहने जगमगा रहे थे। ललाट में हीरा लगा हुआ था। दाहिनी ओर कुबेर और गणेश जी की तथा बाईं ओर नर-नारायण, उद्धव, नारद और लक्ष्मी की मूर्तियाँ थीं। मंदिर में चार बार धूमधाम से पूजा और आरती होती है।

यहाँ प्रसाद के रूप में चने की कच्ची दाल और फूल की माला आदि चढ़ती है। हम भी पूजा की सामग्री साथ में ले गए थे। पूजा और आरती के बाद नई अखंड ज्योति गर्भ-गृह में स्थापित की गई और पुजारी छह मास से जल रही ज्योति को बाहर लाए। वह प्याले के आकार का चाँदी का एक बड़ा बर्तन होता है। उसमें घी भर देते हैं और तिल की एक पोटली बाती के रूप में रख देते हैं। दक्षिण भारत में नव ग्रहों की शांति के लिए जलने वाले दीप इसी प्रकार के होते हैं। लोग उसकी काली राख को प्रसाद के रूप में ललाट पर लगाते हैं और घर भी ले जाते हैं।

बदरीनारायण की मूर्ति के संबंध में यह कथा प्रचलित है कि वर्तमान मूर्ति नारद कुंड में पड़ी हुई थी। जब आदि शंकराचार्य तपस्या करने के बाद यहाँ आए तब उन्होंने नारद कुंड में से मूर्ति बाहर निकाली और एक पेड़ के नीचे उसकी स्थापना की। इसी स्थान पर आगे चलकर वर्तमान मंदिर का निर्माण हुआ। बदरीनाथ को टिहरी गढ़वाल के राजाओं ने अपना इष्टदेव माना और मंदिर के निर्माण में अपना विशिष्ट योग दिया।

मंदिर जिस स्थान पर बना है, वहाँ पीछे की ओर से नारायण पर्वत के

हिम शिलाखंडों के फिसलने का भय रहता है। नीचे से अलकनंदा के कटाव का भी खतरा है। मंदिर को हिमखंडों से पहले भी कुछ हानि पहुँच चुकी है। अतः उसके पुनर्निर्माण की व्यवस्था की गई है। पुनर्निर्माण में इस बात का ध्यान रखा जा रहा है कि मंदिर की उत्तराखंड शिल्प शैली को अक्षुण्ण रखा जाए।

आजकल मंदिर का प्रबंध उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से होता है। पुजारी दक्षिण में स्थित केरल के नंबूदरी ब्राह्मण हैं, जो रावल कहलाते हैं। शंकराचार्य के समय से ही यह व्यवस्था चली आ रही है। कहाँ दक्षिण और कहाँ उत्तर! भारत पुराने जमाने से ही इस प्रकार एकता के सूत्र में बँधा था। देश की भावात्मक एकता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है?

मंदिर के पास अलकनंदा के किनारे ब्रह्मकपाल नामक एक चट्टान है जहाँ लोग पितरों को पिंड दान, तर्पण आदि करते हैं।

बदरीनाथ पुरी में एक छोटा-सा बाजार है। यहाँ डाक और तार-घर भी है। पहले केवल अलकनंदा के दाहिने किनारे नारायण पर्वत की ओर ही बस्ती थी। अब नर पर्वत की ओर भी बहुत बड़ी बस्ती बन गई है। यहाँ यात्रियों के ठहरने की बहुत ही सुंदर व्यवस्था है। इतनी धर्मशालाएँ और विश्रामगृह बन गए हैं कि हजारों यात्री एक समय में ठहर सकते हैं, जिनके लिए बिस्तर और रजाई की सुविधा भी प्राप्त है। इस बदरीनाथपुरी में छह महीने (मई से अक्तूबर) जहाँ चहल-पहल और दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती है वहाँ शेष छह महीने शीतकाल में सारी पुरी कई मीटर ऊँची बर्फ से ढक जाती है और पूरा अंचल निर्जन बन जाता है।

हम ब्रह्मकपाल से लौट ही रहे थे कि अचानक बादल छा गए। कुछ ही देर में बादलों की गड़गड़ाहट होने लगी, बिजली कड़कने लगी और कुछ ही क्षणों में ओले गिरने लगे। धरती ओलों से पट गई, पर देखते ही देखते बादल गायब! धूप निकल आई पर साथ ही हिमकण रुई के फाहे जैसे गिरने लगे। सूर्य किरणों से ये हिमकण छनकर ऐसा झिलमिल वातावरण पैदा कर रहे थे कि मैं उस सुंदर इंद्रजाली दृश्य को कभी भूल न सकूँगा। यहाँ दिन में तीन-चार घंटे ही सूर्य के दर्शन होते हैं। मैं अकेला बैठा बर्फ से आवृत्त नीलकंठ पर्वत की चोटी को देखता रहा। मुझे इतना तल्लीन देखकर मेरी पत्नी यह न समझ सकी कि इन बर्फीली चोटियों में ऐसा कौन-सा आकर्षण है?

ठीक बारह बजे मंदिर में भोग लगता है। पीतल के हंडों में चावल पकाया जाता है। भोग के बाद यात्री उस चावल को खाने और बाँटने के लिए खरीद लेते हैं।

मंदिर में नित्य शाम के पाँच से छह बजे तक कथा-प्रवचन चलता है जिसमें सैकडों लोग भाग लेते हैं।

दूसरे दिन मुझे अलकनंदा में नहाने की सनक चढ़ गई। सबके मना करने पर भी मैंने उसमें एक डुबकी लगा ली। पानी इतना ठंडा था कि मेरा सारा शरीर सुन्न पड़ गया। उँगलियों को बंद न कर पाया। सारी हड्डियाँ अकड़ गईं। मैं बहुत घबरा गया। सारे बदन में बेहद दर्द हो रहा था। सिर झन-झना रहा था। मेरी यह स्थिति देखकर मेरी मूर्खता पर मुझे सभी कोसने लगे। मैं शीघ्र ही तप्त कुंड में प्रविष्ट हो गया। कुंड के पानी में दस मिनट रहने के बाद शरीर के अंगांग में स्फूर्ति आ गई। मेरी पत्नी ने मेरी सनक पर मुझे खूब कोसा। लेकिन मुझे संतोष था कि अपने आप मुसीबत मोल लेकर मैंने एक अनोखा अनुभव प्राप्त किया। उस दिन से मेरी पत्नी मेरी पहरेदार बन गई जिससे दुबारा ऐसी मुसीबत मोल न ले सकूं।

भारत के उत्तरी सीमांत का अंतिम गाँव माणा अलकनंदा तथा सरस्वती के संगम पर बदरीनाथ से लगभग साढ़े चार किलोमीटर दूर बसा है। सरस्वती नदी के किनारे-किनारे एक सड़क माणा गाँव होती हुई माणा हिमदर्रे तक चली गई है। इस 5,370 मीटर ऊँचे हिमदर्रे पर ही भारत और तिब्बत की सीमाएँ मिलती हैं।

गाँव के निकट ही थोड़ी-सी ऊँचाई पर चौकोर चट्टान भोज पत्रों की पुरानी पोथी-सी दिखलाई देती है। लोग इसे व्यासजी की पोथी कहते हैं। यह चट्टान ऐसी बनी है जैसे स्लेट जैसी पतली-पतली चट्टान की सैकड़ों तहें एक दूसरे से चिपकी हुई हों। इसके पास ही एक गुफा है जो व्यास-गुफा के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि व्यासजी ने इसी गुफा में सारे वेदों, महाभारत और पुराणों को गणेश जी से लिखवाया था। तत्पश्चात् वेदों को विषयानुरूप चार भागों में बाँटकर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में संगृहीत किया गया।

लगभग डेढ़ सौ मीटर की चढ़ाई चढ़ने के उपरांत हम सरस्वती घाटी पर बने उस प्राकृतिक पुल को देखने गए जिसे भीम का पुल कहते हैं। यहाँ पर नदी दोनों ओर सीधे खड़े पहाड़ों के बीच बहुत अधिक गहराई में बहती है। यहाँ नदी अत्यंत सँकरी है। एक विशाल पत्थर ने न जाने किस युग में चोटी से गिरकर धारा के लगभग साठ मीटर ऊपर फँसकर दोनों ओर की पहाड़ियों को मिला दिया है। यह पत्थर ही भीम का पुल कहलाता है। पुल के नीचे से गहराई में बहती हुई नदी का गर्जन दोनों चट्टानों से टकराता, अनेक ध्वनि-प्रतिध्वनियों का तुमुल निनाद करता हुआ सारे वातावरण को कंपायमान करता रहता है। दूर नीचे जल धारा और चट्टान के संघर्ष से उत्पन्न जल-बिंदुओं

के कुहासे पर सूर्य की तिरछी किरणें चंचल इन्द्र धनुष का जाला बुनती रहती है। इस विलक्षण सौन्दर्य के दर्शन से मै रोमांचित हो उठा।

माणा गाँव वालो ने बताया कि हम शीतकाल मे गाँव छोड़कर नीचे घाटियो की ओर चले जाते है और ग्रीष्मकाल मे गाँव लौट आते है। बदरीनाथ मंदिर के पट बंद होते ही सारा गाँव खाली हो जाता है। जाड़ों मे सारा गाँव पाँच सात मीटर ऊँची हिम की तह मे ढक जाता है। इस तरह गाँव का जीवन पूरी तरह प्रकृति के हाथ मे है।

इस गाँव का सामरिक दृष्टि से विशेष महत्व है। चीनी आक्रमण के बाद से यह क्षेत्र सुरक्षा की दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण हो गया है। जाड़ो मे जब पूरा अंचल बर्फ से ढका रहता है हमारी सेना के जवान सीमा की रक्षा के लिए यहाँ तैनात रहते है। माणा की यात्रा मे बर्फ के ग्लेशियरो पर चलने का आनंद मिल जाता है। इसके आगे जो ग्लेशियर दिखाई देते है, यात्री वहाँ तक पहुँच नही पाते।

माणा के पश्चिम में भीम पुल पार कर लगभग 8 किलोमीटर दूर वसुधारा पहुँचते है। वसुधारा के प्रपात की अपनी विशेषता है। यहाँ ऊपर से गिरती हुई जल-राशि की असंख्य बूंदे नीचे आते-आते हिमकणों में बदल जाती है। ये ही कण बाद मे नीचे के विशाल हिमनद के अंग बनते जाते हैं। इस प्रपात और हिमनद का सौन्दर्य अत्यंत मनोरम है। यहाँ से चौखंभा पर्वत के भी दर्शन होते है और अलकनंदा की दुग्ध-धवल पतली धारा आती हुई दीख पड़ती है। वसु-धारा देखने के लिए प्रातःकाल जाकर दोपहर तक वापस आ जाना चाहिए; क्योंकि अपराह्न में वर्षा होने और बर्फीले तूफानो का भय रहता है।

वसुधारा से आगे बढ़कर सतोपंथ नामक ग्लेशियर है जिसे एक बड़ा हिम सरोवर समझना चाहिए। वसुधारा का वास्तविक स्रोत यही है। तीन दिन बदरी मे बिताकर चौथे दिन हम केदारनाथ की ओर रवाना हुए।

केदारनाथ

7 मई को आठ बजे सवेरे हम बस अड्डे पहुँचे। मालूम हुआ कि साढ़े नौ बजे रुद्रप्रयाग के लिए बस मिलेगी। बस चालू करने के लिए अभी से प्रयत्न हो रहे थे। इंजिन गरम किया जा रहा था। ठीक समय पर बस चली। शाम के साढे पाँच बजे हम रुद्रप्रयाग पहुँच गए। वहाँ मालूम हुआ कि सवेरे आठ बजे केदारनाथ जाने के लिए बस मिलेगी।

रुद्रप्रयाग काफी बड़ी बस्ती है। यहाँ गर्मी बहुत ज्यादा थी। खाना खाकर बिना ओढ़े कमरे के बाहर सो गए। अच्छी नींद आई। सवेरे पाँच बजे आँखे खुलीं। सब लोग नहाने के लिए संगम की ओर चल पड़े। मन्दाकिनी और अलकनदा के सगम मे उतरकर नहा नही पाए, क्योंकि पानी की धारा बहुत तेज थी। यहाँ दोनों नदियाँ वेग से मिलती हैं। पानी मे उतरना खतरे से खाली नही था। लोटे से पानी ले-लेकर नहाया और चामुंडी माता के दर्शन कर पूजा की। आठ बजे केदारनाथ के लिए बस पकड़ ली।

रुद्रप्रयाग से उन्नीस किलोमीटर दूर अगस्त्य मुनि नामक स्थान है। कहा जाता है कि पुराने जमाने मे अगस्त्य मुनि ने यहाँ तप किया था। उनका एक मंदिर भी है। उसके आगे पंद्रह किलोमीटर जाने पर कुंड नामक एक छोटी बस्ती मिलती है। यहाँ दो रास्ते है। एक केदारनाथ की ओर जाता है, दूसरा ऊखी मठ होते हुए, तुगनाथ एवं [illegible] की ओर।

ऊखीमठ का अपना ऐतिहासिक महत्व है। कहते है कि भगवान् श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध ने बाणासुर की कन्या उषा से यही विवाह किया था। उषा के नाम पर ही इस स्थान का नाम ऊखी मठ पड़ा है। यहाँ उषा-अनिरुद्ध के मंदिर बने हुए हैं। यह समुद्र तल से 1,350 मीटर ऊँचाई पर है। जब शीतकाल में केदारनाथ के पट छह महीने के लिए बंद हो जाते है, तब वहाँ के स्वामी जी और पुजारी केदारनाथ की चल मूर्ति के साथ ऊखी मठ में आकर रहते है। छह महीने तक यही केदारनाथ जी की पूजा होती है। यहाँ चित्ररेखा और ओंकारेश्वर के भी मंदिर है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला, डाक घर एव अस्पताल की व्यवस्था है।

ऊखीमठ से बदरीनाथ की दिशा में बाएँ हाथ की पहाडी पर नीलमणि-दिउरी नामक ताल स्थित है। दिउरी एक रमणीक जलाशय है। स्वच्छ नीले रंग का जल इस बात का साक्षी है कि यह तालाब बहुत गहरा है। इसकी परिधि लगभग 1 किलोमीटर है और उसका धरातल समुद्र तल से 2,400 मीटर ऊँचा है। जिस पर्वत पर यह स्थित है वह एक धार-सा है जिसका सिलसिला बदरीनाथ के निकट तक चला गया है।

इस जलाशय में इन पर्वत श्रेणियों का प्रतिबिंब बहुत स्पष्ट झलकता है। इस जलाशय की परिक्रमा करते-करते हम आनंद विभोर हो उठे और मुझे श्रीधर पाठक की कविता की यह पंक्ति स्मरण हो आई :

'प्रकृति यहाँ एकात बैठि निज रूप सँवारति'

हमारी बस अब गुप्तकाशी पहुँच चुकी थी। गुप्तकाशी समुद्रतल से 1,350 मीटर की ऊँचाई पर है। यहाँ विश्वनाथ तथा अर्द्धनारीश्वर के मंदिर और कुंड हैं। कहा जाता है कि ब्रह्मर्षियों ने यहीं शिवलोक प्राप्त किया था। यह भी प्रसिद्ध है कि यहाँ गगा और यमुना गुप्त रूप मे रहती है। अतः इस जगह का नाम गुप्तकाशी पड़ा।

गुप्तकाशी से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर केदारनाथ के पथ से हटकर कालीमठ है। यह जगदंबा के सिद्ध पीठों में से एक माना जाता है। मान्यता है कि असुरों का संहार करने के उपरांत माँ काली ने खड्ग प्रहार से यहीं अपना प्रकट रूप विसर्जित किया था। यहाँ पुराने ढंग का एक छोटा मंदिर है और कोई मूर्ति न होकर भूमि मे एक रजत मंडित वेदिका-सी बनी हुई है। निकट ही काली नदी बहती है। पानी का रंग यमुना जल जैसा श्यामल है। मंदिर के परिवेश और आराधना-पद्धति में स्थानीय विशेषता परिलक्षित होती है।

फाटा, रामपुर और सीतापुर होते हुए हम अपराह्न एक बजे सोनप्रयाग पहुँचे। इसके आगे तब बसें नही जाती थी, अब गौरीकुंड तक जाने लगी है। यहाँ से केदारनाथ चौदह किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। सोनप्रयाग मे सोनगगा तथा मंदाकिनी का सगम होता है। यहाँ एक छोटा-सा बाजार है। जो यात्री पैदल नहीं चल सकते उन्हें पहाड़ पर ले चलने के लिए तीन प्रकार के साधन है—डोली या डांडी, घोड़ा और कंडी। डोली चार या छह आदमी ढोते है। कुछ लोग घोड़े पर भी जाते है। कंडी एक टोकरी होती है जिसे एक ही कुली ढोता है। सामान ले चलने के लिए अलग से कुली मिलते है। पहाड़ पर पैदल चलने वालो के लिए लाठी आवश्यक होती है क्योंकि यहाँ की चढ़ाई खड़ी है।

हमने केदारनाथ पैदल जाने का निश्चय किया। सामान ले चलने के लिए एक कुली को साथ ले लिया। अनावश्यक चीजों को बाँधकर 'सामान घर' मे छोड़ दिया। शाम के चार बजे केदारनाथ की ओर रवाना हुए। पूर्व निश्चित योजना के अनुसार उस दिन रात को हमे गौरीकुंड में पड़ाव डालना था।

सोनप्रयाग से 5 किलोमीटर की दूरी पर त्रियुगीनारायण है। यह समुद्र तल से 1,800 मीटर ऊँचा है। यहाँ शकर और विष्णु के मदिर है। भगवान की नाभि से जल निकलकर कुड मे गिरता है। कहा जाता है कि शंकर और पार्वती का विवाह यही अग्निकुड के सामने हुआ था। मान्यता है कि अग्निकुंड में आग तीन युगों से आज तक जल रही है। यही इसकी विशेषता है। यात्री-गण इस कुड मे हवन करते हैं। यहाँ अग्निकुड के अलावा ब्रह्मकुंड, विष्णुकुड रुद्रकुड एव सरस्वतीकुंड है। यात्री इनमे स्नान कर हवन तथा तर्पण करते हैं। सरस्वती कुंड मे सुवर्ण रंग वाले छोटे-छोटे साँप बड़ी मात्रा मे पाए जाते है। ये साँप काटते नही। पानी में यदि हम उतरते है तो ये सब नीचे चले जाते है। यहाँ के मदिर में काफी अंधेरा रहता है। अतः रोशनी का इंतजाम कर लेना पडता है। चारो ओर घना जगल है, पर जगल का शात वातावरण मन को मोह लेता है।

सोनप्रयाग से केदार मार्ग पर गौरीकुंड पाँच किलोमीटर है। यह रास्ता दुर्गम चढ़ाई का है। यहाँ काफ़ी ठंड थी। हम आगे बढ़ते जा रहे थे। मैं एवरेस्ट पर्वतारोही तेनसिंह एव हिलेरी की साहस भरी कहानियाँ अपने मित्रो को सुनाता जा रहा था जिससे उनको मार्ग का कष्ट महसूस न हो। शाम के छह बजे हम गौरीकुंड पहुँच गए। यहाँ गरम पानी का एक कुड है। कुड मे नहाने से पैदल चलने की सारी थकावट दूर हो गई।

गौरीकुड समुद्रतल से 1,800 मीटर ऊँचा है। अतः यहाँ बहुत ठंड पडती है। रात को हम काली कमली वाले की धर्मशाला में ठहर गए। ओढ़ने के लिए किराए पर हमने रजाइयाँ ले ली। गरम खाना खाकर सो गए। थकावट के कारण बड़ी मीठी नींद आई। सबेरे पाँच बजे ही मेरी आँख खुली। मैंने सबको जगाया और एक बार फिर गौरीकुंड में नहाने का आनंद लिया। सामान बाँधकर कुली के हवाले करते हुए मैंने उसे बता दिया कि जिस पड़ाव मे पानी और चाय की सुविधा हो, वहाँ ठीक नौ बजे रुक जाना। हमारे चलने की रफ़्तार तुम अब पहचान गए हो।

"हाँ साब", कहकर वह चल पड़ा।

ये लोग पहाड़ों पर आसानी से चढ़ते है। बहुधा मुख्य मार्ग छोड़कर पग-डंडी से आगे बढ़ जाते हैं। जिस मार्ग को तय करने मे हमें दो घंटे लगते हैं,

उसे वे एक घंटे मे ही पूरा कर लेते है। वे बड़े परिश्रमी और ईमानदार होते है।

गौरीकुंड मे हम पार्वती-मंदिर गए। उस मंदिर के सामने एक कुंड है जिसका पानी गरम तो नही पर उसका रंग पीला है। यात्रीगण हल्दी खरीद कर यहाँ कुंड मे डालते हैं और पूजा-पाठ करवाते है। पुजारी जी ने बताया था कि यहाँ पार्वती ने शंकर भगवान् को पति के रूप मे प्राप्त करने के लिए कठोर तप किया था।

आगे कृष्ण-मंदिर था। पूजा-पाठ हुआ। ठीक छह बजे एक प्याला गरम चाय पीकर हम सब केदारनाथ की ओर रवाना हुए। हमें अब कुल 14 किलोमीटर पैदल चलना था। मैंने अंदाज लगाया कि प्रति घंटे 3 किलो-मीटर की रफ्तार से चले तो 14 किलोमीटर तय करने मे 11 बज जाएँगे। खान-पान के लिए एक घंटा और लगा तो भी 12 बजे तक हम केदारनाथ पहुँच जाएँगे। पर मेरा अंदाज गलत साबित हुआ। पहाड़ी रास्ता एकदम चढ़ाई का था। ठीक नौ बजे एक चट्टी पर कुली हमारा इंतजार करते हुए एक घंटे से बैठा हुआ था। फिर हमने भात खाया और कुली को भी भात खाने को दिया। फिर सबने चाय पी। कुली से कह दिया कि हमारी प्रतीक्षा किए बिना वह केदारपुरी तक चला चले।

केदार का मार्ग मंदाकिनी के किनारे-किनारे होकर जाता है। यह घाटी अपनी हरीतिमा के लिए प्रसिद्ध है। बदरीनाथ की यात्रा मे हमें अधिकतर वनस्पति विहीन पहाड़ मिले थे। इसके विपरीत यहाँ हमे हरे-भरे वृक्ष और मखमली घास सर्वत्र दिखाई देती है। पहाड़ से बहते झरने बरबस मन मोह लेते हैं। यह घाटी तीन से चार हजार मीटर की ऊँचाई के बीच फैली है। इस रमणीक भू-भाग मे छोटी-छोटी झाड़ियाँ और मखमली घास मिलती है जो बुग्गी के नाम से जानी जाती है। यह जानवरो के लिए बड़ी पौष्टिक घास है। इस मखमली घास के बुग्यालों के बीच अनेक जड़ी-बूटियाँ भी पाई जाती हैं। आकर्षक रंगों के नाना प्रकार के पुष्प भी मिलते हैं।

हम लगातार तीन चार किलोमीटर चलते और सुरम्य स्थान पर बैठकर आराम करते। एक ओर घना जंगल दूसरी ओर कल-कल बहती मंदाकिनी का फेनिल प्रवाह। ऊँचाई से गिरते झरनो का आनंद उठाते, पक्षियों का कल-रव सुनते हुए हम मार्ग तय कर रहे थे, पर मार्ग हनुमान की पूँछ की तरह बढ़ता ही जा रहा था। साढ़े तीन बजे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से हमे बर्फ़ पर पैदल चलना था। यह स्थान 'देवदर्शिनी' कहलाता है। यहीं से केदारनाथ पुरी के दर्शन होने लगते है। तीन किलोमीटर का रास्ता शेष था। चारो तरफ़ बर्फ़ ही बर्फ़। हम बहुत थक गए थे, पर केदारनाथ पुरी के देखते ही हमारी

हिम्मत बढ़ गई। बर्फ़ पर चलना आसान नहीं था, पैर फिसलते थे। नुकीली लाठी को बर्फ़ में गड़ाकर पैर जमा-जमा कर चलना पड़ता था, यदि पैर फिसल जाते तो हम सीधे सौ-सवा सौ मीटर नीचे बहने वाली मदाकिनी में जा गिरते। ठीक पाँच बजे हम केदारनाथ पुरी पहुँच गए। चौदह किलोमीटर तय करने मे हमें ग्यारह घंटे लगे। शरीर थककर चूर-चूर हो गया था। कड़ाके की सर्दी पड रही थी। केदार क्षेत्र में अनेक दलदल है। इसी कारण इस क्षेत्र का नाम केदार पड़ा है। केदारनाथ का मदिर तीन ओर से हिम-मंडित पर्वतों के बीच घाटी मे मदाकिनी के किनारे पर स्थित है।

पूरी की पूरी केदारपुरी बर्फ़ से ढकी थी। सरकार की तरफ़ से कुली बर्फ़ को काट-काटकर रास्ता बना रहे थे। हम छोटे बच्चों की तरह बर्फ़ का गोला बनाकर एक दूसरे पर फेकते हुए आगे बढ़ रहे थे। दसों दिशाओं से बर्फ़ ही वर्फ़ देख हमें ऐसा अनुभव होने लगा मानो हम बर्फ के समुद्र में घिर गए है।

केदारनाथ समुद्र तल से 3,581 मीटर ऊँचाई पर है। अत: बदरीनाथ की अपेक्षा यहाँ ऑक्सीजन की मात्रा कम है। यात्रियो को खिड़कियाँ खोलकर सोना पड़ता है। हमने सुना कि पिछले साल दरवाजा खिड़की बंद करके सोने से एक दपती की मृत्यु हो गई थी।

हमारा कुली मद्रासी धर्मशाला मे सामान रखकर मध्याह्न से हमारा इंतजार कर रहा था। हमने यहाँ कमरा लिया। कमरा बड़ा सुदर और साफ-सुथरा था। छत के नीचे लकड़ी लगी हुई थी। हमने किराये पर रजाइयाँ ले ली और बिस्तर में घुसकर लेट गए। पंडाजी ने गरम-गरम चाय पिलाई। हाथ-मुँह धोने के लिए एक बाल्टी गरम पानी भी मिला। बर्फ़ के जम जाने से नल से पानी नही निकलता था। पूछने पर मालूम हुआ कि अभी एक महीने तक ऐसा ही रहेगा। बारह बजे से दो बजे तक यदि धूप बनी रही तो पानी नल से निकलेगा।

ठंड बेहद थी, जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। हमारी यह अवस्था देख पंडाजी ने कोयला जलाकर तापने के लिए कमरे मे रख दिया। हम सब आग के चारों ओर कम्बल ओढ़कर बैठे और गप-शप करते हुए खिड़की से मंदिर के दर्शन भी कर रहे थे।

शाम के सात बजे पडाजी हमे आरती देखने के लिए मंदिर ले चले। मंदिर की दीवारों के शिल्प में सादगी है। मदिर के सामने का नदी आँगन की शोभा बढा रहा था। सात बजने पर भी काफी प्रकाश था। फिर हमारे देखते-देखते अचानक बादल छा गए और वर्षा होने लगी। मोती के सदृश छोटे-छोटे ओले गिरने लगे। मंदिर का सारा आँगन ओलों से भर गया। यह मंदिर बदरीनाथ की तुलना में बड़ा है। केदारनाथ के अलंकार दर्शन हुए।
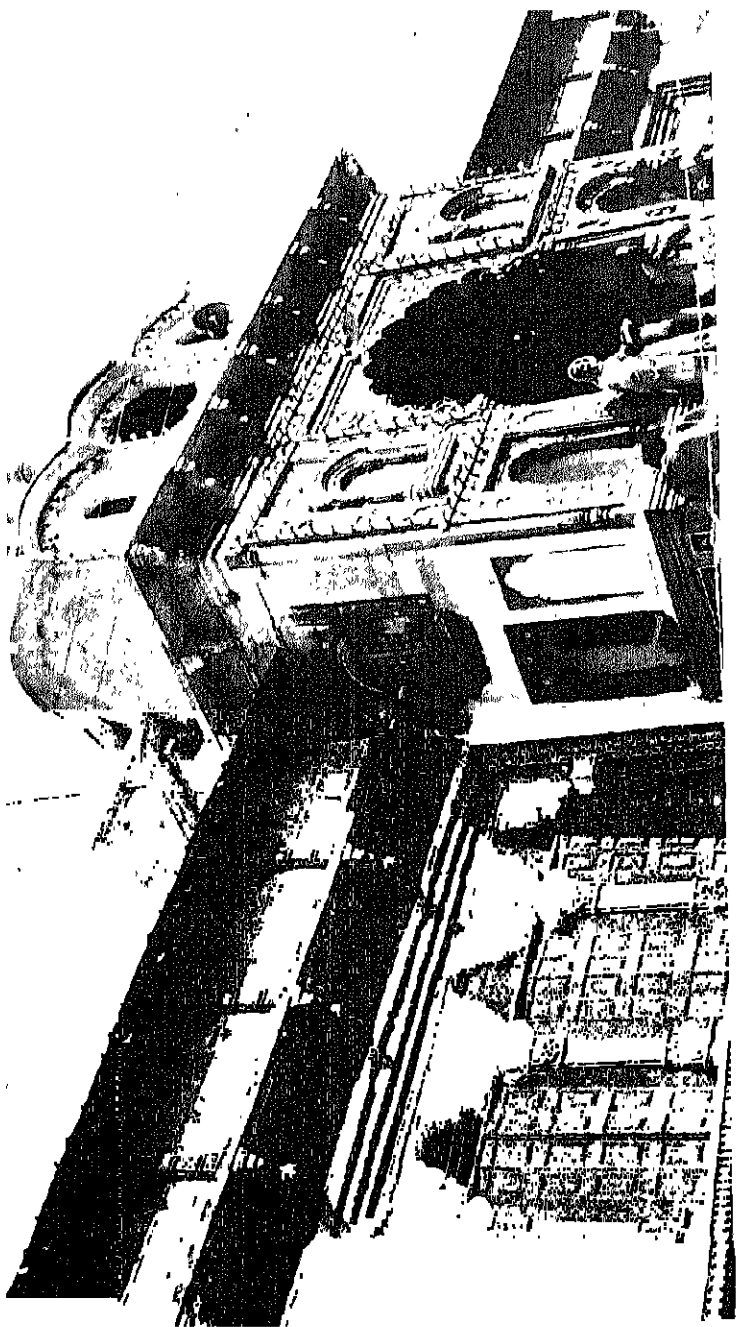
बदरीनाथ मंदिर का सिंह द्वार।
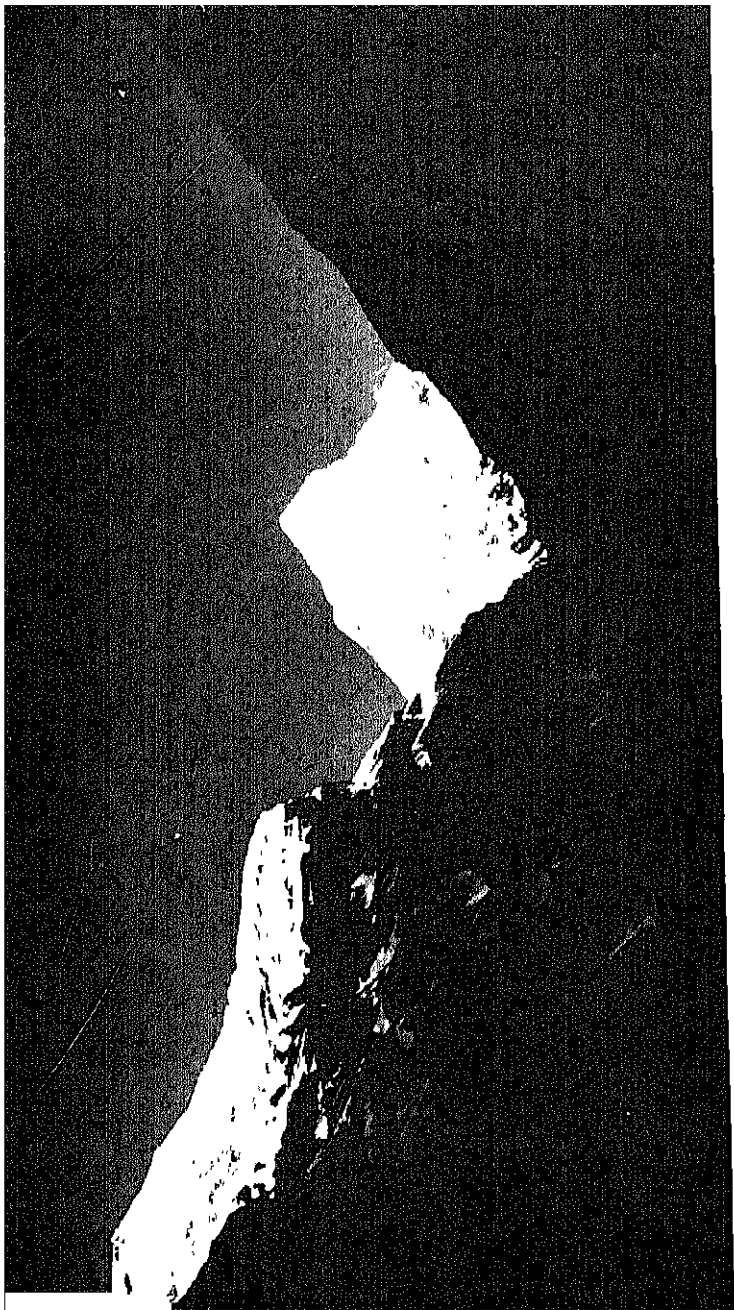
हिमधवल नीलकंठ पर्वत की चोटी जो बदरीनाथपुरी से दिखती है।

असंख्य इन्द्र धनुषों वाला वसुधारा का प्रपात।
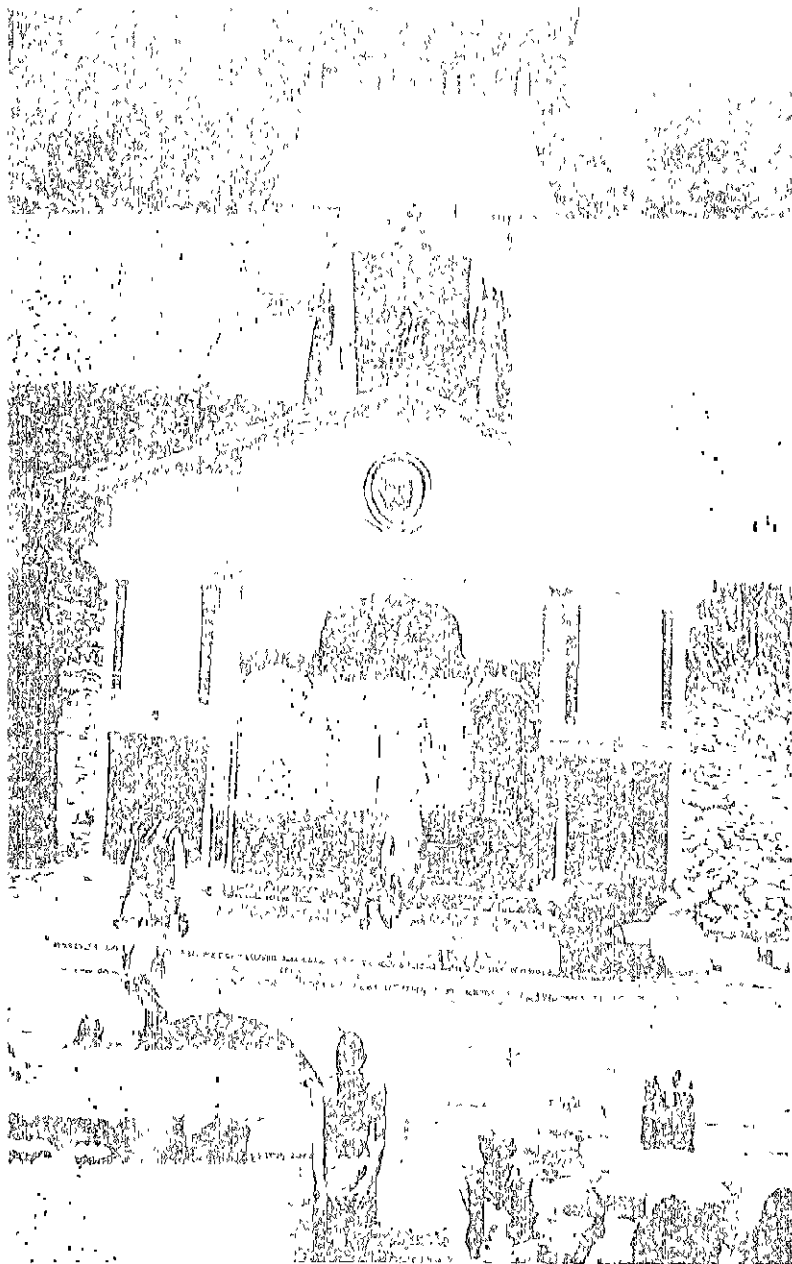
गुप्तकाशी का विश्वनाथ मंदिर। सामने कुंड में स्नान करते हुए भक्त जन।

केदारनाथ जाने वाले बीहड मार्ग पर बना लकड़ी का सँकरा पुल।
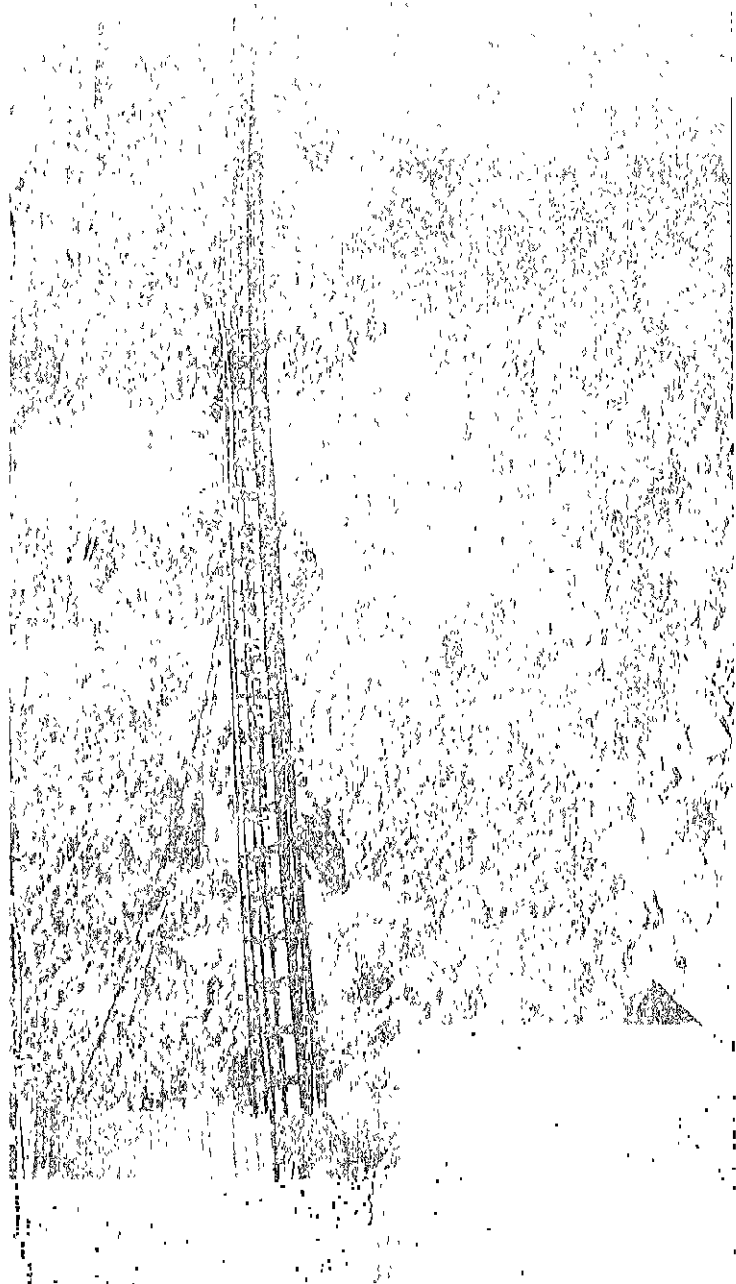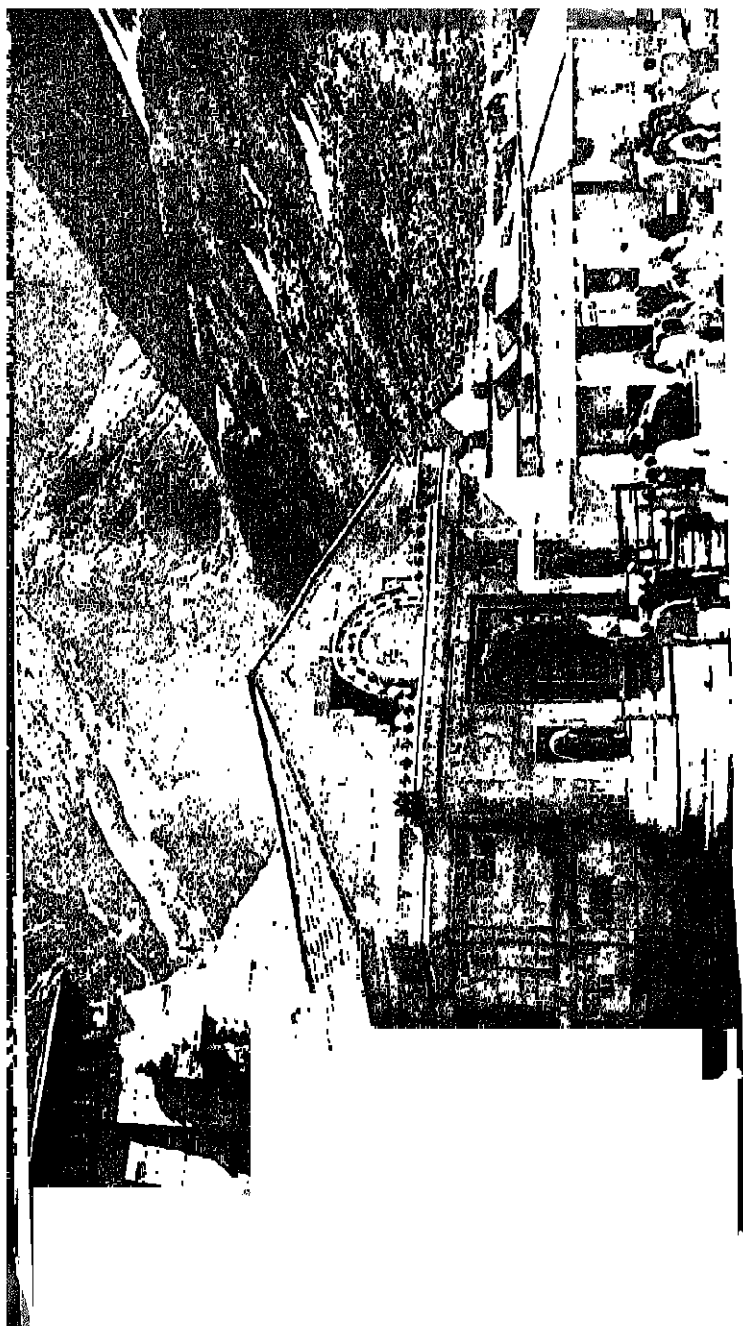
हिम मंडित पर्वतों के बीच मंदाकिनी के किनारे बना केदारनाथ का मंदिर।
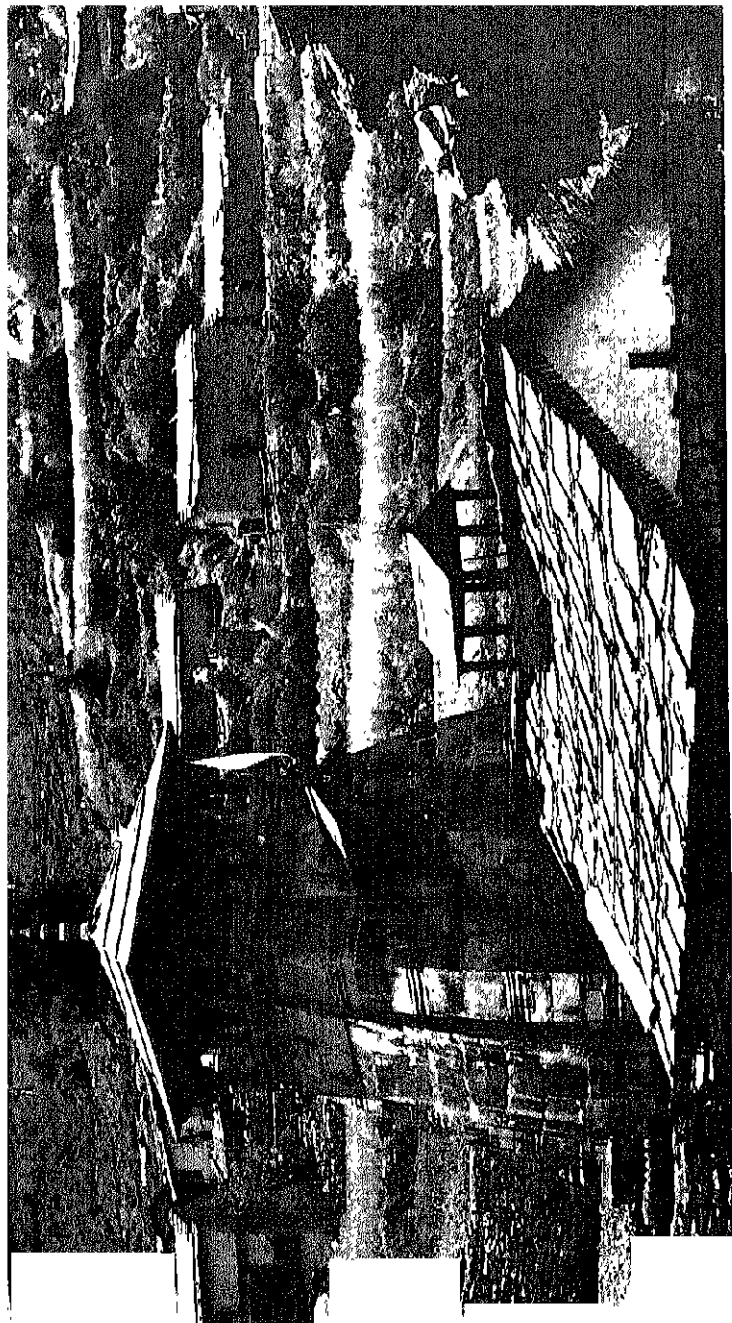
केदारनाथपुरी की एक झाँकी।

केदारनाथपुरी में प्रतिष्ठापित आदि शंकराचार्य की मूर्ति।

मूर्ति श्याम वर्ण का एक विशाल शिलाखंड है। यह शिलाखंड महिष रूपी पशुपतिनाथ का पिछला भाग है। इस मूर्ति के संबंध में बड़ी रोचक कथा प्रचलित है। कहते हैं महाभारत युद्ध में अपने संबंधियों का विनाश देखकर पांडव बहुत दुखी हुए और हिमालय की ओर चल दिए। वे प्राण त्यागने से पहले शिव का दर्शन करना चाहते थे, पर शंकर को इन कुलघातियों का मुँह देखना स्वीकार न था। जब पांडव उन्हें खोज रहे थे, शिव ने महिष का वेश धारण कर लिया और केदार क्षेत्र मे चर रहे पशुओं में सम्मिलित हो गए। लेकिन पांडवों ने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा और भीम ने उन्हें पहचान ही लिया। इस पर शिव पृथ्वी में समाहित होने लगे तो भीम के हाथ में उनका केवल पृष्ठ भाग ही आ सका। वही भाग शिला रूप में केदार में पूजा जाता है। शीर्ष भाग नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में स्थापित है। केदारनाथ शंकर भगवान के बारह ज्योतिर्लिंगों में एक माना जाता है।

आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने इसी स्थान पर इस ज्योतिर्लिंग को पहचान कर नया मंदिर बनवाया था। मंदिर से थोड़ी दूर पर बर्फ के पहाड़ों से मंदाकिनी निकलती है।

आरती बड़ी धूमधाम से हुई। भीड़ नहीं थी। फिर भी केदारनाथ के दर्शन अच्छी तरह न कर पाए, क्योंकि मंदिर के अंदर का फर्श बहुत ही ठंडा था, जिस पर पैर ठिठुर रहे थे। मंदिर में पाँच पांडवों और द्रौपदी की भी मूर्तियाँ हैं। केदार भगवान् के दर्शन के बाद लोग इन मूर्तियों का आलिंगन कर पैसे चढ़ाते हैं।

रात के आठ बजे हम खाना खाने बैठे। गरम-गरम खाना खाकर, दो-दो रजाइयाँ ओढ़कर लेट गए। वैसे ही करवट बदलते-बदलते सारी रात आँखों में बिताई। ठंड के कारण निगोडी नींद नहीं आई। सवेरे आठ बजे मंदिर खुलने वाला था। अतः सात बजे एक बाल्टी गरम पानी मँगवाया और हाथ-मुँह धोकर मंदिर जाने को तैयार हो गए। उस दिन हम सब नहा नहीं पाए। लकड़ियों की कमी के कारण गरम पानी का प्रबंध न हो पाया। ठंडे पानी में नहाने की हिम्मत न हुई। बदरीनाथ में अलकनंदा में नहाकर मैंने जो अनुभव किया था उसको अभी तक भूल न पाया था।

आठ बजे मंदिर का द्वार खुला। पंडाजी मंदिर के गर्भ-गृह में ले चले। मूर्ति की अपने हाथों से ही पूजा करवाई। हमने मक्खन, फल, फूल, मेवा आदि मूर्ति पर चढ़ाकर जल से अभिषेक किया और मत्था टेक कर प्रणाम किया। सब यात्री अपना सिर उस विशाल शिला पर रखकर ही प्रणाम करते हैं। दक्षिण भारत में तो मंदिर के गर्भ-गृह में किसी को प्रवेश तक नहीं मिलता, मूर्ति

को छूना तो दूर रहा। यहाँ ऐसा प्रतिबंध नही है। बदरीनारायण मे भी गर्भ-गृह मे किसी को प्रवेश नही मिला था। यहाँ अधपका मीठा चावल प्रसाद के रूप में मंदिर की ओर से सबको बांटते है।

मंदिर के पीछे लगभग सौ मीटर की दूरी पर आदि शंकराचार्य की समाधि है। यही पर इन्होंने 32 वर्ष की आयु मे अपनी इहलीला समाप्त की थी। आदि शंकराचार्य का जन्म दक्षिण भारत के केरल प्रदेश में आठवीं शताब्दी में हुआ था। उनके पिता शिव गुरु और माता सती ने भगवान शंकर की उपासना कर इन्हे प्राप्त किया। अतः इनका नाम शंकर रखा गया। शंकर बचपन से ही बड़े मेधावी थे। वे अल्पायु में ही व्याकरण और धर्मशास्त्रों के प्रकांड पंडित बन गए। उनके लिखे उपनिषद् भाष्य आज भी प्रामाणिक माने जाते है।

समाधि-स्थल पर पहुँचते ही मेरी विचारधारा टूटी। समाधि की प्रदक्षिणा करते-करते न जाने मुझे क्या हो गया···बिलख-बिलख कर रो उठा। मेरी इस सनक पर मेरी पत्नी स्तब्ध रह गई। मैने मन-ही-मन शंकराचार्य के उन 31 श्लोकों का पाठ किया जो वेद-उपनिषद्-पुराणों का सार संग्रह माने जाते है।

"भजगोविंद भजगोविंद, भजगोविंदं मूढ मते।"

मन को शांति मिली। समाधि के सामने पत्थर की एक बड़ी दीवार बनी है। शंकराचार्य का दिग्विजय पताका युक्त हाथ हिन्दूधर्म की दिग्विजय की सूचना देता है। भृगु पथ, मधुगंगा, क्षीर गंगा, चौरावाडी ताल, वायु का ताल, खगुल कुंड, भैरव शिला आदि यहाँ के दर्शनीय स्थान हैं।

केदारनाथ के पुजारी दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रदेश के रायचूर के निवासी होते हैं। हमें देखते ही कन्नड़ भाषा मे बोलने लगे। वे दक्षिण के लिंगायत मठ के प्रतिनिधि है। शंकराचार्य के जमाने से ही यह परंपरा चली आ रही है। यहाँ भी भारत की भावात्मक एकता के दर्शन हुए। केदारनाथ में डाकघर, तारघर और अस्पताल की व्यवस्था है। यात्री ठंड के कारण यहाँ अधिक समय तक नही ठहर पाते।

अगले दिन सुबह दस बजे हम वापस गौरीकुंड को रवाना हुए। उतरते समय उतना कष्ट नही हुआ। रास्ते में मैने एक अपूर्व दृश्य देखा। एक अंधा व्यक्ति लाठी टेकते हुए केदारनाथ की ओर जा रहा था। "जय केदारनाथ की" जयजयकार करते हुए, लाठी से रास्ता टटोल-टटोल कर वह आगे बढ़ रहा था। उसके न कोई साथी और न कोई सहारा था। एकमात्र मार्गदर्शक थी—लाठी। उसकी आस्था और दृढ विश्वास देखकर आश्चर्य हुआ। यदि सकुशल मंदिर पहुँच भी जाएगा तो क्या देख सकेगा? न मंदिर के दर्शन होंगे

न मूर्ति के। फिर भी उसके मन में श्रद्धा-भक्ति और अटल विश्वास है। हम सब इसकी साहसपूर्ण यात्रा पर नतमस्तक हो गए। उससे यह पूछने पर कि यदि वह फिसल गया तो नीचे खड्ड में गिर जाएगा, वह किसी के साथ क्यों नहीं आ रहा है, जवाब मिला, अंधे का साथी स्वयं परमात्मा है। "यदि वह गिर कर मरेगा तो भी कोई चिंता नहीं। आखिर परमात्मा के सानिध्य में ही तो मरेगा।"

शाम के छह बजे हम गौरीकुंड पहुंचे। 14 किलोमीटर आठ घंटों में तय कर पाए। हम थककर चूर-चूर हो गए थे। अपना शरीर भी भार स्वरूप लग रहा था। गौरीकुंड पहुँचकर तप्तकुंड में स्नान किया। शरीर का सारा दर्द दूर हो गया। रात में बड़ी मीठी नींद आई। सुबह उठकर फिर एक बार स्नान किया और सोनप्रयाग के लिए रवाना हो गए। दस बजे सोनप्रयाग पहुँचे। सामान छुड़ाकर कुली को पैसा देकर बिदा किया। श्रीनगर के लिए बस खड़ी थी। हम बस पर चढ़कर आगे की यात्रा के बारे में सोचने लगे। आज ग्यारह मई थी। यमुनोत्री का मंदिर चौदह को और गंगोत्री का मंदिर पंद्रह को खुलने वाला था। अतः अपने मित्र से सलाह-मशविरा कर यह तय कर लिया था कि पहले हम यमुनोत्री जाएँगे और बाद में गंगोत्री।

यमुनोत्री

11 मई की शाम के साढ़े चार बजे हम श्रीनगर पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर मालूम हुआ कि वहाँ से सीधे यमुनोत्री जाने के लिए बस नहीं है। पहले टेहरी जाना होगा और वहाँ से यमुनोत्री। टेहरी के लिए बस कल सवेरे छह बजे ही मिलेगी। अतः हमें रात को वहाँ ठहरना पड़ा।

12 मई को सवेरे छह बजे टेहरी की बस पकड़ी। साढ़े नौ बजे टेहरी पहुँच गए। वहाँ हमें पता चला कि यमुनोत्री जाने के लिए ग्यारह बजे बस मिल जाएगी। हम पूड़ी-साग श्रीनगर से ही लाए थे, उसे खाकर चाय पी ली। टेहरी में काफ़ी बड़ा बाजार है। वहाँ बढ़िया चावल मिलता है। हमने चार किलो बासमती चावल खरीदा। फिर टिकट लेने कतार में खड़े हो गए। आसानी से हमें यमुनोत्री के लिए टिकट मिल गया।

टेहरी एक प्राचीन नगर है। इसके साथ पिछला बहुत-सा इतिहास जुड़ा है। स्वामी रामतीर्थ की तपस्थली यही टेहरी है। इसी क्षेत्र में गोदी सराय स्थित बमरोगी गुफा में चार साल रहकर उन्होंने साधना की।

स्वामी रामतीर्थ उत्तराखंड के पर्वतीय लोगों की निश्छलता तथा उनके सात्विक जीवन पर मुग्ध थे। वे कहा करते थे, "उत्तराखंड के प्रत्येक नर-नारी और बच्चे में मुझे भगवान् का साक्षात्कार होता है।" जब कोई टेहरी जाकर उनके दर्शन करता तब वे उनसे कहते थे कि इन गरीब लोगों की सहायता से ही भगवान् को प्रसन्न किया जा सकता है।

1902 ई० में जापान की राजधानी तोक्यो में सब धर्मों का सम्मेलन होने वाला था। टेहरी के महाराजा स्वामी रामतीर्थ की साधना एवं विद्वत्ता से प्रभावित थे। अतः उनके अनुरोध करने पर स्वामी रामतीर्थ विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने विदेश रवाना हुए। जापान एवं अमेरिका जाकर उन्होंने हिन्दू धर्म और वेदांत संबंधी प्रवचन दिए। दो साल बाद भारत लौटे तो टेहरी आकर भगवती भागीरथी की शरण में रहने लगे।

स्वामी गंगा को साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा मानते थे। वे उसके तट पर घंटों समाविस्थ रहते और उसकी स्तुति करते, वे कहा करते थे, "मैं अपनी माँ की गोद

में अनुपम आनंद का अनुभव करता हूँ। गंगा माँ का जल साक्षात् ब्रह्मद्रव है जो मुझे स्वर्गानंद का अनुभव कराता है।" सन् 1909 ई० में दीपावली के दिन स्वामी जी भावावेश में आए और उन्होंने गंगा में जलसमाधि ले ली।

हमने जिस टेहरी नगर को देखा, अब से कुछ ही वर्ष बाद केवल उसका नाम रह जाएगा। उत्तर प्रदेश शासन ने टेहरी में भागीरथी पर एक विशाल बाँध बनाने का निश्चय किया है और उसपर कार्य प्रारंभ हो चुका है। इस बहुउद्देशीय बाँध से जलविद्युत् का उत्पादन होगा और प्रदेश में सिंचाई की सुविधाओं में भी वृद्धि होगी। पूरा बन जाने पर इस बाँध के विशाल जलाशय में संपूर्ण टेहरी नगर और उसके निकटवर्ती अनेक गाँव सदा के लिए डूब जाएँगे। यहाँ की आबादी को बसाने के लिए दूर ऊँचाई पर नए नगर का निर्माण किया जा रहा है और किसानों को ऋषिकेश के निकट भूमि आवंटित की गई है।

बस कंडक्टर ने सीटी बजाई और हम बस पर बैठ गए। कुछ समय बाद हम धरासू पहुँचे। धरासू एक ऐसा स्थान है, जहाँ से गंगोत्री और यमुनोत्री के लिए अलग-अलग रास्ता है। बस यमुनोत्री के रास्ते पर आगे बढ़ी। शाम के चार बजे हम बरकोट पहुँचे। वहाँ चाय के लिए आधा घंटा विराम मिला। बरकोट में शुद्ध घी से बनी मिठाई और नमकीन चीजें मिलीं। बड़ा मजा आया। उत्तराखंड यात्रा में मुझे इससे बढ़िया खाद्य सामग्री अन्यत्र नहीं मिली थी। उसकी स्मृति आज भी बनी हुई है।

गंगाजी तक पहुँचते-पहुँचते हिम से आवृत्त चोटियों के दर्शन होने लगे। यहाँ चीड़ के पेड़ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। इन वृक्षों से लीसा निकाला जाता है जिससे तारपीन का तेल बनाया जाता है। इससे पेन्ट तथा वार्निश आदि तैयार किए जाते हैं।

कहा जाता है कि पुराने जमाने में यहाँ गंगाजी के भक्त एक महर्षि रहते थे। यहाँ से लगभग 25 किलोमीटर दूर गंगा बहती थी। वहाँ जाने के लिए एक पहाड़ पार करना पड़ता था। महर्षि रोज इतनी दूर पैदल चलकर गंगा स्नान किया करते थे। जब वे बूढ़े हुए तब चलना कठिन हो गया। दुखी हो उन्होंने गंगा मैया को पुकारा। माँ उनकी पुकार सुन दौड़ी-दौड़ी आईं। उनकी निष्ठा से प्रसन्न हो बोलीं :

"बेटा ! तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करने के उद्देश्य से यहाँ आई हूँ। आज से मैं यमुना के किनारे वाले इस कुंड में रहूँगी। यहीं तुम आकर स्नान करो।" इतना कहकर वह कुंड में वास करने लगी। आज भी इस कुंड का पानी गंगा जल जैसा उजला और साफ़ है। तब से इस जगह का नाम गंगानी पड़ गया। इसे गंगनानी भी कहते है। यहाँ एक गरम कुंड भी है।

हम शाम पाँच बजे कौतनूर पहुँचे। आगे सयाना चट्टी तक बस को पहुँचना था पर बस ड्राइवर ने यह दिया कि आगे बस जाने के लिए सुविधा नही है। वह एक बहाना मात्र था। यहाँ से सयाना चट्टी बारह किलोमीटर थी। पैदल चलना पड़ता था। सब यात्रियों को विवश होकर कौतनूर में ही ठहरने के लिए विवश होना पड़ा। यद्यपि यहाँ ठहरने के लिए कोई समुचित व्यवस्था नही थी। एक खाली दुकान देखकर हम उसमे ठहर गए।

दूसरे दिन शाम के चार बजे तक हमे बस की प्रतीक्षा मे वही ठहरना पड़ा। दूसरी बस आई, पर उसके चालक ने भी सयाना चट्टी तक बस ले जाने से इनकार कर दिया। इस पर लोग हल्ला मचाने लगे। बीच में एक दलाल आया। बाद मे यह तय हुआ कि सयाना चट्टी तक ले चलने के लिए हर यात्री को तीन-तीन रुपए और देने होगे। मैंने सबसे पहले रुपया देकर टिकट कटा लिया क्योकि मै बारह मील पैदल चलने से बचना चाहता था। इस तरह 13 मई की शाम के साढे पाँच बजे हम सब सयाना चट्टी पहुँच गए।

सयाना चट्टी में यात्रियो के ठहरने के लिए अच्छी सुविधा है। यात्रियो की सहायता करने के लिए सरकार से अनुमति प्राप्त सघ और सस्थाएँ है। यहाँ से यात्रियों को उस समय यमुनोत्री तक पैदल जाना पड़ता था, पर अब बसे हनुमान चट्टी तक जाने लगी है। कडी या घोड़े भी किराए पर मिल जाते हैं। यहाँ का रास्ता बड़ा तंग है, इसलिए डोली या डांडी की व्यवस्था नही है। कंडी और घोड़े वालो ने कहा कि सवेरे छह बजे ही आपको रवाना होना पडेगा, अतः अभी से बुक करा लीजिए।

हम केदारनाथ मे पैदल चलकर बहुत थक गए थे: औरतो ने पैदल जाने से साफ इनकार कर दिया। हमारे पाँवो मे भी दर्द था। अतः हम सबने सर्व-सम्मति से यह निश्चय किया कि हम सब घोड़े पर चढ़कर ही यमुनोत्री जाएँगे। इसलिए काफी मोल-तोल के बाद चार सौ रुपए मे चार घोड़े किए, और दो सौ रुपए अग्रिम देकर पहले ही दिन बात पक्की कर ली।

14 मई के सवेरे पाँच बजे ही उठकर हम चलने के लिए तैयार हो गए। चार घोड़े तैयार थे। घोड़े वाले ने बताया—"साहब, आप इस चढाई पर चढकर, सीधे रास्ते पर चले जाइए। हम घोड़ा ले आएँगे"।

लगभग दो सौ मीटर की खड़ी चढाई थी। आगे सीधा रास्ता था। हमारे यहाँ पहुँचने के पहले ही घोड़े पहुँच चुके थे। घोड़े तो चार थे, पर उनको ले चलने वाले व्यक्ति दो ही थे। मैंने उनसे पूछा, "तुम दो हो, चार घोड़ों को कैसे सँभालोगे ?"

उत्तर मिला, "आप पहले चढ़कर देखिए। आपको अपने आप मालूम हो जाएगा कि हम उन्हें कैसे सँभालते हैं।"

यहाँ के घोड़े छोटे कद के होते हैं पर बड़े जीवट के और वफादार होते हैं। उन चार घोड़ों में से एक बड़ा ही शरारती था। वही मुझे मिला। यहाँ के और केदारनाथ के घोड़ों में बड़ा अंतर है। केदारनाथ में ऐसे घोड़ों को केवल सामान ले चलने के लिए दुकानदार इस्तेमाल करते थे। इन घोड़ों पर बैठने के लिए न जीना था न पकड़ कर चलने के लिए लगाम। पैर रखने के लिए उन्होंने एक रस्सी लटका रखी थी और हाथ में पकड़कर चलने के लिए गरदन में भी एक रस्सी बँधी थी। हम घोड़ों के ऊपर अपना-अपना कंबल डाल-कर आराम से बैठ गए।

घोड़ों के चलने के लिए अलग पगडंडी है। चढ़ाई तीखी है इसलिए आगे एक व्यक्ति घोड़े का लगाम पकड़ कर चलता, उसके पीछे तीन घोड़े। अंत में दूसरा व्यक्ति चलता था। इस तरह दो ही व्यक्ति चारों घोड़ों को सँभाल रहे थे। हमें कोई तकलीफ न हुई। रास्ता इतना तंग था कि इन घोड़ों को एक के पीछे एक होकर चलना पड़ता था। पहाड़ पर चढ़ते समय घोड़ा ऊपर को मुँह करके चलता था पर जब नीचे उतरता था तब हमें बड़ा डर लगता था। यों लगता था मानो हम अब गिरे तब गिरे। अतः हम नीचे तराइयों की ओर न देखकर, पहाड़ की ओर देखते हुए जा रहे थे। इच्छा होने पर भी यमुना की धार को मन भर देख न सके। जी घबराता था। रास्ते भर में कई झरने मिले। घोड़े जी भर पानी पीते और आगे चल पड़ते।

घोड़े बड़े होशियार थे। वे अपने मालिक की आवाज़ को और भाषा को आसानी से समझ जाते थे। 'चल बेटा चल' कहते ही चल पड़ते और 'रुक बेटा रुक' कहने पर रुक जाते थे।

इन घोड़ों के दोनों मालिक जवान थे। एक की उम्र 20 वर्ष रही होगी तो दूसरे की सोलह वर्ष। दोनों पहाड़ी गाना गाते जा रहे थे। पहला गंभीर प्रकृति का था और ज्यादा नहीं बोलता था।

रास्ता कितना ही तंग क्यों न हो ये घोड़े बड़ी सावधानी से चलते हैं और बुद्धि से काम लेते हैं, इसका परिचय मुझे जल्दी ही मिल गया। पगडंडी पर एक बहुत बड़ा पत्थर लुढ़क कर आ गया था। रास्ता लगभग बंद था। पहला घोड़ा दो क्षण रुका और फिर पत्थर पर चढ़कर आगे कूद पड़ा। उस घोड़े पर मेरे बुजुर्ग मित्र बैठे थे। वे अत्यंत घबरा गए, क्योंकि एक इंच भी इधर-उधर होने पर घोड़ा सवार सहित सैकड़ों मीटर नीचे यमुना में लुढ़क पड़ता और हड्डियों का नामो निशान न मिलता। देखते-देखते मेरा घोड़ा भी उस पत्थर के पास आ गया। वह भी दो क्षण रुका और चट्टान पर न चढ़कर बगल से निकल गया, यद्यपि बगल में केवल एक खुर रखने भर की जगह थी। यह सब क्षण भर में हो गया, पर दिल देर तक धड़कता रहा। हम

मन-ही-मन सोचने लगे कि यदि पहले से मालूम होता कि रास्ता इतना भयंकर और तंग है तो घोड़े पर न चढ़ते। कहीं-कहीं चट्टानें इतनी नीची थी कि हमें बार-बार झुककर घोड़े की पीठ से चिपक जाना पड़ता था। अतः हम लोग घोड़ों से उतरकर पैदल चलने लगे।

ग्यारह बजे हम जानकी चट्टी पहुँच गए। एक घंटा आराम किया। घोड़ों ने चारा खाया। चाय पीकर साढ़े बारह बजे हम घोड़ों पर बैठकर यमुनोत्री की ओर चल पड़े।

"यमुना मैया की जय" नारा लगाते हुए कुछ लोग यमुनोत्री से वापस आ रहे थे। आज सवेरे ही मंदिर के पट खुले थे।

थोड़ी देर बाद घोड़े वालों ने बताया, "साहब! आगे का रास्ता बड़ा तंग है। चढाई ही चढ़ाई है। यमुनोत्री तक पैदल ही चलना होगा। बस चार किलोमीटर का फासला है।"

पाँच घंटों से घोड़े पर बैठने से जाँघों में दर्द होने लगा था। साथ ही भयंकर रास्ते का अनुभव हो ही गया था। अतः हमने कहा, "चलो, ठीक है। थोड़ा पैदल चलने का मजा लें।" हमारे उतरते ही घोड़े दौड़ पड़े और उनके मालिक उनके पीछे। दो मिनट में वे हमारी आँखों से ओझल हो गए।

ढाई बजे हम यमुनोत्री की घाटी पहुँचे। वहाँ से हमने देखा कि दो पतली धाराएँ पहाड़ से उतर रही हैं। ये धाराएँ आगे चलकर यमुना कहलाती हैं। इस घाटी की ऊँचाई 3,291 मीटर है। यह घाटी अत्यंत रमणीक है किंतु दोपहर होते ही यहाँ कुहरा छा जाता है और वर्षा होने लगती है। सौभाग्यवश आज बादल तो छा गए थे पर वर्षा न हुई। यहीं से हिम से आवृत्त ऊँची-ऊँची चोटियों के दर्शन होने लगते हैं। उनमें से एक चोटी का नाम है "बंदर पूँछ"। इस चोटी की ऊँचाई समुद्र तल से 4,421 मीटर है। रामायण और महाभारत में इस पर्वत को सुमेरु पर्वत कहा गया है। इसके पीछे एक कहानी है। श्री रामचंद्र जी लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे थे। अब अयोध्या में हनुमान को काम न था। अतः स्वामी से विदा लेकर वहाँ आकर वे विश्राम करने लगे। आस्तिकों का विश्वास है कि आज भी हनुमान वहाँ आराम कर रहे हैं। कहा जाता है कि हर साल हनुमान जी की सेवा करने अयोध्या से यहाँ एक बंदर आता है और लौटते समय अपनी पूँछ गंवाकर चला जाता है। यहाँ अत्यधिक ठंड है, खाने को कुछ नहीं मिलता। अतः बंदर को अपनी पूँछ खानी पड़ती है। नये बंदर के आते ही पुराना बंदर लौट पड़ता है। इस तरह बंदर की पूँछ गँवाने के कारण इस जगह का नाम 'बंदर पूँछ' पड़ा। इसे बंदर पूच्छ भी कहते हैं।

साल भर बर्फ से ढके होने के कारण इन चोटियों पर चढ़ना आसान नहीं है। हर साल मई से लेकर अक्तूबर तक पहाड़ पर चढ़ने की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही भारत तथा अन्य देशो के अनेक पर्वतारोही यहाँ आते रहते है।

पहाड़ के ऊपर सुंदर वन प्रदेश है। कही-कही जगल इतने घने है कि अंधेरे के कारण पेड़ की डाल भी दिखाई नही पड़ती। जगल पार कर आगे बढे तो खुला मैदान मिलता है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। रंग-बिरंगे फूल खिले हुए है, जिन्हे देख हृदय की कली खिल जाती है। ये फूल अपनी भीनी-भीनी महक द्वारा किसको मुग्ध नही करते। यहाँ पहुँचकर सारा कष्ट भूल जाते हैं। ऐसा लगता है मानो नंदन वन मे पहुँच गए है। इन फूलो की घाटी मे स्थित एक हिमानी से जमुना नदी का जन्म होता है। जब जमुना लगभग 8 किलोमीटर नीचे उतरकर घाटी मे पहुँचती है तब उस घाटी को "यमुनोत्री घाटी" (अर्थात् जहाँ जमुना नीचे उतरी) कहते है।

प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथो मे यमुना का गुणगान खुलकर हुआ है। यह धारा पतितपावनी मानी जाती है। इसलिए लोग इसे आदर से यमुना मैया कह कर पुकारते है।

"बदर पूँछ" पहाड़ के एक भाग का नाम कलिंद है। इस क्षेत्र से यमुना का उद्गम होने के कारण उसका एक नाम कलिंदजा या कालिन्दी (कलिंद की बेटी) भी पड़ गया है। यहाँ पर पहाड़ बर्फ़ की दीवार जैसा दिखाई देता है। केवल प्रशिक्षित व्यक्ति ही इस पर चढ़ सकते है। यदि पैर फिसला तो सीधे यमपुरी पहुँचेंगे। असल में यमुना यमराज की बहन ही तो है। इसलिए यमुना का नाम यमी पड़ा और इस घाटी का नाम यमुनोत्री। इस प्रकार यमुनोत्री नाम सार्थक प्रतीत होता है। यमुना सूर्य की बेटी है। अतः उसका नाम सूर्य-तनया पड़ा है। इसका पानी साफ पर नीला-साँवला है। अतः इसका नाम 'कालगंगा' भी है। यह नाम भी कितना सार्थक है। यमराज की गंगा और काली सूरत वाली गंगा।

यमुना को 'असित' भी कहते हैं अर्थात् श्यामवर्ण वाली, कहा जाता है कि पुराने जमाने में असित नामक एक महर्षि रहा करते थे। उन्होने ही पहले पहल यमुना के उद्गम स्थान की खोज की थी। अतः उसका नाम उस महर्षि के नाम पर असित पड गया। श्री कृष्ण की प्रियाओं मे कालिंदी भी एक है। यह कालिंदी और कोई नही, यमुना ही है, इसलिए यमुना श्रीकृष्ण की लीला-भूमि में सर्वत्र बहती है।

यमुना नदी के दूसरे किनारे एक ऊँचे स्थान पर यमुना का छोटा-सा मंदिर है। हम पुल पार कर मंदिर की ओर आगे बढ़े। यहाँ कई गरम कुंड

है। सबसे नीचे वाले कुंड मे लोग नहा रहे थे। ऊपर वाले कुंड मे से होकर पानी यहाँ गिर रहा था। ऊपर के कुड मे पानी इतना गरम है कि कोई उसमें नहीं नहा पाता। नीचे वाले में ठडे पानी का स्रोत मिला दिया गया है जिससे पानी नहाने योग्य बन गया है। उसी कुंड मे हम भी नहाकर मदिर की ओर चले। यमुना की मूर्ति खूब सजी थी। भीड़ नही के बराबर थी। अतः आराम से दर्शन, पूजा-पाठ किया। दान-दक्षिणा भी दी। यहाँ प्रसाद में आटे का हलवा बँटता है। प्रत्येक को दो-दो, तीन-तीन बार मिला। आधा पेट उसी से भर गया।

मदिर के पीछे एक छोटा-सा कुड था। उसमें पानी उबल रहा था। उबलने की आवाज दूर से ही सुनाई पड़ती थी। कुछ लोग उस पानी में रोटी पका रहे थे। कुछ लोग एक लोटे मे उस उबलते पानी को भरकर उसमे चाय की पत्तियाँ डालकर चाय बना रहे थे। जैसे हम पूरी को तेल या घी मे छोड़कर निकाल लेते हैं उसी तरह रोटी पकाने वाले रोटी को उस कुंड मे छोड़ देते थे। वह पानी में डूबकर नीचे चली जाती थी। यह देख हम समझ बैठते कि रोटी शायद पानी मे गल गई होगी पर एक मिनट मे वह पककर हमारे देखते-देखते ऊपर आ जाती थी। रोटी पकाने वाले चिमटे से उसे निकाल रहे थे और दूसरी रोटी पकाने के लिए कुंड मे डाल रहे थे। मैं अपनी आँखो पर विश्वास न कर सका। एक रोटी उनसे माँगी और खाकर देखा कि रोटी खूब पक गई थी। कुछ लोग चावल और आलू एक कपडे मे बाँधकर कुंड मे डुबो रहे थे। पूछने पर मालूम हुआ कि इस तरह दस मिनट छोड़ देते हैं तो आलू और चावल पक जाते हैं। तुरत मैंने कपड़े के एक कोने में आधा सेर चावल और चार बडे-बड़े आलू बांधकर कुड मे पानी मे डुबो दिए। पद्रह मिनट बाद कपड़े को ऊपर उठाकर और गाँठ खोलकर देखा। चावल खूब पककर पिच-पिच हो गया था। आलू भी पककर फट गए थे। गरम मसाला मिलाकर हम सबने पेट भर खाया और कुली और घोडे के मालिकों को भी खाने को दिया।

कहा जाता है कि अग्निदेव ने कठिन तपस्या की थी जिसके फलस्वरूप उन्हें दिग्पाल का पद मिला था। उसकी स्मृति में अब भी गरम पानी का कुंड मौजूद है जिसे तप्त कुंड के नाम से अभिहित किया जाता है। कुछ लोग इसे गौरग डिबिया भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ सिद्ध नामक तीर्थ है जहाँ यमराज ने कठिन तपस्या कर अपनी पदवी प्राप्त की थी। अतः आस्तिकों का विश्वास है कि यहाँ यमुना में नहाने से सब पाप धुल जाते है और तप्त कुंड में नहाने से समस्त पाप पुंज को अग्निदेव भस्म कर डालते हैं। साथ ही यम का पाश उन तक नहीं पहुँच पाता। कुंड की बगल में कई गरम

पानी के स्रोत है जिनका पानी निरंतर फुहारे की तरह उठता है और फिर गिरता रहता है। आधे घंटे तक हमने इन फुहारो के संगीत और नृत्य का आनंद उठाया। उसकी बगल मे ही पडा लोग बैठकर पिण्डदान एवं तर्पणादि करा रहे थे। मेरे बुजुर्ग मित्र ने भी अपने पित्रों के लिए पिण्डदान और तर्पणादि किए।

फिर हम हनुमान मदिर की ओर गए। स्वामी जी ने प्रसाद बाँटते हुए पूछा—"आप लोग कहाँ से आ रहे है ?"

"जी, मैसूर से।"

"क्या आपने कुछ खाया-पिया ?"

"जी हाँ।"

"कहाँ और कैसे ? यहाँ तो अभी तक कोई दुकान नही खुली है।"

"जी, हम चावल और आलू ले आए थे। कुड मे पकाकर खा लिया।"

"आपको सकोच करने की कोई जरूरत नही। यदि चाहिए तो हम खिचड़ी बनाने के लिए सब सामान आपको दे देंगे। आप बहुत दूर से आए है। यहाँ अभी कोई व्यवस्था नही हो पाई है।"

"जी, बहुत धन्यवाद। हमे किसी प्रकार का संकोच नही है। खूब खा-पीकर आए है।"

फिर उनको प्रणाम कर जब हम नीचे उतर रहे थे तब बगाली मित्र से भेंट हुई। उन्होने भी मुझसे यही पूछा कि खाने के लिए आपने क्या किया। बाद मे पता चला कि वे लोग बिना कुछ इतजाम किए यहाँ आ गए थे। यहाँ दुकाने है ही नही, भूखो तड़पना पड़ता। आखिर स्वामीजी ने खिचड़ी बनाने के लिए चावल, दाल, मिर्च, नमक, बरतन और लकड़ी जुटाकर दिए। यदि वे सहायता न करते तो उन्हे भूखो जानकी चट्टी को लौटना पड़ता। उनसे बिदा लेकर हम चल पड़े।

पानी बेहद ठडा होने से हम यमुना मे नही नहा पाए, पानी से प्रेक्षण कर एक लोटे मे पानी भरकर टाँका लगाते ले चले। उस दिन हमारा पड़ाव जानकी चट्टी मे था। वहाँ पहुँचकर हमने किराए पर कमरा ले लिया। सवेरे हम सब पैदल ही हनुमान चट्टी होते हुए सयाना चट्टी के लिए चल पडे। हनुमान चट्टी से सयाना चट्टी तक का पैदल रास्ता बड़ा खतरनाक था। घोड़े वालों ने अब पैदल का रास्ता छोड़ पहाड़ी पगडंडी का रास्ता पकड़ लिया था। उस ओर एक ही आदमी एक समय मे आ या जा सकता था। नीचे सैकडो फुट का गड्ढा और प्रचंड गति से बहने वाली यमुना ! पैर फिसले तो सीधे यमपुरी पहुँचेंगे। कभी-कभी यात्रियों को बैठकर चलना पड़ता और

कभी-कभी चट्टानों को पकड़कर। बीच-बीच में कच्चे पुल भी मिल जाते हैं जो रस्सियों से बने हैं। इन पर भी एक समय में एक ही व्यक्ति आ या जा सकता है। पुल झूला जैसा झूलता है, चलते समय हृदय धक्-धक् करने लगता है। सामान ले चलने वाले कुली ने हमारी बड़ी मदद की। अतः रास्ता तय करने में खास तकलीफ नहीं हुई।

यहाँ की पहाड़ी औरतें गोरी और सुंदर थीं। उनके गालों पर अकृत्रिम लालिमा छाई हुई थी। यहाँ प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य के दर्शन हुए। ये स्त्रियाँ बड़ी परिश्रमी हैं। पूछने पर पता चला कि उस सर्दी में भी वे तड़के ही पशुओं का चारा इकट्ठा करने पहाड़ों पर टोलियों में निकल पड़ती हैं। बड़ी-बड़ी टोकरियों में पत्तों का अंबार ढोकर लाती हैं। जानवरों के मल-मूत्र में उन्हें सड़ने देती हैं, यही खेत के लिए खाद बन जाता है।

यहाँ की स्त्रियों में चाँदी के आभूषण पहनने का बहुत प्रचलन है। वे नाक में एक बुलाक पहनती हैं जो उनके विवाहित होने का परिचायक है। यात्रियों को देखकर वे प्रायः "यमुना मैया की जय" बोल उठती हैं। रास्ते भर यात्री भी यही नारा लगाते आते हैं और लौटते हुए यात्रियों से पूछते जाते हैं कि और कितनी दूर है।

उत्तराखंड की नारी ने पर्वतराज हिमालय से दृढ़ता ली। हरी भरी घाटियों से मोहकता ली, चंचल वेगवती नदियों से अथक परिश्रम की गति प्राप्त की, मुक्त आकाश से उदारता ली, तभी वह पूर्ण पर्वतीय नारी बनी।

काले लहँगे पहने, कमर पर धोती का फेंटा कसे, हाथ में दँराती लिए, माथे पर लाल-लम्बा टीका, कमर तक झूलती वेणी, रंग-बिरंगी फतूही पहने चाहे कुमाऊनी नारी हो अथवा काले परिधान के साथ लाल मूँगे की माला, कानों में मूँगे के कर्णफूल, नाक में झूलती बुलाक वाली चाहे गढ़वाली नारी हो या काले रंग के परिधान युक्त माथे पर सफेद रूमाल बाँधे स्वर्ण या रजत मस्तक पट्टिका से सुशोभित बड़ी-बड़ी नथों को झुलाती कर्मठ भोटिया नारी हो, किसी भी पर्वतीय नारी पर दृष्टि पड़ते ही उसकी सहज कर्मठता का बोध हो जाता है। वे कुसुम के समान कोमल और मोहक हैं, तो वज्र के समान कठोर भी हैं। अपनी अथक साधना के बल पर पर्वतों की पथरीली भूमि को शस्य-श्यामला बनाने का श्रेय इन्हीं को है।

परिवार के लिए दूरस्थ जल स्रोतों से जल लाना, पशुधन की देखभाल, प्रकृति की वन-संपदा से पूर्ण इस धरती के जंगलों से घास या लकड़ी काटना आदि इनके दैनिक कार्य हैं। वह परिवार की आर्थिक व्यवस्था हँसते-हँसते सँभालती है। जीवन-निर्वाह कठोर है। धरती उपजाऊ नहीं है पर प्रकृति

की चुनौती को स्वीकार कर घर का भंडार अन्न से अन्नपूर्णाएँ ही भरती है।

खेतो मे खाद डालना, बीज बोना, निराई, गुडाई, कटाई, मडाई, खेतो से घर तक अनाज ढोने के कार्यों में व्यस्त पर्वतीय नारी के अथक परिश्रम को देख कर्मठता भी लज्जित होती है।

समस्त ऊनी कपडो, थुलमों, कबलों के अतिरिक्त मूल्यवान सुंदर कालीनों को यहाँ की भेड-बकरियों के पालक यायावर भोटियों की नारियाँ ही तैयार करती है।

जगल में घास या लकड़ी काटते हुए दूरस्थ पर्वत-घाटियाँ उनके मुग्ध गायन से गूँज उठती है। कोई भी मेला उनके सरस नृत्यों तथा गीतों से रंगीन हो उठता है। हुड़के की थाप के साथ निराई करते समय उनका परिश्रम द्विगुणित हो उठता है।

वे स्वभावतः कलाप्रिय है। किसी भी मगल पर्व पर घर की देहरी को चावल की सुंदर अल्पना से सजाना नहीं भूलती। वैवाहिक मंगल अवसरों पर घर की पुताई और सफाई के बाद उनके द्वार सजाने की कला देखकर विस्मय विमुग्ध हो जाना पड़ता है। बिना विधिवत् ज्ञान प्राप्ति के भी उनकी विलक्षण प्रतिभा मन को मोह लेती है।

साढ़े दस बजे हम सयाना चट्टी पहुँचे। सामान ले आने वाले कुली को रुपया देकर विदा किया। सामान घर से अपना सामान छुड़ा लिया। हम सीधे गंगोत्री जाने वाली बस पर जा बैठे। अभी दस सीटे खाली थी। अतः बस यात्रियो की प्रतीक्षा में खड़ी थी।

एक बज गया था। दो बजे के बाद गेट बंद हो जाना। अत: यात्रियों ने बस ले चलने को कहा, पर बस वाले बोले, "अभी और तीन सीटे भरने दीजिए या आप सब लोग मिलकर इन तीन सीटों का किराया दे दीजिए।" यात्री सवेरे से बैठे-बैठे ऊब गए थे। अत: एक दिन और वहाँ ठहरना कोई नही चाहता था। सबने मिलकर तीन सीटों का किराया दे दिया। बस चल पड़ी।

धारासू पहुँचकर जलपान किया। रात के साढ़े आठ बजे हम उत्तरकाशी पहुँचे। रात का पड़ाव वही था। सवेरे पाँच बजे बस पर आ जाने की सूचना देकर बस रुक गई। हम काली कमलीवाले बाबा जी की धर्मशाला में ठहर गए। यहां गर्मी अधिक थी। भोजनोपरांत हम बाहर ही सो गए। सवेरे चार बजे आँखें खुलीं। धर्मशाला के पिछवाड़े ही भागीरथी बह रही थी। सबने उसमे स्नान किया। बोरिया-बिस्तर बाँधकर बस-स्टाप की ओर रवाना हुए।

गंगोत्री

16 मई के सवेरे बस उत्तरकाशी से गंगोत्री की ओर चल पड़ी। भागीरथी के किनारे-किनारे बस जा रही थी। फेनिल धारावाली भागीरथी शोर मचाती, द्रुतगति से पत्थरों से टकराती हुई भागी जा रही थी। मनेरी, भटवारी, गंगनानी, सुखी, हर्षिल आदि होते हुए साढ़े दस बजे हम धराली पहुँचे। मनेरी मे भारत के एक नए तीर्थ का निर्माण हो रहा है। यहाँ भागीरथी का जल लबी सुरंग द्वारा पर्वत की दूसरी ओर ले जाकर नीचे गहराई मे गिराया जाता है। इस कृत्रिम जल-प्रपात का प्रयोग विद्युत उत्पादन के लिए किया जा रहा है। यह योजना 'मनेरी माली जल विद्युत योजना' के नाम से प्रसिद्ध है। आगे मार्ग में बड़ी-बड़ी चट्टानें पड़ी थीं अतः बस आगे नही जा पाई। बस ड्राइवर ने यात्रियो को यहाँ उतार दिया। पूछने पर मालूम हुआ कि तेईस किलोमीटर पैदल जाना होगा। हम यमुनोत्री मे पैदल चलकर बहुत थक गए थे। यहाँ घोड़े या डोली की व्यवस्था नही थी। उसके होने पर भी हम उसमें जाने वाले नही थे। क्योंकि यमुनोत्री का कटु अनुभव अभी तक भूल न पाए थे। धराली मे ठहरकर दूसरे दिन सवेरे कूच करना चाहते थे।

अब गंगोत्री की यात्रा अपेक्षाकृत सुगम हो गई है। उत्तरकाशी से आगे पच्चासी किलोमीटर की दूरी पर स्थित लका नामक स्थान तक बसें जाने लगी है। वहाँ से केवल तीन किलोमीटर की भैरवघाटी पार करनी पडती है—डेढ़ किलोमीटर उतार और डेढ़ किलोमीटर खडी चढ़ाई। उसके बाद गंगोत्री मदिर तक नौ किलोमीटर फिर सीधी सड़क है। यहाँ कुछ उद्यमी व्यक्ति मोटर के विभिन्न हिस्से खोलकर ले जाते है और घाटी के उस पार उन्हे जोड़कर गाडी तैयार कर लेते है। इससे यात्रियो को मोटर मे बैठकर मदिर तक जाने की सुविधा प्राप्त हो गई है।

औरतो ने गरम उप्पमा बनाया था। मैं अपने मित्र के साथ नाश्ता कर भागीरथी मे कपड़े धोने चल पड़ा। नहा-धोकर हमने भोजन किया ही था कि बस कडक्टर ने हमे खुशखबरी सुनाई—लका तक रास्ता साफ हो गया है। अतः दस मिनट के अदर सबको बस मे आ जाना चाहिए।

यहाँ से लंका लगभग बारह किलोमीटर दूर है। यह सुनते ही हम खुशी से उछल पडे। न आव देखा न ताव। खुला हुआ सब सामान जैसे-तैसे बाँधकर पाँच मिनट मे बस पर जा बैठे। हम तो अगले दिन जाने के लिए सोच बैठे थे। अत: अनावश्यक सामान को यहाँ के सामान घर मे छोड़ नही पाए। बस चल पड़ी। हमारी बस पहली बस थी। उसके पीछे-पीछे सात और बसें भी आ गई। यद्यपि गगोत्री का मदिर 15 मई को ही खुल गया था, फिर भी यात्री बहुत कम सख्या मे आ पाए थे। वे सब पैदल ही चले थे। तीन किलोमीटर का फासला पार करते ही मुसीबत आ पड़ी। एक बहुत बडा चीड़ का वृक्ष बीच रास्ते मे पडा हुआ था। दस-पंद्रह कुली उसे रास्ते से हटाने का प्रयत्न कर रहे थे। आठों बसे रुक गई। हमारा बस ड्राइवर बड़ा उत्साही एव सेवाप्रिय लगता था। नीचे उतरकर बोला, "भाइयो! थोड़ा नीचे उतरकर अपना हाथ लगाइए। इस पेड़ को एक ओर सरका देंगे।" मैं सबसे पहले नीचे उतर पड़ा। मेरे उतरते ही पचास-साठ लोग अन्य बसों से भी उतर पड़े। पाँच मिनट मे हम सबने मिलकर पेड को सड़क के किनारे एक ओर सरका दिया, बस चल पड़ी। वहाँ काम करने वाले कुली भी आकर हमारे साथ बैठ गए। पूछने पर मालूम हुआ कि ये सब आस-पास के पहाडी गाँवों के रहने वाले है। वे एक महीने से रास्ता साफ करने के काम में जुटे हुए है। फिर भी काम पूरा नही हो पाया है। बस अचानक फिर रुक गई। हमने देखा कि एक बड़ी चट्टान बीच रास्ते मे पड़ी हुई है। मजदूरों ने बताया कि कल तक वह चट्टान वहाँ नही थी। शायद कल रात को ही लुढ़क पडी है। हम सब नीचे उतर पडे। लकडियों की सहायता से चट्टान को पहाडी रास्ते से नीचे ढकेल दिया। उसके लुढकते ही कई पेड़ टूटकर नीचे जा गिरे। हम सब बस में बैठ गए। देवदार वृक्षों से सारा पहाड सुशोभित था। पत्तों के बीच सूर्य की रश्मियाँ छनकर इंद्रधनुषी रंग बिखेर रही थी।

आधा किलोमीटर जाते ही हमने दूर मे देखा कि दैत्याकार चट्टान बीच रास्ते मे पड़ी हुई है। बीस कुली उसे हटाने के काम में जुटे हुए है। डेनामाइट द्वारा चट्टान के दो टुकड़े तो हो गए थे पर उसे हटाना बड़ा मुश्किल था। छोटे-छोटे चीड के कई वृक्षो को काटकर उनकी सहायता से सबने मिलकर हटाने का प्रयत्न किया। इसमे पचासो यात्री शामिल हुए। अब सातो बसो के ड्राइवर हमारे बस ड्राइवर को कोसने लगे। बोले, "तुम्हारी बात मानकर हम सब बस ले आए। अब बताओ तुम उसे कैसे हटाओगे।"

हमारा बस ड्राइवर मुस्कराकर बोला, "हिम्मत न हारो। हम प्रयत्न करेंगे। आगे गगा मैया की मर्जी।"

फिर बस के अदर से उसने जैक निकाला जो बस को ऊपर उठाने के काम मे आता है। जैक की सहायता से चट्टान ऊपर उठती गई और हम नीचे मोटी लकड़ियाँ डालते गए। इस प्रकार आधे घंटे मे चट्टान को नीचे ढकेलने में हम समर्थ हुए।

बस आगे बढ़ी पर आधा फर्लांग जाते ही फिर रुक गई। सामने का रास्ता बिलकुल टूट गया था, वहाँ कुली पत्थर जोड़-जोड़कर रास्ता ठीक कर रहे थे। तीन-चार घटे रुकने पर भी रास्ता ठीक होने की उम्मीद न थी। सब ड्राइवर हमारे ड्राइवर की खिल्लियाँ उड़ा रहे थे। हमारी स्थिति ऐसी हो गई थी कि धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। लौटना भी बडा मुश्किल था। बस को मोड़ने के लिए यहाँ जगह न थी। यात्रियों के लिए ठहरने की भी कोई व्यवस्था न थी। इसी बीच जीप में तहसीलदार साहब और कलेक्टर साहब गंगोत्री से लौट रहे थे। वे बोले, "यहाँ तक आने की अनुमति किसने दी? किसके आदेश से बस ले आए? यात्रियो को मुसीबत मे क्यो डाल दिया? आगे का रास्ता अभी ठीक नहीं हुआ है। उसे ठीक करने में कम-से-कम पंद्रह दिन और लग जाएँगे। इसलिए किसी-न-किसी तरह बस को वापस ले जाओ। यात्रियो से कह दो कि वे सब पैदल ही गंगोत्री जाएँ।"

दोनों जीप मे बैठकर चले गए। यात्री लोग पैदल जाने के लिए तैयार हो गए। कोई वापस धराली नही जाना चाहता था। अधिकतर लोग हमारे देखते-देखते चल पड़े क्योंकि उनके पास सामान कम था। मैंने कुली को पुकारा। सामान का वजन कुल 150 किलो था। उसे उठा ले चलने के लिए कम-से-कम दो कुली चाहिए। दो कुली आए। वे दोनों इस मौके का फायदा उठाना चाहते थे। दो सौ रुपए से कम में जाने को तैयार न थे। मैं अपनी बेवकूफी पर पछताने लगा।

यदि धराली मे ही हम ये सामान छोड़ आए होते तो यह परेशानी नहीं झेलनी पडती। निश्चय किया कि मेरे बुजुर्ग मित्र और उनकी पत्नी के साथ मेरी पत्नी भी पैदल यहाँ से लंका तक जाएँगे। केवल पैंतीस किलो सामान कुली ले जाएगा, जो नितांत आवश्यक है। मैं बाकी सामान लेकर इसी बस से धराली वापस जाऊँगा और सामान घर मे छोडकर उनसे लंका मे आ मिलूंगा। मेरे मित्र को भी यह सलाह पसंद आई। अब चार बज चुके थे। लंका सात किलोमीटर दूर थी। कम-से-कम सात बजे तक उनको लका पहुँच जाने की उम्मीद थी। वे कुली को लेकर साथ चल पडे। मैं बाकी सामान लेकर बस मे बैठ गया।

सब बसो को घुमाकर धराली ले चलने में दो घंटे लगे। हमारा ड्राइवर विशेष कुशल था, उसी ने सब बसों को घुमाया। बाकी ड्राइवर हक्के-बक्के रह

गए । आखिर हम शाम के छह बजे धराली पहुँचे । सब सामान अमानती घर मे छोड रसीद ले नीचे उतरा ही था कि जोर से पानी बरसना शुरू हो गया । एक घटे तक पानी बरसता रहा । सिवाय एक कबल के मेरे पास कुछ नही था । तब तक और चार बसें आ गई थी । यात्रियो के ठहरने के लिए यहाँ समुचित व्यवस्था नही थी । यात्रियों को भारी कष्ट भोगना पड़ा । कुछ लोग बस में ही पडे रहे । मैं सोचने लगा कि बडा अच्छा हुआ हमारे लोग लका पहुँच गए अन्यथा उन्हे भी यह कष्ट भोगना पड़ता ।

पानी बद होते ही मैं लका की ओर जाने के लिए तैयार हुआ । उस समय मेरे साथ चलने के लिए कोई तैयार न था । जब मै अकेला जाने के लिए रवाना हुआ तब किसी ने आकर कहा, "बाबू साहब, रात के समय चीता, शेर, हाथी आदि खूँखार जानवर निकल पड़ते हैं । इस जंगल के रास्ते मे हम आपको इस समय जाने नही देगे ।"

मेरे लिए कोई चारा न था । मैं रुक गया । अच्छा ही हुआ क्योकि फिर आधे घटे मे मूसलाधार पानी बरसने लगा । पानी रात भर बरसता रहा । यदि मैं गया होता तो जगल के रास्ते मे फँस जाता । यहाँ कोई स्थान ठहरने के लिए नहीं था । चाय की दुकान मे बैठकर लोगों की बातें सुनता रहा । फिर रात के नौ बजे गरम पूड़ी खाकर दुकान पर ही बैठा रहा । दस बजे दुकान बंद होने लगी । दुकान में रात भर ठहरने के लिए अनुमति माँगी । मुझे वहाँ सोने के लिए अनुमति मिल गई और उसने बिस्तर की भी व्यवस्था कर दी ।

अगीठी जलती रही । मैं एक ओर नरम-नरम बिस्तर बिछाकर लेट गया । पर मुझे नीद आई नहीं । आखिर मैं चार बजे उठ पड़ा । लडका अगीठी जला आग तापने बैठा हुआ था । धन्यवाद के साथ उसे बीस रुपए देने चाहे पर उसने नहीं लिए । मैं लका की ओर द्रुतगति से चल पड़ा । भाग्यवश पानी बरसना बंद हो गया था ।

पाँच किलोमीटर चलने के बाद एक जगह चाय मिली । साढ़े छह बजे मैं लंका पहुँच गया । मेरी पत्नी और मित्र परिवार अभी सो रहे थे । मुझे देख कर आश्चर्यचकित हो उठे । वे रात में बड़ी देर तक बिना खाए मेरी प्रतीक्षा में बैठे रहे थे । बाद में यहाँ के लोगों ने बताया कि आज वे नहीं आ सकते । कल सवेरे आ जाएँगे । मुझे देख कुली लोग पूछ बैठे, "साहब आप कहाँ से आ रहे हैं ?"

"धराली से ।"

"साहब, आप हँसी-मजाक तो नही कर रहे है ? सच बोलिए ।"

"मै झूठ क्यों बोलूं ?"

"कितने बजे वहाँ से रवाना हुए ?"

"ठीक चार बजे।"

"चार बजे ? क्या आप अकेले आए ? डर नहीं लगा ?"

"अरे भाई, इसमे डरने की बात क्या है ?"

"साहब आप बहुत तेज चलते है। ढाई घंटे में बारह किलोमीटर पार कर आए हैं। हम पहाड़ी लोग भी इतनी जल्दी नहीं आ सकते। सुनसान जगह मे आने से आपको डर न लगा ?"

"यहाँ रास्ता तो बड़ा अच्छा है। केवल एक जगह पर चढ़ाई थी। यदि वह न होता तो दो घंटे में आसानी से आ सकता था।"

"आप तो तूफान मेल है।"

असल में मेरे पैरों में पर लगे थे अपनों से मिलने के लिए। सब लोग जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धो, चाय पी गंगोत्री की ओर रवाना हुए। वहाँ से गंगोत्री बारह किलोमीटर है। यहाँ से आगे चलने के लिए कोई कुली तैयार नहीं हुआ। अतः हम लोगों ने अपना सामान स्वयं उठा लिया और चल पड़े। हार मानना नहीं चाहते थे।

लंका नामक स्थान के आगे भैरों घाटी का रास्ता तीन किलोमीटर का है। डेढ़ किलोमीटर उतराई है और डेढ किलोमीटर बड़ी कठिन चढ़ाई। एक-एक पग बढ़ाना कठिन होता है। यह घाटी बड़ी सुहावनी है। दैत्याकार चट्टानों से टकराती, बल खाती भागीरथी बड़ी सुंदर दीख पड़ती है। एक-दो जगह पर लोहे के पुल बने है। हम सब थक गए थे अतः बहुत धीरे-धीरे कदम बढ़ा रहे थे। केवल बारह किलोमीटर चलकर गंगोत्री पहुँचने मे पाँच घंटे लग गए। मैं तो लगातार सवेरे चार बजे से तेइस किलोमीटर चल चुका था। सारे शरीर मे दर्द हो रहा था।

गंगोत्री मे इस समय धूप निकली हुई थी। हम सीधे धर्मशाला की खोज में गए। आखिर पंडाजी की सहायता से हमें ठहरने के लिए कमरा, ओढ़ने के लिए रजाइयाँ और फर्श पर बिछाने के लिए गद्दे किराए पर मिल गए। हम भागीरथी मे नहाकर थकावट मिटाना चाहते थे, अतः कपड़ा लेकर नदी की ओर चले। इसी बीच पानी जोर से बरसने लगा। आधे घंटे तक वर्षा होती रही। ठंड शुरू हो गई। अब नदी में नहाना तो दूर रहा मुँह भी न धो सके। पंडाजी ने एक बाल्टी गरम पानी दिया। उसी से हाथ मुँह धो, गरम खाना खाकर, बिस्तर मे घुस पड़े। मुझे बुखार-सा महसूस होने लगा। गरम चाय के साथ दवा की एक टिकिया लेकर लेट गया। पाँच बजे उठा तो अपने को ठीक पाया।

मैं अपने मित्र के साथ साधु-संतों, तपस्वियों तथा संन्यासियों के दर्शन करने आश्रमों की ओर निकल पड़ा। आश्रम सबके सब बंद थे। पूछने पर मालूम

हुआ कि वे सन्यासी-तपस्वी छह महीने यहाँ नहीं रहते। तीन-चार दिनों मे वापस आ जाएँगे। हम निराश हो लौटना ही चाहते थे कि एक दरवाजा आश्रम का खुला देखा। हम सीधे अदर गए। स्वामी जी अदर बैठे हुए थे। वे हमारा स्वागत करते हुए बोले, "क्या मै आपके लिए चाय बना दूं?"

"जी नही, अभी-अभी हम चाय पीकर आए है।"

"तो बैठिए।"

हम आराम से बैठ गए। कमरा स्वच्छ था। मालूम हुआ कि स्वामी जी साल भर यही रहते है। वे दिन मे एक ही बार खाते है। वेद-पुराण-पठन, ध्यान व तप में अपना समय बिताते हैं। जो संन्यासी अब आने वाले हैं वे उनके लिए खाद्य सामग्री जुटाकर लाएँगे।

मैंने उनसे पूछा, "स्वामी जी, जब छह महीने कोई नही रहता, तब बिना किसी से बोले आप कैसे रह लेते है?"

"इस अवधि मे मैं मौनव्रत धारण कर लेता हूँ।"

"बिना किसी साथी के रहना क्या आपको खलता नहीं?"

"मै अकेला कब हूँ? परमात्मा तो मेरे साथ है। साथ ही मेरे ये ग्रंथ चौबीसों घंटे मेरे साथ रहते है।" यह कहते हुए अपनी किताबों की ओर इशारा किया।

कुछ क्षण बाद स्वामी जी ने पूछा, "आप किस उद्देश्य से यह यात्रा करने आए हैं?"

मेरे मित्र चुप बैठे थे। मैं बोला, "प्रकृति की गोदी में चद दिन बिताने की मेरी उत्कृष्ट इच्छा थी। उसे पूरा करने इधर आया हूँ।"

"आप क्या धन-दौलत की प्राप्ति या मोक्ष की इच्छा से नही आए हैं?"

"यात्रा करने से इनकी प्राप्ति होगी, इस पर मेरा विश्वास नहीं हैं। मैं कर्म मार्ग पर आस्था रखने वाला अध्यापक हूँ। मेरे लिए कर्म ही सब कुछ है।"

"क्या आप भगवान् और भगवती के दर्शन करने नहीं आए हैं?"

"जी नही। वे तो हर कही रहते हैं। उन्हें देखने के लिए इतनी दूर आने की क्या आवश्यकता है? मैं सिर्फ़ प्रकृति के विविध रूपों का उपासक हूँ। घटो प्रकृति मे बैठ कर आनंद लूटता हूँ। लोग कहते है मेरे ऊपर सनक सवार है पर मैं उनकी परवाह नहीं करता।"

"हाँ, प्रकृति भी तो भगवान् का ही रूप है। उसमें आनंद अवश्य मिल जाता है।"

फिर आध्यात्मिक विषय पर एक घटे तक चर्चा चली। भक्ति की विभिन्न पद्धतियों एवं आचरण पक्ष की एकता तथा भगवान् के विभिन्न रूपों की एकता पर काफ़ी बातें हुई। जीवन मुक्त दशा, निष्काम कर्म, स्थित प्रज्ञ की स्थिति, ब्रह्मानंद का स्वरूप, योगदर्शन आदि विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान

हुआ। हमारे विचारों से वे प्रसन्न हुए। बोले, "आप सांसारिक जीवन बिताते हुए साधना पथ के पथिक हैं।"

"आप मुझे लज्जित न कीजिए, आशीर्वाद दीजिए।" मैंने सकुचाते हुए कहा।

"मैं कौन हूँ आशीर्वाद देने वाला और आप कौन है आशीर्वाद लेने वाले ? जब हम दोनों मे वह परमात्मा बसा हुआ है तब उसका आशीर्वाद हमेशा बना हुआ है।"

उन्होंने हमे अपने चरण छूने की अनुमति नहीं दी। बोले, "यहाँ लोग धन-दौलत प्राप्त करने और संकट निवारणार्थ अपने सारे सांसारिक झंझटों को साथ ले आते है और हमारे भगवद् चिन्तन मे बाधा डालते है। मैं तो आपसे अत्यत प्रसन्न हूँ। हमने भगवत् चिन्तन मे डेढ घटे का समय सदुपयोग किया। यदि फुरसत हो तो कल भी आइए।"

"कल हम गोमुख की ओर जाने के लिए सोच रहे हैं। यहाँ नहीं आ सकेंगे। लौटने के बाद हम आपके दर्शन करेंगे।"

हम यहाँ से सीधे मंदिर पहुँचे। आरती हो रही थी। "जय गगे" का मधुर गीत गूंज रहा था। प्रसाद लेकर हम कमरे मे लौट आए।

सवेरे साढ़े सात बजे जगे। फिर गगा में नहाने निकले। अभी धूप निकल रही थी। पानी मे फिर भी उतरकर नहीं नहा पाए क्योकि बड़ी ठड थी। लोटे से पानी लेकर जल्दी सिर पर उड़ेल लिया। अनुभव हुआ कि मानो सारे बदन मे बिजली छू गई हो। मेरे लिए तो यह अनुभव नया न था, पर मेरी पत्नी और मित्रों के लिए यह नया अनुभव था। वहाँ बहुत से लोग ठंड से डरकर नहीं नहाते। केवल आचमन और प्रोक्षण कर, संतोष कर लेते है।

गंगोत्री अर्थात् गंगा उतरी। यहाँ गगा स्वर्ग से नीचे उतरी। भागीरथ ने उसे नीचे उतारा था। कहा जाता है कि पुराने जमाने में सगर नामक एक सम्राट थे। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया। सर्वलक्षण संपन्न एक सुंदर घोड़े को सजाकर अश्वशाला में रखा गया था। दूसरे दिन उसे सेना के साथ दिग्विजय के लिए छोड़ा जाना था। राजा सगर के इस प्रताप से इद्र भयभीत हो उठा। अतः वह अश्वशाला मे बँधे हुए अश्व को चुराकर ले गया और कपिल की गुफा मे बाँध आया।

दूसरे दिन घोड़े को अश्वशाला मे न देखकर राजा चिन्तित हुए। उसे ढूंढने के लिए उन्होने अपने साठ हजार पुत्रों को भेजा। राजकुमारों ने सारी पृथ्वी छान डाली। फिर समुद्र की छान-बीन की, पर घोड़ा न मिला। समुद्र को और गहरा खोद डाला। इसी से समुद्र का नाम सागर पड़ा है। अतत: पूर्व और उत्तर के कोने मे एक गुफा मिली जो पूर्ण रूप से ढकी हुई थी।

उसे भी खोद कर देखा। अंदर एक विशाल मैदान था। एक पेड़ के नीचे एक क्षीणकाय मुनि तपस्या कर रहे थे। उनसे थोड़ी दूर आगे एक बरगद का पेड़ था। उसके तने से वह घोड़ा बँधा था। राजकुमार उस मुनि को ही चोर समझ कर मारने दौड़ पड़े। मुनिवर की समाधि टूटी। आँखें खुली। आँखों से तेज निकला और उस तेज से साठ हजार राजकुमार जलकर राख की ढेरी बन गए।

राजकुमारों के न लौटने पर राजा सगर ने अपने बेटों को ढूँढ़ लाने के लिए अपने पोते अंशुमान को भेजा। वह उन्हें ढूँढते हुए कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचा। उसने अपने सविनय आचरण द्वारा कपिल मुनि को प्रसन्न किया और भस्म हुए सगर पुत्रों के उद्धार का उपाय पूछा। कपिल मुनि ने कहा, "स्वर्ग से गंगा जी को धरती पर लाने तथा गंगाजल के स्पर्श से उनका उद्धार होगा। गंगा विष्णु के पद नख से निकल कर ब्रह्मा के कमंडल में वास करती है। अतः गंगा को उतारने के लिए तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न करना होगा।

अंशुमान तप करने लगे। तप से अपने शरीर को गला डाला पर ब्रह्मा प्रसन्न न हुए। तदुपरांत अंशुमान का बेटा दिलीप अपने पिताजी की मनोकामना पूर्ण करने के लिए तप करने लगा। तप की आँच में उसका शरीर भी गल गया। इसपर उसके पुत्र भगीरथ ने तपस्या आरंभ की। उनके अखंड तप से इंद्र काँप उठा। उनका तप भंग करने के लिए इंद्र ने अनेक प्रयत्न किए पर भगीरथ नहीं डिगे। भगीरथ की तपस्या से ब्रह्मा प्रसन्न हुए। इसपर भगीरथ ने ब्रह्मा से गंगा को धरती पर भेजने का वर मांगा। ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर वर दे दिया। पर धरती पर गंगा के वेग को संभालने की क्षमता केवल भगवान् शंकर में ही थी अन्यथा गंगा पृथ्वी को चीरकर पाताल लोक में पहुँच जाती।

अतः भगीरथ भगवान् शंकर की तपस्या करने लगे। भगवान् शंकर प्रसन्न हुए। वे गंगा को अपनी जटाओं में संभाल कर धीरे-धीरे उसे नीचे उतारने के लिए तैयार हो गए। ब्रह्मा ने गंगा को अपने कमंडल से छोड़ा। उस वेगवती धारा को शिवजी ने अपनी जटाओं में रोक लिया। फिर धीरे-धीरे उसे नीचे उतारा। गंगा भगीरथ से प्रसन्न हुई और बोली, "मैं आज से अपना नाम भागीरथी रख लेती हूँ, क्योंकि तुम्हारे तपोबल से मैं नीचे आई। अब मुझे आगे का मार्ग दिखाओ।"

तब से इस जगह का नाम गंगोत्तरी या गंगोत्री पड़ा। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 3,049 मीटर है। भगीरथ रथ पर चढ़कर मार्ग दिखाते गए और गंगा पीछे-पीछे चलती गई। मुनि की गुफा में साठ हजार सगरपुत्रों की राख की ढेरी पड़ी थी। गंगा के स्पर्श से उनका उद्धार हुआ। वे सीधे स्वर्ग पहुँचे। गंगा आगे बढ़ती हुई सागर से जा मिली।

पहले यहाँ गगा जी का मंदिर काष्ठ से निर्मित था। बाद मे अठारहवी शताब्दी मे अमरसिंह थाप्पा तथा जयपुर के राजा ने उसका जीर्णोद्धार कर पत्थर से मदिर का निर्माण कराया। मदिर छोटा है। गर्भगृह मे गंगा सिहासन पर बैठी है। एक हाथ में कमल है तो दूसरे हाथ मे कलश, तीसरे हाथ से भक्तो को अभयदान देती है और चौथा हाथ जाँघ पर टिका हुआ है। यहाँ लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, जाह्नवी, यमुना, सरस्वती आदि देवियों की मूर्तियाँ भी है। पूजाकाल मे आदि शंकराचार्य की मूर्ति है जो रूद्राक्ष से सुशोभित है। पूजाकाल में आदि शकराचार्य रचित गंगाष्टक स्तोत्र का पाठ आज भी होता है। यहाँ के पुजारी इसी इलाके के हैं। गंगा-मंदिर के निकट ही भागीरथी के किनारे भगीरथ का एक छोटा मंदिर है। इस स्थान को भागीरथी शिला भी कहते है। मान्यता है कि यहीं बैठकर भगीरथ ने तप किया था। गणेश मंदिर, हनुमान मंदिर और लक्ष्मी नारायण मदिर भी देखने लायक है। यहाँ पहाडी नदी भागीरथी इतने वेग से पत्थरो पर गिरती हैं कि शिलाओं में अनेक सुन्दर आकृतियाँ उभर आई हैं जिन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो किसी कुशल शिल्पी ने उन्हे तराश कर यह सुघडता प्रदान की हो।

यहाँ भी शंकर भगवान् को पति के रूप में पाने के लिए गौरी पार्वती की तपस्या की कथा प्रचलित है। यहाँ भी एक तप्त कुंड है।

पुराणों के अनुसार गंगा हिमवान और मैना की पुत्री तथा उमा की बहन मानी जाती है। वे गागेय की माता भी हैं। महाभारत के अनुसार गंगा शांतनु महाराज से शादी कर भीष्म की माता बनी।

गगा के किनारे-किनारे लगभग एक किलो मीटर चलने पर "पटांगना" नामक जगह मिलती है। कहा जाता है कि पांडवों ने स्वर्गारोहण करते समय यहाँ यज्ञ किया था। सहस्र धारा मे गगा का जलप्रपात मनोहर है।

गंगा हमारी भावात्मक एकता की प्रतीक है। हम चाहे दक्षिण में हों चाहे उत्तर में, नहाते समय इस श्लोक को हर कोई दुहराता है :

"जम्बू द्वीपे, भरत खडे,
उत्तरा खडे, पवित्र गंगा तीरे।"

"गगे च यमुने चैव गोदावरी, सरस्वती नर्मदे सिंधु,
कावेरी, जलेस्मि न सन्निधिं कुरु ॥"

लोग सुदूर दक्षिण स्थित रामेश्वरम से माटी लाकर गंगा में विसर्जित करते है और यहाँ से गगा जल ले जाकर रामेश्वरम के शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। पुराने जमाने से ही हमारे पूर्वजों ने इन प्रथाओं के द्वारा यह सिद्ध कर दिया था कि भारत अखंड है।

बारह बजे तक अन्य कई दर्शनीय स्थानो को देखकर हम अपने कमरे की ओर आ ही रहे थे कि काले-काले बादल छा गए। जोर से पानी बरसने लगा और लगातार शाम तक पानी बरसता रहा। अत: हम बाहर न जा पाए।

गगोत्री के सभी दर्शनीय स्थानो को यदि हम देखना ही चाहे तो तीन-चार दिन यहाँ रुकना पड जाएगा। यह हमारे लिए सभव न था। अत: हमने गोमुख की ओर जाने की योजना बना ली।

दूसरे दिन सवेरे गोमुख की ओर रवाना हुए। उन्नीस किलोमीटर लंबा मार्ग अत्यत कष्टकर एव खतरनाक है। हमने अपने साथ एक मार्गदर्शक लिया। गंगोत्री से गोमुख जाने की पगडंडी पहाडी घाटियो से होकर जाती है। रास्ते में अनेक छोटे-छोटे झरने मिलते है। कहीं उन पर पुल बने है तो कहीं पानी में उतरकर उन्हे पार करना पड़ता है। रास्ते भर रग-बिरगे पहाडी फूलों एवं वनस्पतियों के दर्शन होते है। इनकी महक में एक विचित्र प्रकार की मादकता पाई जाती है।

गंगोत्री से लगभग दस किलोमीटर चलने पर हम चीड़वासा पहुँचे, जहाँ चीड़ वृक्षो का सुरम्य वन है। यहाँ सरकार द्वारा निर्मित विश्राम गृह है। यात्री यहाँ खाना पकाकर, रातभर विश्राम कर आगे बढ़ते हैं। इसके आगे तीन किलोमीटर चलने पर भोजवासा नामक जगह मिलती है। यहाँ भुर्ज वृक्षो की अधिकता है। यहाँ एक साधु मिले। वे यात्रियो को ठहरने के लिए स्थान एवं खाने के लिए खिचड़ी प्रदान करते है। भुर्ज वृक्षो की ऐतिहासिक प्रसिद्धि सब जानते ही है। इसकी हरी लकड़ी भी खूब जलती है।

प्राचीन काल में ग्रथों का तथा अन्य प्रकार का लेखन कार्य इन भोज पत्रों पर ही होता था। हम भागीरथी के किनारे-किनारे जा रहे थे। कहीं-कहीं तो हमे स्वय मार्ग बनाकर चलना पड़ता था। मार्ग दर्शन के लिए रास्ते भर पत्थर गाड़े गए है। अब हम बर्फ पर चलने लगे थे। हम लोहे की पैनी नोक वाली लाठी के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। मीलो बर्फ—दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे, नीचे-ऊपर सब दिशाओं में सब ओर बर्फ ही बर्फ। हमें ऐसा अनुभव हुआ कि हम बर्फ के समुद्र में खो गए हैं। कितना सुहावना पर साथ ही कितना भयावह! कभी-कभी घुटनो तक पैर बर्फ मे धँस जाता था। तब गाइड हमारी सहायता कर हमें ऊपर उठा लेता था। बीच-बीच में हलकी वर्षा हुई। यदि भारी हिमपात होता तो हमारे प्राणो के लिए संकट उत्पन्न हो जाता। रास्ते मे बर्फ की चट्टानें गिर रही थीं। हमें सावधानी से देख-देख कर कदम बढ़ाना पड़ता।

यहाँ की यात्रा केवल स्वस्थ व्यक्ति ही कर सकते है। यहाँ एक चुनौती है। सारे शरीर मे गरम कपड़े पहनने पर भी ठड हड्डियो को कंपा रही थी।

अपने साथ हम दो दिन के लिए ब्रेड और जैम ले गए थे। यहाँ जहरीले मच्छर और मक्खियाँ बड़ी संख्या में पाई जाती हैं जिनके काटने से सूजन आ जाती है। कभी-कभी बुखार भी आ जाता है। उनसे बचने के लिए मच्छरदानी, टिंचर-आयोडीन तथा अन्य दवाइयाँ साथ ले गए थे।

सामान्यतः मई महीने में गोमुख की यात्रा पर लोग नहीं जाते। स्त्रियों को साथ लेकर जाना तो और भी खतरनाक है। गंगोत्री में ही कई लोगों ने कहा था कि यदि गोमुख ही जाना चाहते हैं तो औरतों को यहाँ छोड़कर आप मर्द लोग चले जाइए। पर उनको यहाँ छोड़कर जाते कैसे ? गाइड ने भी यही कहा था कि औरतों का चलना बड़ा मुश्किल है। पर औरतों ने हठ किया कि हम औरतें मर्दों से कुछ कम नहीं। जब यात्रा के लिए साथ आए हैं तब इस तरह बीच में छोड़कर जाना ठीक नहीं है। उन्हें छोड़कर चलना हमें भी खला था। अतः सब चल पड़े थे। किन्तु बीच रास्ते में उनको अनुभव हुआ कि यदि गंगोत्री में ही रुक जाते तो अच्छा होता।

लगभग तीन बजे हम ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से एक आश्रम दिखाई देने लगा। हमें आते देख वहाँ के स्वामी जी बाहर निकल आए। वे बोले, "आप लोगों को इस महीने में स्त्रियों के साथ यहाँ नहीं आना चाहिए था। कभी-कभी पहाड़ के पहाड़ नीचे सरक पड़ते हैं। मार्ग कई दिनों के लिए बंद हो जाता है। यदि जोरों से हिमपात हुआ तो यात्री उसमें फँस जाते हैं।"

वे हमें अंदर ले गए। कोयला जलाकर तापने के लिए दिया। गरम-गरम चाय पिलाई। आधे घंटे में खिचड़ी भी तैयार हो गई। पूछने पर मालूम हुआ कि वे साल भर यहीं रहते हैं। साल भर की खाद्य सामग्री अगले महीने तक उनको मिल जाएगी। दो संन्यासी गंगोत्री के बंद होते ही यहाँ से नीचे चले गए हैं। वे अब पंद्रह दिनों में लौट आएँगे। स्वामी जी के व्यवहार में स्नेह था, वात्सल्य था और वाणी में अपार प्रेम। हमें ऐसा अनुभव होने लगा कि मानो स्वयं गंगा माई स्वामी जी का रूप धारण कर हमारे ऊपर अनुग्रह कर रही है। रात हमने वहीं काटी।

यहाँ से गोमुख लगभग 5 किलोमीटर दूर है। सवेरे हम गोमुख की ओर रवाना हुए। बीच रास्ते में हमें न तो ठहरने के लिए कोई स्थान मिला और न खाने के लिए कुछ सामग्री। पूरा रास्ता ऊबड़खाबड़ है। गोमुख में भी ठहरने के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। अतः यात्रियों को दो-तीन घंटे ठहर कर तुरंत चीड़वाला या भोजवाला वापस आ जाना पड़ता है।

गंगोत्री से गोमुख तक के रास्ते में भागीरथी में कई नदियों एवं झरनों के संगम होते हैं। गंगोत्री एक विशाल हिमनद है, जिसके भीतर से भागीरथी की अंतर्धारा गोमुख में प्रथम बार प्रकट होती है। गोमुख स्थल गाय के मुख

जैसा दीख पडता है । यहाँ तक कि गाय के नथुने की भाँति मध्य में काला विवर और उसके चारो ओर श्वेत नासिका की आकृति स्पष्ट प्रतीत होती है । इसीलिए इसका नाम गोमुख पड़ गया है । गगा के स्रोत के ऊपर चलने के लिए बाईं ओर से एक रास्ता है। इस मार्ग पर चलने पर तपोवन और नंदनवन के मैदानों को देखा जा सकता है । कहा जाता है कि इन जगहों पर साधु-सन्यासी तपस्या करते है। यहाँ जाने के लिए सरकार से अनुमति प्राप्त कर लेनी चाहिए । यहाँ अचानक हिम चट्टाने खिसकती रहती है और पानी मे भी हिम चट्टानों के तैरते हुए सुन्दर दृश्य देखने में आते है।

गोमुख से पहाड-पहाड़ होते हुए पैदल बदरी नारायण जाने के लिए लग-भग 56 किलोमीटर का रास्ता तय करना पड़ता है । यह रास्ता इतना कठिन है कि मृत्युभय रहित साधु-संत या भारत की सीमा रक्षा करने वाले कर्मठ जवान ही इस रास्ते से जाते है। लोगो से पता चला कि स्वामी तपोवन महाराज इस रास्ते से कई बार बदरीनाथ हो आए है । उनके शिष्य स्वामी सुन्दरानद जी गंगोत्री में स्वामी तपोवन महाराज की कुटी में निवास करते है। उनसे उस रास्ते के सबध में कई सूचनाएँ प्राप्त हुईं। ये भी पहाड़ पर चढ़ने की कला मे प्रवीण हैं । कई जगहो के फोटो उन्होने दिखाए। उन्होने कहा कि वे आठ बार इस रास्ते से बदरीनाथ हो आए हैं । वे गगोत्री, रक्तवर्णा, चतुरंगी, नंदनवन, वासुकि, कालिन्दी घाट, केशवप्रयाग, माना गाँव होते हुए बदरीनाथ पहुँचे थे । इस मार्ग का नाम है देव मार्ग । उन्होने यह भी बताया था कि इस मार्ग पर चलने के लिए सशक्त और सुदृढ शरीर की आवश्यकता है । आवश्यक चीजे—गरम कपड़े, तंबू, पकाकर खाने की आवश्यक वस्तुएँ स्वय अपने कंधो पर उठा कर ले जाना पडता है । प्राचीन काल में हमारे बुजुर्ग इसी रास्ते से बदरी, केदार और यमुनोत्री जाया करते थे । पर आजकल लाखों में कोई एक जाता है।

गोमुख गुफा की भी एक बड़ी मार्मिक और प्रेरक कहानी है । कहा जाता है कि पर्वत पर हिमवत अपनी रूपवती रानी मैना और छोटी सी प्यारी कन्या गंगा के साथ रहते थे। अपने पिता के राज्य में घूमते हुए एक दिन गगा ने बर्फ़ की एक ऐसी गुफा देखी जैसी उसने पहले कभी न देखी थी। उसकी चमकती हुई दीवालों मे लबी-लबी हिम वर्तिकाएँ लटकी थी। बर्फ़ के खंभों ने उसकी छत को थाम रखा था । तभी सूर्य की एक किरण गुफा की दीवालों पर चमक उठी और गगा ने देखा कि बर्फ पर एक इंद्रधनुष बन गया था । यह दृश्य उसे इतना अच्छा लगा कि उसने मन ही मन कहा कि यही मेरा राज पाट है । अब मैं यही रहूँगी । राजा और रानी ने कई दिनों तक अपनी कन्या की प्रतीक्षा की, फिर उसे ढूंढ़ते वे उसी गुफा के पास

आए। जब उन्होंने राजकुमारी को अकेली बड़ी प्रसन्न मुद्रा मे देखा तो उसकी प्रसन्नता के लिए उन्होंने भी अपना घर वही बना लिया। समय-समय पर राजा हिमवत वहाँ से नीचे भारत के मैदानों मे जाया करते थे और कहा करते थे कि पानी के बिना धरती कष्ट में है, फसलें सूख रही है, पशु-पक्षी मर रहे है, और नर-नारी प्यासे ही दिन काट रहे है। लेकिन शिव अभी सो रहे हैं। जैसे कि उन्हे मनुष्य की कोई चिंता ही नही। उन्हें बचाने के लिए एक रास्ता है। यदि तुषार के समान पवित्र और हिम जैसी श्वेत कोई कन्या अपना घर छोड़कर वहाँ उन तपते मैदानो मे सदा सर्वदा के लिए जा बसे तो उसके इस स्वेच्छया जीवन-दान से विनष्ट होते हुए लोगों को जीवन प्राप्त हो जाएगा और उसका नाम भारत के सभी लोगो मे श्रद्धा और स्नेह से लिया जाएगा।

गंगा समझ गई कि महान् त्याग करने के लिए उसके पिता ने उसे आमंत्रित किया है। वह जाने के लिए तैयार हुई। बस उस गुफा के द्वार तक पहुँच गई। तभी एक चमत्कार हो गया। सुनहले चमकीले बालों और गोरे अंगोवाली वह छोटी-सी सुन्दर कन्या गायब हो गई और उसके स्थान पर निर्मल नीर वाला एक स्रोत प्रगट हो गया। झाग भरा पानी सुनहली चमकीली बालू पर नाच-सा उठा और एक ओर को भाग चला। भागती हुई धारा कहती गई, "मैं गंगा हूँ गगा। और अब मै धरती की प्यास बुझाने मरते लोगो के प्राण बचाने के लिए मैदानो मे जाती हूँ।" और जिधर भी गंगा गई उसके स्वागत मे फूल खिल उठे। बड़े-बडे वृक्षो ने उसका दरस-परस किया। बच्चे इसके तट पर खेलने लगे। पुरुष उस वेगवती धारा मे झूमने लगे, स्त्रियाँ शांत जल मे स्नान करने लगी। कुँआरी कन्या गंगा माता बन गई—जीवन की सरिता।

यही कारण है कि बहती हुई गंगा यही सोच रही है, "परोपकार के लिए आत्मबलिदान करना कर्त्तव्य है। दूसरों के लिए खुशहाली लुटाना ही सच्चा आनद है।" कृतज्ञता रूप मे इस पवित्र नदी से दूर प्राण तजता हुआ हिन्दू प्रार्थना करता है कि उसकी भस्मी गंगा की अजस्र धारा मे बहा दी जाए ताकि मृत्यु का आलिंगन करते हुए भी वह पुन: जीवन के मूल तत्व से जुड़ सके।

गोमुख का वातावरण इतना अलौकिक और अध्यात्मपूरित है कि यात्री का मन उसी मे रम जाता है और उस स्थान को छोड़कर आने की इच्छा नही होती। मुझे तो विवश होकर वापस आना पड़ा।

हम यहाँ से तपोवन जाना चाहते थे, जो तेरह किलोमीटर दूरी पर था पर स्वामी जी ने वहाँ जाने से रोक दिया और कहा, "मार्ग अत्यत कठिन है।

छह महीने से बर्फ मे डूबकर सारे पेड़ पौधे नष्ट हो गए है। वहाँ कोई संन्यासी नही है। अभी-अभी गगोत्री का मार्ग खुला है, वहाँ तक साधु-संतो के पहुँचने मे और पद्रह-बीस दिन लग जाएँगे। वहाँ जाने के लिए अक्तूबर का महीना अच्छा रहता है। अत: आप व्यर्थ वहाँ न जाइए।"

स्वामीजी के इनकार करने पर भी उनके चरणों में कुछ भेंट रखकर हम वापस गंगोत्री की ओर लौट पड़े। लौटते समय हमने देखा कि बर्फ की एक बहुत बड़ी चट्टान पहाड से लुढकते हुए सैकड़ो फुट नीचे भागी और भागीरथी मे जा गिरी। लुढकते समय उसकी आवाज मेघो के घोर गर्जन जैसी लगी। हम सब बहुत घबरा गए। शाम तक हम गगोत्री पहुँच गए। भैरो घाटी की उतराई-चढ़ाई पार कर रहे थे कि जह्नु महर्षि की कहानी याद आई।

राजा पुरुखा के वंश मे उत्पन्न राजा सुहोत्र के पुत्र थे जह्नु महर्षि। जब भगीरथ गंगा को मार्ग बताते हुए इधर से जा रहे थे तब इसी भैरो घाटी में जह्नु महर्षि तप कर रहे थे। उनकी संपूर्ण यज्ञशाला गंगा में डूब गई थी। उसे देख जह्नु महर्षि की आँखें क्रोध से लाल हो उठी। यज्ञ-पुरुष को परम समाधि द्वारा अपने मे स्थापित कर उन्होने संपूर्ण गगा जी को पी लिया। बाद में भगीरथ और देवर्षियों ने प्रार्थना कर इन्हे प्रसन्न किया और गंगा जी को इनकी पुत्री के रूप में प्राप्त कर लिया। इसीलिए गगा का एक नाम जाह्नवी पडा। 21 मई की रात हमने लका में काटी। फिर 22 मई को धराली पहुँचे। वहाँ सामान घर से अपना सब सामान छुड़ाकर बस मे उत्तरकाशी की ओर चल पड़े। दो बजे हम उत्तरकाशी पहुँच गए। बिड़ला धर्मशाला में कमरा लिया।

उत्तरकाशी का विस्तृत वर्णन स्कद पुराण के केदार खड मे मिलता है। यह तीर्थ स्थान भागीरथी के दाहिने तट पर वारुणावत पर्वत की गोदी में विद्यमान है। प्राचीन ग्रथों में उत्तरकाशी का वर्णन सौम्यवाराणसी नाम से भी मिलता है। बताया जाता है कि यहाँ वरुणा और असि नदियाँ भागीरथी में मिलती थी।

इस स्थान के साथ पौराणिक काल के अनेक ऋषियों के नाम जुड़े है। यहाँ महर्षि स्कद ने भी तपस्या की थी। परशुराम भी यहाँ रहे। उनके नाम पर यहाँ परशुराम मंदिर बना हुआ है। यहाँ किसी समय अनेक महात्मा, साधु और संत साधना करते रहे। इसका सबध महाभारतकालीन पाडवों से जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि दुर्योधन ने पांडवों को लाक्षागृह में भस्मीभूत करने का षड्यंत्र यहीं रचा था।

उत्तरकाशी समुद्र तल से 1,158 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। प्रसिद्ध

चीनी यात्री ह्वेनसाङ् ने भी इस स्थान की यात्रा की थी। उसने इसका नाम ब्रह्मपुत्र दिया है। उसने लिखा है कि इस स्थान का शासन स्त्री चलाती थी। उसका पति सेना-संगठन या कृषि कार्य करता था।

1857 की क्रांति के वीर योद्धा नाना फड़नवीस भी एकांतवास के रूप में यहाँ रहे थे। जिस मकान में वे रहे थे उसे अब राज्य सरकार ने सुरक्षित कर लिया है।

स्वामी ब्रह्मस्वरूपानंद जी के प्रयत्न से यहाँ एक संस्कृत विद्यालय भी चलता है। छात्रावास की व्यवस्था है।

यहाँ के मंदिरों का स्वरूप मैदानी भाग के मंदिरों से भिन्न है। मैदानों की तरह पर्वतों में ऊँचे-ऊँचे मंदिर नहीं बनाए जाते। पर्वतों की जलवायु के अनुरूप उनका निर्माण किया जाता है। यह मंदिरों की नगरी है। कहावत है कि उत्तरकाशी में जितने कंकर हैं उतने ही शिव शंकर हैं।

प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के दिन यहाँ बड़ा मेला लगता है। इस मेले में पर्वतीय ग्रामों से हजारों नर-नारी रंग-बिरंगी पोशाक पहनकर आते हैं। यह मेला लगभग एक सप्ताह चलता है। इस मेले में अनेक स्थानों से ग्राम देवता के डोले सजाकर लाए जाते हैं। पर्वत की ऊँची-ऊँची चोटियों पर बसे गाँवों के ये श्रद्धालु व्यक्ति गाते-नाचते अपने डोलों के साथ यहाँ आते हैं और भागीरथी के तट पर उनकी पूजा करते हैं। इनके अपने वाद्ययंत्र होते हैं। जिनमें ढोल, रनसिंगा और तुरई मुख्य हैं। इस मेले में पर्वतों के लोकगीतकार और नृत्यकार भी आते हैं। रात को देर तक नृत्य और संगीत का प्रदर्शन चलता रहता है।

कहा जाता है कि उत्तरकाशी में ब्रह्मा, विष्णु और महेश सदा निवास करते हैं। देव-दानव युद्ध की समाप्ति के बाद उन्हें यहीं शांति मिली। आस्तिकों का विश्वास है कि यहाँ स्नान एवं दान करने से मुक्ति और भक्ति अनायास मिलती है। यहाँ के मंदिरों में विश्वनाथ का मंदिर सबसे प्रसिद्ध है। इस मंदिर का शिवलिंग मरकत मणि की आभा से सुशोभित है। कहा जाता है कि किरातार्जुनीय युद्ध यहीं हुआ था।

भरत मंदिर, शत्रुघ्न मंदिर, कालिमंदिर और एकादश रुद्र मंदिर भी देखने लायक हैं। ग्यारह शिवलिंग की शोभा देखते ही बनती है। यात्री भागीरथी के किनारे घंटों बैठकर शाम बिता सकते हैं।

यहाँ से थोड़ी दूर पर नेहरू पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान नामक संस्था है। इसमें पर्वतारोहण की शिक्षा दी जाती है। यहाँ देश-विदेश के लोग प्रशिक्षण प्राप्त करने आते हैं।

23 मई के सवेरे हम ऋषिकेश की ओर रवाना हुए। इस तरह हम उत्तरा-

खंड की यात्रा समाप्त कर उसी दिन ठीक साढ़े ग्यारह बजे ऋषिकेश के आश्रम आ पहुँचे। बस में ही मुझे बुखार आ गया था। आश्रम के कमरे में जाकर लेटा तो उठ न सका। तीन दिन तक 104 डिग्री बुखार रहा। दो दिन बाद मेरी पत्नी भी बुखार से पीड़ित हो गई। इस तरह इस बुखार के कारण हमें छह दिन तक ऋषिकेश में ठहरना पड़ा। मेरे बुजुर्ग मित्र एवं उनकी पत्नी ने तन-मन-धन से हमारी सेवा की थी। उस सेवा को हम जीवन भर भूल न सकेंगे।

उत्तराखंड की यात्रा समाप्त कर हम 30 मई को दिल्ली पहुँचे और वहाँ से मैसूर वापस आ गए।

उपसंहार

ऋग्वेदीय ब्राह्मण ग्रंथो में उल्लेखनीय ब्राह्मण ग्रथ है ऐतरेय। इंद्र ने उसम रोहित को "चरैवेति, चरैवेति" की शिक्षा देकर यात्रा को जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। जीवन स्वयं ही एक लंबी यात्रा है। इस जीवन यात्रा को सफल बनाने के लिए कई छोटी-छोटी यात्राएँ करना अत्यत आवश्यक है। यात्रा द्वारा शिक्षा मिलती है। अनुभव-गम्य शिक्षा से जीवन मे सफलता मिलती है। पुराने जमाने से ही हिंदू संस्कृति ने यात्रा पर जोर दिया है। कैलास से लेकर कन्या-कुमारी तक सैकड़ों-हजारों यात्रा स्थल भारत मे हैं। भारत एक विशाल देश है, उसकी विविधता के दर्शन तभी साध्य है जब हम खुद यात्रा द्वारा उसके दर्शन कर सकें।

यात्रा में हम कई लोगों के सपर्क में आते है। जब जीवन का सूक्ष्म दर्शन प्रत्यक्ष हो जाता है तब भाषा के बधन से मुक्त हो, भाव बधन मे जकड़ जाते हैं।

भाव-जगत मे हम अनुभव करने लगते हैं कि हम सब एक हैं, एकमात्र मानव जाति के हैं। यात्रा में यात्री को परिस्थिति के अनुकूल अपने को बदलने की शक्ति मिलती है। कष्ट के समय मिलकर सामना करने की शिक्षा मिलती है। कठिन से कठिन समस्याओं को हल करने का सामर्थ्य मिल जाता है। साहसपूर्ण यात्रा मे मोह और ममता का आवरण खुल जाता है। सब अपने बन जाते है। प्रकृति के सौन्दर्य मे अपने को मूल स्वार्थ की संकुचित सीमाओं से ऊपर उठकर अनंत में तादात्म्य स्थापित कर, एकाकार होने की शिक्षा मिलती है।

यात्रा से भावात्मक एकता का बीज अंकुरित होकर फूलता और फलता है। उसका फल अत्यंत मधुर होता है। जीवन का कटु सत्य जब हमारे सामने आ उपस्थित होता है, तब यात्रा के अनुभव से हम उसका सामना करने मे समर्थ हो जाते है। सहिष्णुता, परोपकार, बुद्धि, सहकारिता एवं सहृदयता अपने आप जागृत होती है। खान-पान, रहन-सहन एवं आचार-विचार में आमूल परिवर्तन लाने की शक्ति मिल जाती है। हाँ, खान-पान की चीजों में

उत्तर और दक्षिण का बड़ा अंतर है। यहाँ सब चीजें सरसों के तेल से बनती है, जबकि दक्षिण में नारियल और मूंगफली के तेल से। अतः आदत न होने से सरसों के तेल से बनी चीजें खाने मे हमें कुछ असुविधा होती है। दक्षिण और उत्तर के मसालों मे भी काफी अतर है। दाल में इमली मिलाने का रिवाज भी इधर नही है। चावल हर कही मिल जाता है। यह अच्छा रहता है कि हम यात्रा मे अपनी रुचि के कुछ खाद्य पदार्थ अपने साथ लेते जाएँ। इतना अतर होते हुए भी इस यात्रा में मैंने यह अनुभव किया कि चाहे उत्तर हो या दक्षिण, भारत भर में एक समानता की लहर व्याप्त है, विभिन्नताओं मे एकता के दर्शन होते है। दुख के समय अपना दुख और सुख के समय अपना सुख बाँटने के लिए सब तत्पर रहते हैं। वहाँ दक्षिण और उत्तर का भेद सर्वथा मिट जाता है।

मैंने अनुभव किया है :

नाहं वसामि दक्षिणे, नाह वसामि उत्तरे।
नाहं वसामि पश्चिमे, नाह वसामि पूर्वे।
वसामि सकले राष्ट्रे, राष्ट्रं मम परायणम्।

20. In the later half of the 18th century the British entrenched themselves even more firmly in India because

    A. they were cunning.

    B. the Indians helped the British to dominate them.

    C. the Indians were more traditional.

    D. The Indians did not improve the methods of warfare.

21. The most important and immediate factor which unnerved Britain into granting independence to India was the

    A. trial of I.N.A. prisioners.

    B. muting in the Indian navy.

    C. Quit India movement.

    D. strike in the Indian Air Force.

22. Inspite of many obstacles, the trade with India and Europe continued because

    A. it was highly profitable

    B. there was great demand of eastern spices in Europe.

    C. fabulous wealth of India attracted Europeans.

    D. there was desire of colonial power in the East.

23. The navigational discoveries resulted mainly in

    A. effecting the history of the world.

    B. the enormous increase in the world trade.

    C. geographical advancement.

    D. establishment of colonies.

24. Portugal established her trade centres on Malabar sea coast mainly for

A. securing concession from Mughal Empire

B. combining the use of force with trade

C. taking advantage of mutual rivalries of the native princes.

D. maintaining her position against land power of India and the Arbas.

25. Portugal was incapable of maintaining for long its trade monopoly on the east mainly because

A. its merchants enjoyed less power and prestige.

B. it legged behind in the development of shipping art.

C. it followed a policy of religious intolerance.

D. it had become a Spanish dependency in 1580.

26. The East India Company had a dream of establishing Political Power in India mainly so that

A. Indians could be forced to sell cheap and buy on higher rates.

B. the rival European traders be kept out.

C. they can carry on trade independent of the native powers.

D. the foundation could be laid for English dominion in India.

27. The Company's servant were paid very low salaries. Their real income, for which they were so keen to come to India, mainly was

A. their own private trade within the country.

B. trade between India and Europe for the company.

C. a payment of 10 pounds (100 rupees), a year.

D. purchase of land in India.

28. In south India for nearly 20 years, the French and the English were to wage a bitter war mainly for

A. their control over the trade.

B. establishment of their dominion in the south.

C. controlling over the whole of India.

D. capturing the south west coast of India.

29. The Nawab of Carnatic with his enormous armies clashed with a small French force but was defeated mainly because of

A. better equipment and organisation in French forces.

B. the Indian pike was of no match with the western musket and bayonet

C. the large but [illegible] plined [illegible]

D. the better disciplined and trained armies of the French.

30. Anglo-French conflict in India lasted for nearly 20 years and led to the establishment of British power in India mainly because

A. the English company was wealthier of the two

B. it had superiority in trade.

C. it possessed a superior naval force.

D. its possessions in India had been held longer and were better fortified.

31. During the struggle with the French and Indian allies, the English learnt a few important and valuable lessons. One of them was that

A. there was absence of nationalism in the country.

B. there were mutual quarrels among the native rulers.

C. the western trained army could defeat the old styled Indian army.

D. the hired Indian soldiers trained by Europeans. serves as good as the European solders.

32. The decline of the great Mughal empire reveals some of the defects and weakness of Indian Medieval period mainly because

A. the unity of the Empire had been shaken during the reign of Aurangzeb.

B. wars of succession had weakened the empire.

C. it could no longer satisfy the minimum needs of its population,

D. there was growing selfishness in the nobility.

33. Mughal Emperor Bahadur Shah I tried to canciliate the rebellious Sikhs by

A. making peace with their leader Guru Gobind Singh.

B. giving a Mansab to the Guru.

C. taking strong measures against the sikhs.

D. trying to maintain peace in the empire.

34. Bahadur Shah I followed a policy of compromise and conciliation with the Rajputs but was half hearted towards the Maratha chief mainly because

A. he did not allow the Marathas to collect CHAUTH.

B. did not recognise Shahu as rightful Maratha chief.

C. peace and order was disturbed by Marathas in the Deccan.

D. the Marathas were interested in consolidating their regional powers.

35. Zulfikar Khan, the Vazir of the Mughal Empire, tried to save the empire once again mainly by

A. establishing friendly relation with Rajput princes.

B. rapidly reversing the policies of Aurangzeb.

C. establishing conciliation with the Marathas.

D. providing the mansab and titles to the nobility.

36. The Saiyid Brothers made vigorous efforts to save the empire from administrative disintegration but failed in the task mainly becasue

A. they were facing constant political rivalry with the Muslim nobility.

B. lawlessness and disorder was rampant among the officials.

C. they were charged of the murder of the emperor.

D. it was declared that the Saiyid brothers were following anti-Islamic policies.

37. His departure was symbolic of the flight of loyalty and virtues from the empire .This shows mainly

A. the downfall of the Mughal Empire had set in.

B. whole empire fell under the evil influence of corruption.

C. ambitious nobles began to carve out semi-independent states.

D. the chaos and anarchy was every where.

38. Nadir Shah's invasion of Delhi did not meet any opposition mainly because of

A. faction-ridden nobles refused to unite against the enemy.

B. he knew the hidden weaknesses of the Mughal Empire.

C. the north-west defence-line had been neglected years before.

D. the emperor had been imprisoned by the invador.

39. Alliance with Rajput princes was one of the main pillars of the Mughal Empire but wherever it was broken it mainly resulted in

A. tumult in western area of the empire.

B. raising the banner of rebellion and independence.

C. shelter by the Rajputs to fickle-minded princes.

D. withdrawl of faith to the Mughal empire.

40. The Jat revolt took place in 1669 and then again in 1683 under the leadership of Jat zemindars around Mathura against the Mughal Empire.

The main cause of revolt was

A) the religious interference of the empire in Jat peasanty.

B) oppression of the Jat peasants by Mughal officials.

C) carving out a separate principality around Delhi by the Jats.

D) emergence of Jat as a force to change socio-economic structure.

41. In the 18th Century, the Rajputs Sikhs, Jats and Marathas neither behaved as champions of Hindus nor helped in religious solidarity mainly because

A. they developed more political rather than religious ambitions.

B. the empire did not try to form a homogenous society.

C. the religion was used as a weapon to achieve the goals.

D. they were secular in their religious feelings.

42. Which one of the following would you consider as the most important for the decline of the Mughal Empire?

A. Lack of steps to satisfy the minimum requirements of the its population.

B. The absence of the feeling of nationality.

C. The emergence of British power in India.

D. The wars of succession to the throne.

43. The weakness of Aurangzeb's policies and the evils of wars of succession still could have been overcome if

A. energetic and farsighted rulers had ascended the throne.

B. sense of political unity could be created.

C. homogeneous society could be made.

D. some native powers would have risen to claim the heritage of the Mughals.

44. Which of the following events had the most harmful impact on the Mughal Empire in India?

A. attack by Nadir Shah in 1738-79.

B. invasion of Ahmad Shah Abdali in 1748.

C. battle of Buxar in 1764.

D. battle with East India Company in Delhi 1857.

45. Though Duplex's plan had succeeded beyond his dream but he was recalled by his government from India mainly because of

A. heavy expenses of war in India by the French Company.

B. fear of loosing its colonies in America by the French Govt.

C. the demand for his recall under the agreement in 1754.

D. the French official's quarrel with him.

46. As a result of the establishment of the British dominion and decline of the Mughal empire a sense of unity developed and became the basis of national movement later on. It shows mainly that

A. the revolt of 1857 paved the way for development of national movement.

B. political awareness against foreign powers began to develop.

C. every Indian high and low, seemed to be a soldier for freedom.

D. a sense of national integration was emerging in the natives.

47. The British Indian army could play a vital role to safeguard the British supremacy mainly because

A. native soldiers were very brave.

B. native soldiers were loyal to the British.

C. native soldiers were paid handsomely.

D. the sense of nationalism was not there among the Indians.

48. Which one of the following would not be possible unless Lord Cornwallis would have established a regular police force in India?

A. abolition of the feudal system in India.

B. suppression of the National movement in India.

C. suppression of the unhealthy atmosphere in the country.

D. suppression of the liberties of the masses.

49. Which of the following measures was not taken into consideration by Lord Cornwallis to improve the civil service in India

A. Root out corruption.

B. Safeguard the local trade and industries.

C. Better payment to the employees

D. Provide equal status to the Indian officers.

50. Which of the following was the most responsible for the legal inequality in India during the 19th century?

A. Justice became quite expensive.

B. Courts were often situated in distant towns.

C. Law suits dragged on for years.

D. There was corruption in the field of judiciary.

51. Careful study of the social and cultural policy of the British-Indian authorities help us to understand mainly that

A. static outlooks can effectively be changed by law.

B. superstitious native people were in chaos,

C. educated native reformers were inspired.

D. The British authorities accepted the doctrine of Humanism.

52. Macaulay's Minutes on education has been called a milestone of modern education mainly because it

A. introduced English as the medium of instruction.

B. promoted scientific and national outlook.

C. provided employment to the educated Indians.

D. created political consciousness among the educated Indians.

53. Unless William Bentinck would have taken humanitarian measures at the right time it would not have been possible to

A. abolish of dowry system.

B. stop female infanticide

C. ban human sacrifices.

D. work for social upliftment.

54. The revolt of 1857 started with the mutiny of company's sepoys. This mainly proved that

A. practically no agency can suppress individual as well as social liberty.

B. loyalty can be expected only from the democratic point of view.

C. the sense of secularism should be honoured.

D. orthodox attitude is undesirable.

55. Careful study of the Revolt of 1857 helps us to understand that sense of revolution generates mainly from

A. tyrannical administration.

B. inequality of status.

C. exploitation.

D. economic imbalances.

56. Careful study of the Revolt of 1857 help us to understand that unhealthy atmosphere comes into existence mainly due to

A. corruption.

B. inefficient administration.

C. lack of proper education.

D. neglect of the study of history.

57. Participation of Rani Lakshmibai in the Revolt of 1857 proves that

A. she was hankering after power.

B. she wanted a higher social status.

C. she was a devotee to her motherland.

D. she had political consciousness.

58. The modern educated Indians did not support the revolt of 1857 mainly becaus they considered it

A. static attitude.

B. dynamical attitude.

C. futile attempt.

D. politically biased.

59. After careful study of the National Movement from 1858-1905 it has been found that press and literature can play a vital role in accelerating the democratic movement mainly by

A. creating consciousness among the masses.

B. making the people tolerant.

C. creating chaos among the people.

D. increasing friendly relationship with the neighbouring countries.

60. The British authorities changed their attitude towards the development of Indian economy in the year 1813 only because they wanted to

A. raise the standard of living of the Indians.

C,D B. organise a modern system of administration.

61. Vivekananda can be described as the true disciple of Ramakrishna primarily because he believed that

A. Serving God is equivalent to serving the poor and the needy.

*C. develop trade and industry for their own interest.

*D. establish a big market for their outputs.

B. all religious are essentially one being different paths to realize God.

C. to be rid of superstitious Indians should imbibe free thinking, liberty and equality.

D. India was stagnating because we were out of touch with the world.

62. The Arya Samaj is considered more militant than either the Brahmo Samaj or the Prathana Samaj mainly because Swamy Dayananda

A. attacked Hindu orthodoxy by actively supporting spread of education and women's uplift.

B. insisted on Shuddhi thereby disregarding Secularism.

C. was concerned with the problems of the real world as against traditional beliefs.

D. considered the Vedas as infallible while directing that each one be guided by reason while studying them.

63. Vidyasagar can be regarded as the true successor of Ram Mohan Roy chiefly because

A. he studied sacred scriptures to prove that they did not sanction social evils of the day.

B. lasting social reforms would be achieved only through women's education.

C. his deep humanism made him undertake uplift of Indian women.

D. he introduced study of western thought in Sanskrit colleges.

64. The Brahmo Samaj and the Prarthana Samaj had fundamentally one and the same end in view namely

A. insisting on the worship of one god alone.

B, presenting social equality to loosen the hold of caste.

C. repudiating the infallibility of the Vedas.

D. applying rationalism to reform Hinduism.

65. Which is the most significant function performed by the religious reform movements?

A. Liberating human intellect from blind faith in dogma and tradition.

B. Subjecting the sacred scriptures to the test of of rationalism and scientific enquiry.

C. Injecting the new spirit of humanism making common good the desired goal.

D. Creating self-confidence and self-respect among Indians enabling them to adapt themselves to the modern world.

66. The religious reform movements failed to have a more positive impact on modern India principally because they

A. catered chiefly to the needs of the middle classes.

B. looked to Ancient India as Golden Age which developed a false pride in our past.

C. emphasized the religious aspects of our culture which was not common to all Indians.

D. led to parallel growth of national consciousness and communal distinctiveness more or less simultaneously.

67. In modern context Syed Ahmed Khan's most valuable contribution is

A. blind obedience to tradition and custom must be counteracted by free thinking and criticism.

B. an open mind dispels religious fanaticism only if religion is regarded as one's private affair.

C. all sacred works including the Holy Quran must be subjected to rational scrutiny.

D. the setting up of M.A.O. College at Aligarh to help Muslim upper and middle classes contest the superiority of the Hindus.

68. Indicate from statements below the most relevant facets of Vivekananda's personality for us today

A. A modern Shankaracharya in view of the National application to Vedanta.

B. A great Universatist due to his ecclecticism in religion (essential unity of all religions).

C. A persistent Patriot owing to his concern for our degeneration and the remedies he suggested.

D. A wonderful Humanist as he emphasized that personal salvation was best realized through social action.

69. The most significant contribution of the theosophists is to be found in

A. the propagation of the universal brotherhood of man.

B. the multi-faceted achievements of Mrs. Annie Besant.

C. the world wide interest in Indian philosophy and religion.

D. Indians gaining self confidence on being made aware of their great past.

70. The Brahmo Samaj failed to have a lasting impact on the Indian masses because

A. there was too much internal dissension among its leaders after Roy's death.

B. its appeal was more intellectual than emotional.

C. too rapid a pace of social reform only alienated the masses.

D. its opposition to idolatry and superstitious practices earned the hostility of orthodox elements.

71. The impact of western ideas was felt more in Bengal than elsewhere in India mainly because

A. very many Bengalis had been educated in the western system.

B. Bengal was the first territory to be ruled effectively by the British.

C. it would be best to emulate the West since the British were paramount in India.

D. The Bengalis as a people tend to react positively to challenges posed.

72. English education in India has served the chief purpose of transforming Indians into

A. bureaucratic b[illegible] clerks.

B. WOGS (Indian in colour, English in culture).

C. a people generally western-oriented.

D. enlightened and progressive individuals.

73. The missionary contribution to Indian history has been most permanent in

A. the conversion of millions to Christianity.

B. the introduction of new techniques in agriculture and new items of food.

C. the development of the Vernacular languages into viable literary vehicles.

D. the operation of welfare institutions in the absence of the welfare state.

74. The traditional systems of education were no match to the British system of [illegible] because they were

A. basically religion-based

B. confined to the classical languages neglecting the vernaculars.

C. too ossified, bearing no relevance to reality.

D. Operated by substandard and unqualified staff.

75. Raja Ram Mohan Roy merits the title, 'Father of the Indian Renaissance' principally for his strong advocacy of

A. formation of western knowledge through the English language.

B. compromising efforts at socio-religious reform.

C. championing the rights of the masses for a better deal.

D. pioneering attempts in improving the general lot of all segments of Indian society.

76. The most striking contribution of R.M.Roy to the India of today has been

A. the idea of unity of God.

B. the pioneering efforts for spread of English education.

C. the eradication of social evils and abuses.

D. the constitutional agitation method for resolving grievances.

77. The significance of the awakening in 19th century India is best illustrated by

A. Immobility being replaced by progress.

B. superstitions yielding place to science.

C. zeal for reform of abuses overpowering age-long apathy and inertia.

D. reason and judgement displacing faith and belief.

78. English education stimulated most of all among Indians one of the following philosophical outlooks.

A. Humanism.

B. Individualism.

C. Intellectualism.

D. Rationalism.

79. The introduction of English education was instrumental in stimulating chiefly

A. the zeal for reform in social and religious institutions.

B. new concepts of morality.

C. industrial Revolution

D. flourishing of liberal political ideology

80. The first century of British rule (1757-1858) can be considered memorable mainly for

A. steady annexation and conquests.

B. stagnation of the social fabric

C. draining away of economic resources.

D. remarkable outburst of intellectual activity .

81. The most significant outcome of education of the Indians has been

A. the better-off few have the moral obligation to better the lot of the unfortunate many.

B. that crude superstitions and barbaric practices reflect badly on our culture and must be removed.

C. new rights for more people must be won by persistent effort and through constitutional methods.

D. the people's welfare should be reflected in increasing equality in all senses i.e. legal, political, social and economic.

82. The influence of the Christian missionaries on the religious movement of the 19th century India is seen best in

A. the post-Roy Brahmo Samaj being conceived of as a Church.

B. the idea of proselytisation as evidenced in the Shuddhi movement of the Arya Samaj.

C. the Ramakrishna Mission devoting itself primarily to the social uplift of the poor.

D. the Deccan Education Society deliberately modelling itself on the Society of Jesus to provide quality education.

83. Thuggery and other forms of lawlessness could prosper and proliferate in the early 19th Century India mainly because

A. the British were far too busy in subduing Indian princes and annexing their territories.

B. too many castes among Indians were professionally associated with criminal activities.

C. under apparent sanction of religion they could carry on their nefarious work.

D. the people were so pauperised that their resort to this method was tolerated by society.

84. The British Government could succeed in the efforts to effectively suppress Sati essentially because

A. they had the support of enlightened public opinion among Indians.

B. their administrative organisation was excellent.

C. they had the necessary force at their command and the will to use it.

D. they declared Sati illegal making all participants therein liable to legal punishments.

85. The rationale behind the practice of Sati was evidenced specially in the belief that the wife

A. was an economic burden upon her husbands death, and so best got rid of

B. was responsible somehow for her husbands death, therefore must pay the penalty.

C. must exhibit eternal loyalty to her husband by accompanying him into the beyond.

D. had no choice but to abide-by age-old tradition irrespective of [illegible] circumstances.

86. The secularism of the British Government in 19th Century India was most strongly stressed when they

A. refused to encourage or help Christian missionaries.

B. dissociated religious instruction from Government educational institutions.

C. were impelled by human considerations to fighting existing evils in the society

D. showed no special favour to ceremonies associated with Indian religions.

87. The most glaring defect of modern education has been

A. that it is too literary and academic.

B. it is very much divorced from practical ideas on religion and morality.

C. that no adequate attention has been devoted to raising the level of vernaculars.

D. that mass education has been mostly talked about but seldom implemented.

88. If the Revolt of 1857 had not taken place and had not forced the British to adopt a rigid attitude

A. India would have gained independence much earlier than 1947.

B. the British would have agreed to Dominion status for India.

C. sacrifices of a number of leaders would have been spared.

D. the Indian princely states would have been accorded a much better treatment.

89. Inspite of covering a large territory and being popular, the Revolt of 1857 did not achieve its desired result because

A. many rulers of the Indian states refused to join.

B. the upper and middle classes were critical of the rebels.

C. big merchants supported the British for their selfish gains.

D. the intelligentsia did not support the Revolt.

92. Ishwar C[illegible]andra Vidyasagar like Raja Ram Mohan Roy was a gr[illegible] social [illegible]. His great[illegible] [illegible]cation was in the field of widow remarriage in favour of which he produced evidence from the

A. British laws.

B. Indian traditional learning

C. public appeal.

D. lot of the unfortunate widows.

94. Raja Ram Mohan Roy represented the [illegible] of national consciousness which aspired for national unity. In his view the greatest obst[illegible] [illegible] unity was

A. corrupt social and religious practices.

B. rigid caste system.

C. traditional education

D. opposition from [illegible] fundamentalists.

95. Raja R[illegible]m Mohan Roy [illegible] his life [illegible] contemporary social evils. But the greatest crusade which he launched was mainly agirst

A. denying the women their status in the society.

B. opposing widow re-marriage

C. burning of widows on the funeral pyre of their dead husbands.

D. denying the women right to property.

96. The Brahmo Samaj founded by Raja Ram Mohan Roy preached worship of one God based on the [illegible] of Vedas and Upanishads. But the [illegible] basis of the Samaj was on

A. human dignity.

B. Social and religious practices.

C. Vedic hymns.

D. monotheism.

97. Raja Ram Mohan Roy, a great leader of modern India, represented a synthesis of the thought of the East and the West. He started his mission to change the Indian Society in mainly order to

A. eradicate it from traditions and superstitions.

B. ameliorate the condition of the lower classes.

C. induct the concept of modern capitalism and industry in Indian society.

D. free it from an alien rule.

98. The British system of education supported by some progressive Indians was aimed at

A. providing an opportunity to acquire western knowledge of social and political system.

B. helping to expand the market for British manufacturers in India.

C. getting a cheap supply of educated Indians to man the increasing number of subordinate posts.

D. glorifying the British conquerors and their administration in India.

99. Raja Ram Mohan Roy advocated the study of western knowledge because he

A. saw into it the key to the treasures of scientific and democratic thought of the West.

B. felt that traditional education had bread superstition.

C. thought that the salvation of the country lay in going forward and not looking backward.

D. was a great admirer of the English culture.

100. Macaulay observed, 'Oriental learning was completely inferior to European learning'. This observation betrays mainly his

A. bias for the superiority of western knowledge.

B. deep prejudice against India's past achievements.

C. dislike for Indian system for knowledge.

D. ignorance that Indian languages were not sufficiently developed.

101. The French Revolution and the Industrial as well as the Intellectual Revolution of the 18th Century had a tremendous influence over India. One of the new and revolutionary ideas related to humanism which stood for

A. respect for every human being

B. equality of all human beings.

C. confidence in the capacity of man to progress,

D. dignity of labour.

102. The concept of 'Rule of law' was introduced by the British in the judicial system of India. One important feature of this modern concept was that

A. it guaranteed the personal liberty of an individual

B. any official could be brought before a court of law for breach of official duty.

C. the judicial administration was to be carried according to rules.

D. The justice was denied to the poor.

103. The British established a new judicial system all over India by codifying all existing traditions and practices into Indian Penal Code. The most significant change in the Process was that

A. the laws were man-made and based on reason.

B. the earlier traditions and practices were modified.

C. there were separate laws for Hindus and Muslims.

D. the punishment to criminals was liberal.

104. One of the major achievements of the Police Administration during the days of Lord Cornwallis was the

A. suppression of thugs who robbed and killed the travellers.

B. curb of social and religious evils among Indians.

C. suppression of national movement.

D. maintenance of Law and Order.

105. It is indeed surprising that a handful of foreigners could conquer and control India with a predominantly Indian army. This was possible because

A. there was absence of modern nationalism in the country at that time.

B. the Indian soldiers in the British army were loyal to their rulers.

A. accept the authority of the British Governor General for its security.

B. agree to the permanent stationing and maintenance of a British force within his territory.

C. post at his court a British Resident for consultation.

D. defend the British crown in all the eventualities.

112. The brave fight given by Tipu Sultan to the British power and his ultimate defeat exposed the tragic political situation in India in which

A. the Marathas were fighting against Mysore.

B. Mysore and Marathas were fighting against other Indian rulers.

C. the Indian rulers followed a shortsighted policy in helping the foreigner against another Indian power.

D. Tipu Sultan had to cede half of his territories to the allies.

113. In the dual system of administration in Bengal the Nawab was responsible for internal and external security while the East India Company controlled the finances of the province. This dual authority resulted into a disastrous consequence in which

A. the British held power without responsibility.

B. the Nawab held authority without finances

C. both the authorities exploited the people.

D. East India Company found itself as master of whole of Bengal.

114. The role of Mir Jafar, Nawab of Bengal has been condemned as tre[illegible] by the hi[illegible] his policy of befriending the East India Company resulted in

A. emptying the treasury in Bengal.

B. The rise of the influence of the East India Company.

C. the increase into the [illegible] of Company officers

D. the decay of the Mughal [illegible] over Bengal.

115. The occupation of Fort William by S[illegible]ud-Dawlah, the Nawab of Bengal, has been termed as [illegible]gated because he

A. underestimated the [illegible] of [illegible] India Company.

B. allowed the East India Company to trade freely in Bengal.

C. ordered both the English and the French to demolish their forts at Calcutta and Chandernagore.

D. compelled them to obey the [illegible] of the land.

116. The Royal Farman by the Mughal Emperor in 1717 granted to the East India Company [illegible] freedom to

A. export and import their goods in Bengal without paying taxes.

B. trade anywhere in Bengal.

C. levy taxes on goods ent[illegible] [illegible].

D. issue licenses to traders of Bengal.

117. The de ... Bengal
in the ... establishment of

A. Briti

B. East India Company.

C. British rule over Bengal.

D. defeat of British power in India.

118. 'The Doctrine of Lapse' followed by Lord Dalhousie was the most unscrupulous policy adopted by any Governor-General for it empowered him to annex the territory of any Indian ruler in the British dominion when

A. the ruler of a protected state died without natural heir.

B. the adoption of a heir had not been approved by the British authorities.

C. the Indian ruler refused to appoint a British Resident in his state.

D. the state ... mal ...

119. The present day Indian soldier is better off than his counter part of pre-mutiny days mainly because

A. emoluments and promotional avenues are better.

B. officers are Indian and more sympathetic towards him.

C. he has more effective weapons.

D. his family is looked after in case of death or injury.

120. The Western education helped Indians to imbibe rational and nationalist outlook because

A. they came to know of political developments in Europeans countries.

B. educated Indians could exchange [illegible] through English - a common language.

C. they were able to study the evil effects of foreign rule.

D. they came to know about their past glorious achievements from books written by Western authors.

121. Inspite of the strenuous efforts of Iswar Chandra Vidya-Sagar to uplift the Hindu widows there has been little difference in the attitude towards their re-marriage because

A. widow re-marriage is still taboo.

B. the Act of 1856 was inadequate.

C. there is lack of social consciousness.

D. a widow is believed as accursed.

122. Surendranath Banerji founded the Indian Association to function as a nucleous of an All-India movement under the inspiration of

A. Gladstonian Liberalism.

B. Kossuthian patriotism.

C. Bismarckian nationalism.

D. Mazzinian idealism.

123. Dadabhai Naoroji was invited to preside over the Calcutta Session of the Congress in 1906 because

A. he was held in high esteem.

B. the liberals felt that he would act as a check against extremist objectives.

C. he was believed to be sympathetic to liberal ideology.

D. he was strong opponent of the partition of Bengal.

124. The existence of British Rule helped in the Unification of India because of

A. anti-imperialistic feelings.

B. administrative set up.

C. introduction of Railways and telegraphs.

D. introduction of English language as medium of instruction.

125. Which of the following steps of the British helped in the emergence of the national movement?

A. Western learni[illegible].

B. Economic exploitation.

C. Denial of political rights.

D. Ethnic discrimination.

126. The most significant result of the 1857 revolt was that

A. it brought [illegible] consciousness [illegible] Indians.

B. it further strengthened the national movement.

C. the rule of East India Company came to an end.

D. it changed the Indian economy and society.

127. The press and the national literature proved instrumental in arousing national consciousness among Indian because

A. it spread the message of patriotism.

B. it highlighted the drawbacks of official policies.

C. it enabled the Indians to exchange their view.

D. it popularised the idea of Self-Govt.

128. Which of the following is the worst example of social discrimination by the British Govt?

A. Indians were not allowed in the clubs meant for Europeans.

B. Indians were not allowed to travel with the European passengers.

C. Indians had no right to try the Europeans before 1883.

D. The British hated the entry of Indians into higher ranks of administration.

129 The Sarvajanik Sabha was a precursor of the Indian National Congress in as much as it

A. took up the cause of Social reformers.

B. wanted to protect the interests of peasants.

C. promoted the idea of Sawadeshi in Maharashtra.

D. worked for political resurgence.

130. The revolt of 1857 failed because

A. it was not supported by the masses.

B. the Indian princes did not help.

C. the Russian helped the British.

D. the Muslims kept aloof.

131. Surendra Nath Banerji joined the national movement because he

A. was rejected in the I.C.S.

B. founded the Indian Association in 1876.

C. strongly identified himself with the movement of liberals.

D. criticized the imperialist policies of the colonial Govt.

132. The Swadeshi-Movement means

A. Shouting anti-British slogans.

B. boy-cotting foreign goods and the use of Indian goods.

C. wearing of Khadi Cap.

D. use of Hindi in conversation.

133. 'Swaraj is my birth right'. These words were spoken by

A. Gandhiji.

B. Lokmanya Tilak.

C. Jawarharlal Nehru

D. Subhash Chandra Bose.

134. The objective of the civil service agitation was to

A. rouse national consciousness.

B. show loyalty to the British.

C. raise the age limit for the examination.

D. secure representation of backward classes in Govt. services.

135. Swami Dayanand Saraswati rejected caste ideology, Polygamy and child marriage etc. because

A. he thought that these practices flouted the original liberal doctrines of Hinduism.

B. the Brahmo Samaj had already initiated a movement in this connection with lesser success.

C. the Christian missionaries criticized them most.

D. Social transformation was considered by him to be necessary for emergence of strong nationalisms.

136. Mahatma Gandhi is called the 'Father of the Nation' because

A. he tried to remove untouchability.

B. he worked for communal harmony.

C. he was responsible for India's freedom.

D. he was assassinated.

137. Who raised the slogan 'Do or Die'

A. Pt. Jawarhar Lal Nehru.

B. Jai Parkash Narayan.

C. Mahatma Gandhi

D. Subhash Chander Bose.

138. The warm attitude of the British Govt. towards the congress became positively cold in the annual session of the congress at:

A. Calcutta, 1886.

B. Madras, 1887.

C. Calcutta, 1906.

D. Allahabad, 1[illegible]

139. The mingling of old ideas with new in India became possible after 1858 as a result of

A. a modernized educational structure.

B. a political movement against the alien British rule.

C. transformation of traditional society.

D. the Pararthana Samaj and Arya Samaj Movement.

140. Which one of the following is the best interpretation of the Revolt of 1857?

A. It was neither first nor a war of Independence'.

B. It was the first great freedom struggle against the British.

C. It was a revolt of the feudal class for the recovery of their rights.

D. it was at best a mutiny of the sepoys.

141. The independent India, far from being a defeat, is a triumph of British culture. This is mainly because

A. an Anglo-Indian culture has developed in India.

B. India follows cultural exchange programme with Britain.

C. Parliamentary democracy has been introduced in India.

D. English is still the lingua-franca in India.

142. William Jones, though an Englishman himself, translated Kalidasa's Sakuntala, first into Latin and then, into English. From this it follows that

A. English is not as rich as Sanskrit.

B. direct English translation from Sanskrit was not possible.

C. Jones had a preference for Latin.

D. Latin resembles Sanskrit very much.

143. In the Permanent settlement the rights of the cultivators were deliberately sacrificed. This was done in order to

A. rule the cultivators with an iron hand.

B. appease the Zamindar class.

C. enable the Zamindars to meet the exorbitant revenue demand.

D. increase the land rent periodically.

144. Full scale modernisation of Indian society was never a policy of the British Government for the simple reason that

A. the British industrialists were against it.

B. it would generate forces against British rule.

C. Indian society was not yet responsive.

D. there was no administrative machinery for this.

145. The reason why the Indian Muslims were not drawn into the fold of Extermist movement was the

A. anti-Muslim attitude of Extremist leaders.

B. influence of Sir Sayyid Ahmed Khan.

C. indifference shown to Muslim aspirations.

D. mistaken policy of harping on Hindu past.

146. The Indian nationalists, whil failed to prevent the partition of the country, did succeed in case of the partition of Bengal. This was due to the fact that

A. nationalism was at its peak at that time.

B. Hindus and Muslims were united.

C. the Government was apprehensive about a revolution.

D. Lord Curzon was replaced by a liberal viceroy.

147. The main reason why no Permanent Settlement was introduced in Madras and Bombay Presidencies was that in those regions

A. there were no big zamindars with whom settlement could be made.

B. revenue collection was much easier.

C. the company did not want to be financially loser.

D. peasants were traditionally owners of the land.

148. In 1911 the capital of the British Indian Empire was shifted from Calcutta to Delhi. This was necessary mainly because

A. Delhi was centrally located.

B. Calcutta was the hot bed of nationalist upsurges.

C. Delhi was traditionally the seat of imperial power.

D. the climatic conditions of Delhi were better.

149. Despite the pressure of British Radicals and Christian Missionaries to modernise Indian society, the company Government was not very enthusiastic. The reason was that

A. they were all along guided by profit-making motive.

B. there was no proper machinery to achieve it.

C. they apprehended a revolutionary reaction.

D. Governors General were frequently changed.

150. In 1917 the new Soviet regime electrified the colonial world by

A. forming the first socialist state

B. renouncing its imperial rights in Asia.

C. carrying out a successful revolution.

D. withdrawing from the world war.

151. The most important effect of the World depresssion of the 1930's on India was the

A. sudden increase in the number of unemployed.

B. worsening of the condition of peasants.

C. stagnation in industry

D. rapid growth of the socialist ideas and planning.

152. The Indian zamindars as a class supported the British rule. This was mainly due to the fact that

A. they were the creation of British Raj.

B. they were given the proprietory right over land.

C. their existence depended on the British rule.

D. law and order was maintained in the country.

153. Nearly all the religious reformers of India contributed to social reform movement. This was necessary

A. to forestall the activities of Christian missionaries.

B. to check the dominance of priests over society.

C. as all the social evils had religious sanction .

D. as social uplift was a pre-condition to spiritual uplift.

154. Despite the attempts of all the great reformers to abolish it, the caste system still persists among the Hindus. This is because

A. it is the foundation of Hinduism.

B. India is still a country of villages.

C. People are yet to be educated.

D. our economy is not that developed.

155. There is a danger of our religion getting into Kitchen. We are [illegible] Vedantists [illegible] now, nor Puranics, nor Tantrics. We are just 'don't touchists'. (Bipin Chandra, Modern India P.218). This remark of Swami Vivekananda was a

A. condemnation of Hinduism.
B. Condemnation of caste system.
C. call to restore Vedas
D. call to restore the Puranic and Tantric systems.

156. While both the Brahmo Samaj and the Arya Samaj had much in common [illegible] Samajists got an orthodox colouring. This was because of their

A. total dependence on the Vedas.
B. anti-western attitude.
C. glorification of Hinduism.
D. crusade against other religions

157. The most fundamental respect in which Swami Dayananda may be compared with Martin Luther was that both

A. were rational.
B. were religious reformers.
C. attacked [illegible] respective religions.
D. believed in the right of direct access to God.

158. Warren Hastings encouraged the study of Sanskrit because he

A. was a great Orientalist.

B. wanted to reveal the Sanskrit literature to the Western world.

C. tried to ascertain the nature of Hindu law.

D. was under the influence of Brahmins.

159. After the assumption of Power by the Crown, land legislation became, to some extent, biased against the land-owning classes. This reversal of Government's policy was due to the fact that

A. zamindars became too oppressive.

B. there was genuine concern for peasantry.

C. land revenue still surpassed other forms of revenue.

D. there was an apprehension of peasant revolt.

160. Unlike the zamindars, the Indian capitalist class went against the British Raj as

A. many of them were influenced by Gandhiji.

B. they were not the creation of the British.

C. they were not conservative like landed-aristocracy.

D. their interests clashed with those of British capitalists.

161. Despite their opposition, the Indian nationalist leaders agreed to the partition of the country mainly because

A. they accepted the Two-Nation theory.

B. it was imposed upon them by the British.

C. this was their last opportunity to attain freedom.

D. they wanted to avoid large-scale communal riots.

162. Instead of investing in industry, the Indian moneyed class were more interested to buy land and become landlords. This was because

   A. Indian landlords had an easy and secure life.

   B. businessmen occupied a lower place in the social hierarchy.

   C. effective outlets for investment in industry was very limited.

   D. they were by nature incapable of taking risks.

163. After the British conquest there was a sudden and quick collapse of the manufacture of Indian weapons. This was because

   A. these proved to be obsolete.

   B. many craftsmen abandoned the profession.

   C. the British never purchased them.

   D. the cost of production became unremunerative.

164. After the Britis[illegible] [illegible]t of India, [illegible] increased dependence of people on agriculture. This was the result of

   A. population explosion in the country.

   B. gradual improvement in agriculture.

   C. gradual deindustrialisation of the country.

   D. ruin of important towns and cities.

165. In the last part of the 19th century the Manchester Chamber of Commerce showed an unusal interest in the improvement of Indian agriculture. This was because it

A. wanted commercialisation of Indian agriculture.

B. was really concerned at the stagnation of Indian agriculture.

C. wanted better quality control in cotton production.

D. needed increasing raw materials from agrarian sector.

166. Economically the British conquest differed from all previous conquests in the sense that it transformed India into a

A. single economic entity.

B. colonial economy.

C. Semi-capitalistic society.

D. full-fledged feudal society.

167. Between 1901 and 1914 the percentage of population dependent on agriculture increased from 63.7% to 70% because

A. more people were interested in agriculture.

B. the growing population demanded more food.

C. the British destroyed industry and increased dependence of the people on agriculture.

D. the people wanted to produce raw-material for export.

168. In the early 19th century, the peasants in the Company's Provinces were poorer and more dispirited than the subjects of the Native Princes. We can infer that

A. the Native Princes took moderate taxes from the peasants.

B. the British taxed the peasants too heavily.

C. the Native Princes provided generously for the peasants.

D. the British were least concerned about the peasant's welfare.

169. 'The beginning of British rule in India brought about large-scale devastation. We surmise from this that

A. the British discouraged agriculture.

B. the peasants found better employment.

C. Clive and Warren Hastings extracted the largest possible land-revenue.

D. the British began clearing the jungles indiscriminately.

170. 'The misery hardly finds a parallel in the history of commerce. The bones of the cotton-weavers are bleaching the plains of India' This statement of William Bentinck in 1834-35 may be understood as

A. the depopulation and wasting of flourishing industrial centres.

B. the exploitation of cotton-weavers.

C. mass death of cotton-weavers.

D. the destruction of trade in India.

171. The basic reason for the rise of money-lenders at the end of the 19th century was because

A. the peasants were ever eager to borrow money

B. the money-lenders were the newly accepted social class.

C. the British encouraged the money-lenders.

D. the peasants were forced to borrow money due to extreme poverty.

172. The play, 'Neel Darpan' by Dinbandhu Mitra, in 1860 about oppression of peasants by indigo planters proves that

A. the play was enjoyed by Indians.

B. the peasants had become important.

C. the British policies were openly criticized.

D. a social consciousness and responsibility had surfaced.

173. The development of industry in India was slow even in the second half of the 19th century because

A. the British were taking away raw-materials.

B. there was tough competition with European products

C. industrialized Japan could meet all Indian needs.

D. the Europeans discouraged and put restrictions on industries in India.

174. 'In the late 19th and early 20th centuries, Indian industries were concentrated only in a few regions and cities of the country'. We may infer from this that

A. few Indians preferred industrial development.

B. most industries were British owned with selfish interests.

C. means of transport were poor in most regions.

D. Indians in some regions had better facilities for industry.

175. 'The National Movement attracted people of all classes and sections'. Responsible for this was

A. the novelty of the experiment.

B. political consciousness among the people.

C. adverse effects of harmful British policies.

D. easy means of communication.

176. Vernacular language teaching was encouraged by national leaders from Dadabhai Naoroji to Gandhiji because

A. English had already created a separatist tendency among the people.

B. English was not accepted by all the Indians.

C. It was too difficult for common men to learn English.

D. it would help educate more Indians.

177. The early associations were formed in the Presidency towns. This proves that

A. they had to suffer the most from British policies.

B. only in these towns existed the educated people.

C. the prominent persons of these towns sponsored them and participated actively.

D. it was easy to form such association in towns.

178. Turned away unjustly from the I.C.S., Surendranath Banerjee began a public career. This shows.

A. his anger towards the British.

B. his ability to confront any situation positively.

C. his love for his country.

D. his interest in politics.

179. Surendranath Banerjee rose above the average when

A. he passed the I.C.S. examination.

B. he overcame the initial set-back caused by British injustice.

C. he delivered brilliant addresses on nationalist topics.

D. he founded the Indian Association in July 1876.

180. Confined to Bengal but influenced all-India politics. This is true about

A. Ram Mohan Roy

B. Surendranath Banerjee

C. Anandamohan Bose

D. W.C.Banerjee.

181. Surendranath Banerjee was chosen as leader by the young Bengal nationalist because

A. he was young and promising.

B. he was a good orator.

C. he had passed the I.C.S. examination.

D. they were disillusioned with the policies of British India Association.

182. The idea of 'Swadeshi' was popularised mainly

A. to promote Indian industries.

B. to further the cause of nationalism.

C. to encourage patriotism.

D. as an excuse to burn foreign clothes.

183. Tilak's imprisonment in 1897 galvanized the national movement, because

A. the British were short-sighted and did not consider the consequences.

B. Tilak was an All-India leader at that time.

C. the Amrita Bazar Patrika condemned the arrest.

D. the people realized it was an attack on their liberties.

184. The Indian National Congress gave up moderate methods

A. to please the extremists.

B. as political mendicancy filled them with shame.

C. as it was [illegible] with the British.

D. under the pressure of public demand.

185. Early Moderates

A. wasted precious years of the Congress.

B. created a strong public opinion.

C. resented any criticism of the [illegible].

D. created a base for a more vigorous national movement in later years.

186. Early Moderates may be compared to

A. the corner-stone of an important edifice.

B. a stumbling block to a flowing stream.

C. a spoke in the wheel to a gathering storm.

D. a decorative ornament on a mantelpiece.

187. In the late 19th century, the Parsis became the most westernized because

A. they had more facilities than the other communities.

B. they were the first to get western education.

C. they were the first to shed orthodoxy in religious and social customs.

D. most of them had visited western countries.

183. India emerged out of cultural and intellectual isolation in the 19th century. Thanks to

A. the advent of the British.

B. the religious reform movements.

C. adoption of western culture.

D. better means of communication.

189. The idea of establishing an organisation that would be a mouth piece of the intelligentia in India was supported initially by Lord Dufferin because

A. the idea was mooted by an Englishman.

B. there was a pressing need for it in his view.

C. he did not rely on the Press.

D. he was opposed to Lytton's views.

190. The Ilbert Bill agitation demonstrated that

A. the British community in India was very well organised.

B. India was on the threshold of a major movement.

C. a well organised movement could influence major policies of the state.

D. principles of British liberalism were only of theoretical value in India.

191. The Revolt of 1857 may be considered as First War of Independence because

A. the area co[illegible] the Revolt [illegible] [illegible]tional.

B. the Hindus and the Muslims were united in ousting the alien rulers.

C. all the sections of the society participated in it.

D. it was the b[illegible]st organised of the various revolts.

192. The main cause of the dissatisfaction among the Indian rulers before the revolt of 1857 was

A. they were afraid of the imperialistic designs of the British.

B. their religious sentiments were aroused by the humanitarian measures of the British Govt.

C. the rulers were unhappy with the constant interference of the British Govt., in their internal administration.

D. they hated the economic exploitation of their states by the British.

193. Lord Dalhousie annexed [illegible] because

A. he feared that the Nawab of Awadh would be the centre of opposition to the British.

B. the annexation of Awadh [illegible] strategic.

C. he wanted Awadh to be better administered.

D. he wanted to take over the treasury of the Nawab for himself.

194. In the Revolt of 1857 we witness fraternization between the Hindus and the Muslims because

A. both communities recognized Bahadur Shah Zafar as their Emperor.

B. they hated the policies of the alien British rulers.

C. there was socio-cultural synthesis between the Hindus and the Muslims.

D. the British Govt. had failed in their objectives of playing one community against the other in pre-1857 period.

195. Which was the most significant cause of the failure of the Revolt of 1857?

A. The leadership was weak and inefficient.

B. The revolt occurred before the agreed date.

C. The rebels lacked proper financial resources.

D. There was lack of unity among the Indians.

196. Why was Bahadur Shah Zafar proclaimed as Emperor of India by the rebels?

A. He stood for national unity.

B. He represented the great Mughal dynasty that ruled India.

C. He was acceptable to all.

D. It was in reaction to Canning's announcement of 1856 seeking to lower his status.

197. The most significant contribution of Lakshmibai of Jhansi to the Revolt of 1857 was

A. the bravery, courage and fortitude displayed by her.

B. her capture of Gwalior with Tantia Tope's help.

C. her ability to associate both the Hindus and the Muslims with the revolt.

D. the leadership she provided to the rebels in fighting the British.

198. The main cause of discontent among the Indian soldiers of British Army before 1857 was

A. use of greased cartridges.

B low emoluments & scanty promotional avenues.

C. fear of losing caste.

D. ill treatment by British officers.

199. The peasants participated in the Revolt of 1857 because

A. they were too heavily taxed.

B. they lost their land to traders.

C. the new British policy of [illegible] in the army divided their chances of employment.

D. they were adverse to the socio-economic & administrative policies of the Govt.

200. The General Service Enlistment Act,1856 was unpopular because

A. the salaries of the Indian soldiers were reduced.

B. recruitment procedure became complicated and difficult.

C. job opportunities for Indians in British army became limited.

D. it injured the religious sentiments of the Hindus.

201. The study of the revolt of 1857 reveals that

A. the Indian wanted to over-throw the British rule.

B. the soldiers in the Indian army were the most dissatisfied section of the society.

C. there was great dissatisfaction in prominent groups of the society against British policies.

D. the aristocracy was interested in the perpetuation of the British rule.

202. The most significant result of the British rule in India before 1857 was

A. establishment of an efficient administrative system.

B. fair settlement of land revenue as initiated by Cornawllis, [illegible] Lord.

C. improvisorment of the masses.

D. introduction of western system of education.

203. Corruption in administration in the police and the law courts in India is a legacy of the

A. post mutiny

B. early post-independence period.

C. pre-mutiny era.

D. ancient-period.

204. The chief centres of the revolt of 1857 were

A. Delhi, Varanasi, Kanpur and Hyderabad.

B. Kanpur, Meerut, Allahabad and Patna.

C. Lucknow, Barreilly, Arrah and Amritsar.

D. Jhansi, Barreilly, Delhi and Meerut.

205. The philosophy of the Indian Liberals can best be described as one of

A. prayers and petitions.

B. constitutional agitation

C. support and appreciation of the British rule.

D. political mendicancy.

206. The most significant demand of the early Congress era was

A. Indianization of services.

B. simultaneous examination.

C. reform and enlargement of councils.

D. development of modern industries in India.

207. The English language played a very significant role in our national movement because

A. Sanskrit was a difficult medium of communication.

B. Persian was mastered by only a limited section of the population.

C. the British promoted learning of English for their own selfish ends.

D. it was a convenient tool for exchange of views among Indian people.

208. The press has been the victim of the governments wrath during the British period as well as in free-India. Which of the following is the worst example of suppression?

A. The Vernacular Press Act.

B. The Gogging Act.

C. John Adam's policy.

D. Govt.'s action against the Express Group.

209. Sati could be abolished effectively only because

A. Ram Mohan Roy fought against it very vigorously.

B. Indians bec[illegible] of human [illegible] and equality of sexes.

C. in response to growing public opinion the Government enacted punitive legislation.

D. Hindu orthodoxy was attacked on the basis of reason

210. The most significant and lasting [illegible] of the West on India was the

A. concept of democracy and constitutional Government.

B. emergence of reform movements.

C. improvement in the status of [illegible].

D. rise of middle classes.

211. In 1839 Debendranath Tagore founded the Tatvabodhini Sabha

A. to propagate Ram Mohan Roy's ideas.

B. to propagate [illegible] teachings [illegible] Samaj.

C. to propagate [illegible] teachings of monotheism.

D. to advocate social reforms.

212. The common ground between Arya Samaj and Brahmo Samaj lies primarily in

A. doing away with the need for a priestly class.

B. opposing idol worship and superstitious practices.

C. establishing the right of the individual for a direct access to God.

D. eliminating the accretions in Hinduism.

213. Raja Ram Mohan Roy favoured Western learning principally because he Believed that

A. classical learning would only keep Indians separate

B. Indians would be better qualified for jobs in the Company.

C. only Western education would do away with existing superstitions.

D. Indians should use reason as their guide to life.

214. Raja Ram Mohan Roy was the first Indian to conceptualize national consciousness for India as

A. many religions tended to keep Indians apart and divided.

B. he was convenienced that humanistic ideals would make them more aware of human rights and individual liberty.

C. that was the only way to do away with feudal opprssion and colonial rule.

D. education of the Indian people was essential to eradicate corrupt practices and customs.

215. Sayyid Ahmed Khan founded the Muhammadan Anglo-Oriental College as a centre for

A. bringing the educated Muslims together.

B. spreading western sciences and culture among the Muslims.

C. encouraging social reforms among the Muslims who were very traditional.

D. awakening public opinion among the Indian Muslims.

A. politial questions.

B. economic questions.

C. social qu

D. cultural questions.

221. Religious reform among the Sikhs began when

A. the Akali Movement rose in the Punjab.

B. the Khalsa College was started at Amritsar.

C. the gurudwaras came under control of selfish mahants,

D. a powerful Satyagraha against the mahants and the Government started in 1921.

222. The nationalist saw in the act of the partition of Bengal as a challenge to Indian

A. patriotism

B. nationalism

C. culture

D. socialism.

223. Tilak started the Ganpati festival to stimulate among the people the spirit of

A. rationalism

B. patriotism.

C. nationalism

D. humanism

224. The most profound influence of Iqbal as can be seen through his poetry is

A. pariotic, appeal Sare jahan se achha....

B. adoption of a dynamic out look to change the world.

C. passive acceptance of things is sinful.

D. man must make constant efforts to improve his condition.

225. What was the main cause of the weakening of the Swarajist party?

A. The death [illegible] Das.

B. The functioning of Dyarchy.

C. Dissension among the Swaraj members.

D. The attitude of the British Government.

226. Why did Gandhiji allow the Swarajists to contest the election in 1926?

A. Because he wanted to avoid another split in the Congress.

B. Because he did not want to disappoint the prominent Congress leaders.

C. Because he did not want to displease the British Government.

D. Because he knew the participation of the Congress in the Legislation was a necessity.

227. A.O.Hume founded the Indian National Congress in order to

A. train the Indians in Constitutional method.

B. stop them from resorting to rebellion.

C. win over the Indians.

D. divide the Indians.

228. A remarkable aspect of the Swadeshi agitation was the active participation of:-

A. college students in the movement.

B. women in the movement.

C. masses in the movement.

D. middle class in the movement.

229. The rising trend of militant Nationalism during 1905-1918 found its expression mainly against

A. political oppression.

B. economic consequences.

C. partition of Bengal.

D. disastrous famines.

230. The most constructive result of the Swadeshi movement in 1906, could be found in the

A. rise of journalistic activities.

B. writing of patriotic songs.

C. formation of a National council of education.

D. starting a National College at Calcutta.

231. The then Nawab of Dacca supported the partition of Bengal mainly because

A. he was a staunch supporter of British government.

B. East Bengal was a Muslim majority.

C. Muslim culture was a separate entity.

D. he was under political pressure of the British Govt.

232. Which one of the following was the most important announcement by the British government in order to appease moderates and isolate militant nationalists?

A. Cancellation of partition of Bengal in 1911.

B. Creation of a new province merging Bihar and Orissa.

C. Shifting the seat of government from Calcutta to Delhi.

D. Introducing Morley-Minto reforms of 1909.

233. The most important event which took place during the Indian national movement which later resulted in the partition of India was

A. formation of Muslim League in 1906.

B. partition of Bengal in 1905.

C. introduction of Morley-Minto reforms in 1909.

D. pro-Muslim attitude of Lord Curzon.

234. Which one of the following groups in 1905 wanted to expand National Movement in Bengal as well as in the rest of the country.

A. Moderate nationalists.

B. Militant Nationalists.

C. Tilak's followers.

D. Educated Class.

235. In order to check the United national feeling in Indians against the British rule, the Britishers followed actively the policy of

A. appeasing moderate nationalists.

B. oppressing Militant Nationalists.

C. Introduction of reforms.

D. Divide and rule policy.

236. In the beginning the Indian nationalists supported the cause of the British during the First World War in the hope that

A. they will have sympathetic attitude in future.

B. they will introduce economic reforms for the classes and the masses.

C. They will enabl India to go ahead on the path of self govt.

D. they will [illegible] litical [illegible].

237. Which one of the following was the most significant result of the Lucknow Pact of 1916 in the History of Indian National movement?

A. Unity between Hindus and Muslims.

B. Unity between moderates and extremists.

C. Unity between the Muslim League and the Indian national Congress.

D. unity between both the Home rule Leagues.

238. The most popular slogan 'Home rule is my birth right and I will have it' was given by Tilak during

A. propaganda of the home rule league.

B. Lucknow session of India national congress.

C. propagation of Shivaji and Ganpati festivals.

D. His Jail tenure.

239. [illegible] most impo[illegible] which [illegible] communal and separatist [illegible] during 1905 1918 was that

A. the Muslims [illegible] conservative and hostile to modern education.

B. the Muslims were dominated by Zamindars and aristocrates.

C. the most of the Muslims were not aware of Western thoughts.

D. the Muslims were very backward in education, trade and industry.

240. When all the ways of peaceful protest and political action failed the nationalists out of desperation moved towards the path of

A. Non cooperation with the government.

B. Cooperation with the government.

C. oppression by propaganda.

D. Revolutionary terrorism.

241. Which one of the prominent groups took lead in spreading Swadeshi movement and creating Swadeshi spirit in Bengal.

A. National leaders

B. General Masses.

C. Students.

D. Business community.

242. In 1904 V.D. Savarkar had organised the 'Abhinava Bharat' a secret society of revolutionaries. They also established, such centres abroad. The lead was taken by Shyamji Krishna Verma, V.D.Savarkar and Hardayal to establish a centre at

A. Canada.

B. London.

C. America

D. Ireland.

243. The most important leader who spread the Swadeshi movement in the country was

A. Balgangadhar Tilak.

B. Bipin Chandra Pal

C. Aurobindo Ghose.

D. Rabindranath Tagore.

244. Newspapers played very important role in spreading nationalism.

Which one of the following newspaper was related to Tilak

A. Sandhya

B. Yugantar

C. Kesari

D. Kal

245. The popular character of anti partition movement of Bengal did [illegible]

A. The Clergy Muslim

B. The peasantry

C. The Women

D. The upper middle class.

246. The Interim Gov[illegible] of Nehru [illegible].

failed mainly because

A. the Muslim League joined the cabinet without giving up its Direct Action programme.

B. the Viceroy overruled the cabinet on the question of release of INA prisoners.

C. The Muslim league included a schedule caste nominee in the cabinet.

D. Liaquat Ali Khan imposed heavy taxes on big business.

247. If the British had transferred power to India in 1919, the most important development in Indian history later on would have been

A. the establishment of an independent Federal India.

B. the adoption of Universal Adult Sufferage.

C. the spread of communal riots all over India.

D. the promotion of Hindu-Muslim unity.

248. Which one of the following aspects of the Anglo-Napalese Treaty (1816) has proved the most beneficial to the British even today?

A. The open door trade with Central Asia.

B. the withdrawl of Nepalese from Sikkim.

C. The acquisition of hill stations—Simla and Mussorie.

D. the recruitment of the Gurkhas in the British Army.

249. Which one of the following consequences of the British rule in India was the [illegible] to the Indian National Congress?

A. The use of Indian resources for economic penetration in China.

B. The British aggression towards Indian neighbours.

C. The use of Indian army in African wars.

D. The payment of cost of imperial wars by the Indians.

250. The main cause of the defeat of Burmese in the first Burmese war of(1824-26) was

A. the growing isolation of the Burmese rulers.

B. the failure of the Burmese to assess the strength of the British army.

C. the false hope of revolt of the Indians against the British.

D. the expectation of French military support.

251. Humanyun is remembered even today primarily for

A. his sacrifices and sufferings during exile.

B. his patron[illegible]ting.

C. his restoration of the Mughal rule.

D. his weak personality.

252. A careful study of Humayun' achievement helps us to understand.

A. that human character can change under stress.

B. that generosity towards others can improve human relations.

C. that man has capacity to adapt himself in crisis.

D. that only the fittest has the right to survive.

253. Humayun was de[illegible] by Sher Shah mainly because he

A. lacked military generalship.

B. underestimated the strength of Sher Shah.

C. was too gen[illegible] towards his enemies.

D. was too involved in internecine struggles.

254. Which one of the following is the best interpretation of the Revolt of 1857?

It was neither [illegible] nor 'a war' for independence.

B. it was the first great freedom struggle of the Indian people.

C. it was at best a mutiny of the sepoys.

D. it was a revolt of the feudal class for the recovery of their rights.

255. The Derozians have been called 'the pioneer of the modern Bengal' mainly because

A. they organ[illegible]dent associat[illegible] public issues.

B. they advocated women's rights.

C. they attacked decadent customs and traditions.

D. they pleaded for the freedom of the press.

356. Henny Vivian Derozie (1809-31), the youngest lecturer of Hindu College has been called the founder of the Young Bengal Movement for he was

A. the first nationalist poet of modern India.

B. the staunch supporter of radical reforms.

C. the source of inspiration to the Youth for rationalism.

D. the founder of the first student Association in a College.

257. The Young Bengal Movement of Derozians failed primarily because

A. the radicalism they advocated was bookish.

B. the link with the masses was very weak.

C. the social conditions were not ripe for radical reforms.

D. the peasants did not support this movement.

258. 'Bhutan' wrote the British envoy (1863) ' would in a few years become one of the wealthiest provinces in India'. The best justification for the British attack on Bhutan was

A. the British policy of territorial expansion.

B, the potentiality of growing tea in the area.

C. the opening of Tibet for Trade with Bengal.

D. the possibility of settling the Europeans in Bhutan.

259. Which of the following events indicate that Shah Shuja's entry into Kabul (Aug.1839) was 'like a funeral procession'?

A. Deportation and imprisonment of popular Dost Muhammad.

B. Restoration of Shah Shuja with foreign bayonats.

C. occupation of Kabul by the British forces.

D. revolt of the Afghans against the occupation army.

260. The predominance of the Brahmans in the social life of South India was mainly due to the fact that the Brahmans were

A. the first beneficiaries of English education.

B. the first leaders in social reforms.

C. the most influential big landlords.

D. the first to join Home Rule agitation.

261. The activities of the Home Rule League were significantly common with older Moderates Except in

A. Organizing discussion groups.

B. mass sale of pamphlets.

C. extensive lecture tours.

D. intensity and extent.

262. Which one of the following peasant movements contributed directly and very substantially to the birth of Gandhain nationalistm?

A. The Bijolia Movement in Mewar.

B. The Tana Bhagat Movement in Chota Nagpur.

C. The Kheda Movement in Gujarat.

D. The Patidar Yuvak Mandal in Bardoli.

263. The first political organization founded in Mysore state by a non-Brahman was

A. The Praja Mithra Mandal.

B. The Dravida Munnetra Khazagam.

C. The Satyashodhak Samaj.

D. The Nadar Mahajan Sangam.

264. Subhash Bose after his election as a Congress President In Tripuri session (1939) was forced to resign within three months mainly because

A. he could not nominate an agreed working committee.

B. he was incapacitated by illness.

C. he had announced the formation of Forward Bloc.

D. he was not supported by the Leftists.

265. Subhash Bose was debarred from any Congress office for 3 years in August 1939 for

A. his demand for a time bound ultimatum to the British.

B. his formation of a Left Consolidation Committee.

C. his call for an all-India protest day on 9th July 1939.

D. his efforts to unite the various left groups.

266. The most decisive single reason behind British withdrawal from India was

A. the formation of the Azad Hind Government.

B. the north-eastern invasion of I.N.A.

C. the massive agitation against I.N.A. trial.

D. the disaffection in the British Indian Army.

267. Rabindra Nath Tagore's favourite hymn 'If there is none to heed your call, walk alone, walk alone' is best reflected in the activities of one of the following in freedom struggle.

A. Aurobindo Ghosh.

B. Subhash Chandra Bose.

C. Jaya Prakash Narain

D. [illegible]

268. The most important basis of the complaint of the frontier Gandhi that his movement had been 'Thrown to the Wolves' by the Congress leadership was

A. the rejection of the demand for a free Pathan State.

B. the failure to [illegible] Muslim [illegible] in Hindu majority.

C. [illegible] than N.W.F.P. had a congress majority provinces.

D. the plebiscite was forced on the province on the question of joining India and Pakistan.

269. The Khilafat question lost its relevance after 1922 because

A. Gandhiji was sentenced to six year imprisonment.

B. of the criticism that politics was mixed with religion.

C. of the successful emergence of Kamal Pasha in Turkey.

D. anti-imperialist feeling had preference over the concern for the Caliphs.

270. One among the following leaders had taken a different stand from the others after the withdrawal of the Civil Disobedience Movement. He was

A. Sardar Vallabh Bhai Patel.

B. Dr. Ansari.

C. C.R.Das.

D. Babu Rajendra Prasad.

271. The Nehru Report was not accepted at the 1928 Calcutta Conference mainly because

A. of the disagreement over the composition of the sub-committee.

B. of the objections raised by the Communal minded leaders.

C. a seperate electorate was not favoured.

D. no stress was laid on the idea of Poorna Swaraj.

272. Which one of the factors of the Nehru Report of 1928 is a missing ele[illegible] [illegible]day's India

A. A federal set up.

B. Linguistic States.

C. Provincial autonomy.

D. Reservation for the religious minorities in elections.

273. The Muslim League accepted the joint electorate system with a view

A. to show its protest against all whites Simmon Commission.

B. to win the sympathy of the Hindus.

C. to extend their support for National Solidarity.

D. not to antogonise the Hindu Mahasabha.

274. The birth of the All India Youth Congress was the result of

A. the interest aroused by the success of the Russian Revolution.

B. Gandhiji's failure to meet the aspirations of the Youths.

C. the dynamism and leadership displayed by Nehru and Subhash Chandra Bose.

D. the attraction towards socialism and radical solutions for India.

275. Bhagat Singh threw a bomb in the Central Legislative Council mainly with a view to

A. exhibit his conviction in the path of violance.

B. register his disapproval of the continuance of the British rule in India.

C. set a precedence for others to follow

D. propagate. [illegible]

276. The Chief adverse effect of Gandhiji's withdrawal from politics in 1922 was that

A. Gandhiji's decision was accepted without open opposition.

B. disintegration and disorganisation had set in the Congress Movement.

C. Communal elements took advantage of the situation.

D. the Swarajists and the non-changers' had caused political rot.

277. Which one was not a mistake on the part of the Nationalists in 1928?

A. they yielded to the pressure of the communalists.

B. they were ready to provide the necessary safeguards to protect the interests of the minorities.

C. they underestimated the mass support for the communalists.

D. they were ready to compromise with the British but refused to conciliate with the communalists.

278. Britains' after the War' attitude towards India's demand for freedom was vitally changed at the instance of

A. the directive issued by the Congress to the ministers to resign.

B. the war brought at the door step of India by Japan.

C. the call given by Gandhiji for a limited Satyagraha.

D. the collapse of France and the isolation of Britain.

279. The British succeeded in suppressing the Quit India Movement mainly because

A. the arrest of Gandhiji left the organisation leaderless.

B. the upper class and the bureaucracy [illegible] loyal to the Government.

C. the British succeeded in muzzling the press completely.

D. the intense military action overwhelmed the upsurge.

280. The deadlock created between the congress and the adament British in the wake of II World War resulted in

A. the confused state of thinking among the congress rank.

B. the difficulty in making successful negotiations.

C. the hasty directive issued to the provincial ministers to resign.

D. the congress's opposition to the British and the Muslim League opposing the congress.

281. Subhash Chandra Bose was criticised by the Nationalists primarily for

A. his design to return to India as a dictator from Japan.

B. his consent given against the moderate candidate in the Congress Presidential election.

C. his stay in Germany to secure the cooperation of the Germans.

D. his army joining the Japanese army in their march on India.

282. Ref: Page 272 - Modern India (A Publicity Poster)

Which one of the following became the immediate outcome of the 'Public Meeting'?

A. Khadi became a symbol of freedom.

B. Workers and leaders bravely courted arrests.

C. Unity was promoted among Hindus, Muslims, Sikhs and Christians.

D. A huge protest demonstration was organised against the Prince of Wales during his tour.

283. Which one of the following proposals of Sir Stafford Cripps was unacceptable to the Congress?

A. Proposal for dominion Constitution for India after the end of the war.

B. The right of secession from the Commonwealth.

C. the right of secession from the Federal Set up.

D. The party leaders with the Viceroy to form a responsible Cabinet.

C. even the Viceroy had to apprise the British of the serious situation of the Movement

D. it drew many Indians and the moderates to its fold.

288. When extremism was in the air Gandhiji choose Jawaharlal Nehru as his successor mainly because

A. he wanted to avoid a break-up of the party and a political set-back for a generation.

B. to disarm the old guard of Congressmen who disapproved the political trend.

C. Nehru had a large following in India.

D. Gandhiji found that Nehru could attach him to himself.

289. The best example of the 'Carrot and Stick' policy of the British during 1919 and 1937 was

A. the Rowlatt Act and enlargement of Provincial Legislatures in 1919.

B. the Reserved and Transferred subjects in Provincial administration.

C. Jallianwalla massacre incident and enlargement of franchise in 1919.

D. Central control over the Provincial Government and elected majority in the Legislative Assembly.

290. The Russian Revolution and India's struggle for freedom are comparable mainly in respect for,

A. the participation of unarmed peasants and workers.

B. the overthrow of an autocratic rule.

C. securing the legitimate rights.

D. establishing a socialistic society.

291. Gokhale has been called a follower of liberalism primarily because,

A. he had a preference for English Social reforms in the 19th century.

B. he was opposed to the terrorist activities.

C. he did not subscribe to the views of extremists.

D. he considered Morley-Minto reforms a step towards a responsible Government.

292. The ascendancy of Gandhiji in the political arena was the result of

A. the adoption of the Satyagraha technique in India.

B. the revolution caused in the Indian consciousness after the I World War.

C. his firm conviction in the triumph of truth and non-violence.

D. the lead given by him in the Champaran compaign.

293. Soon after the I world War the Prime Minister of England Asquith had declared, 'Henceforth the Indian questions would have to be approached from a new angle of vision'. Which one of the following factors warranted the above statement?

A. The impact of the Chinese and Russian Revolutions on the Indians.

B. Loss of British supremacy from its colonies.

C. The Lucknow pact with the Muslims and the determination of the Extremists.

D. Steps taken by the Nationalists in place of verbal expression.

294. Gandhiji transformed the Nationlist Movement into a mass movement through

A. the establishment of unity between the Hindus and the Muslims.

B. the compaign for popularising Khadni as the symbol of nationlism.

C. the act of surrender of the Kaiser-i-Hind Medal awarded to him.

D. the launching of the non-cooperation movement

295. The British people will have to beware, that if they do not want to do justice, it will be the boundan duty of every Indian to destroy the Empire, So declared Gandhiji. Which one of the following events runs counter to this declaration?

A. Launching of the Civil Disobedience Movement.

B. Involvement in the Champaran Satyagraha.

C. Playing a leading role in the Khilafat movement.

D. Reacting wildly at the Chauri-Chaura incident.

296. If the federal part of the Government Act of 1935 had become effective before 1939

A. Indians could have used the federation to promote unity and to extract more concessions from the British.

B. Position of India with its blood shedding would have been avoided

C. The government of India with central responsibility could continue further and the independence of India would have been delayed.

D. the transfer of power in 1947 could have been peaceful.

297. It was in South Africa that the Indian Nation was being formed. Which of the following is the most plausi-ble argument?

A. The Indians struggle in South Africa opened the eyes of the mighty masses of India to the oppressive rule of the imperialists.

B. Gandhi had learnt his basic ideas of satyagraha in South Africa.

C. Indian nationalists did their best to promote the cause of their country even by financial help.

D. The struggle of the Indians in South Africa and the national movement in India had been related from very early time.

298. The English trade policy had occasioned to the rise of Landlordism in India almost by

A. the absence of effective outlets of the capital of the rich in Industry.

B. the commerci[illegible] of agriculture.

C. the de-industrialisation of what was of India and negligence to set up new ones.

D. the impoverishment of peasants and Zamindars by strict revenue system.

299. 'Cities which had withstood the ravages of War and plunder failed to survive British conquest'. How this statement had been mainly reflected to?

A. Rushing of the masses to agriculture.

B. Disappearance of Indian rulers and their courts.

C. Exploitation of Indian industries by the one-way free trade.

[illegible] as an [illegible] race.

300. Had the modern transport and communication system been introduced earlier than

A. there would have been greater development of trade and commerce.

B. the national awakening might have come earlier leading to earlier attainment of independence.

C. Indian industries could have been saved by strengthening them before the establishment of English industries.

D. Class-consciousness could have diluted earlier enabling all classes of people to fight as one.

301. The nationlist movement in its first phase was not necessarily a filure as

A. it resulted in economic reforms.

B. it brought about social reforms.

C. it succeeded in creating a wide national awakening.

D. it promoted the ideas of democracy and constituional government.

302. The permanent settlement of Bengal was not extended to Madras Presidency mainly because

A. some elements of disagreement still existed in between the governments.

B. the age old land settlement system was not to be disturbed.

C. the old agrarian system was not suitable for implementation.

D. Munro objected to its extensive implementation in Madras.

303. The evolution of a new Agrarian relation in India in the 18th century had benefitted primarily

A. the cultivators, freeing them from the Zamindars.

B. the government by creating political allies with Zamindars.

C. the Government in protecting its revenue.

D. the Zamindars making them an important element in the society.

304. Which of the following had occasioned the interference of Britain on the Company's administration in India,

A. Enemies of the company had been pressing for it in parliament.

B. The interests of the British upper classes had been involved.

C. There was financial involvement of the British Government in the Company's trade.

D. The British administration was afraid of the growing strength of the company through trade.

205. The mills of Paisley and of Manchester would have been stopped at the outset if

A. steam power was not used.

B. prohibitive import duties were not imposed.

C. free trade was not introduced.

D. modernisation of India had not been advocated.

306. The Industrial Revolution in Britain would have been delayed if

A. Indian textiles had not posed a threat to the British economy.

B. The East India Company had not stimulated its trade with the East.

C. the British rulers had not protected the trade of the East India Company.

D. Britain had already evolved the colonial pattern of trade.

307. The promotion of opium trade by the British in China had effected.

A. the economic penetration of Britain in China.

B. the earning of profit for the East India Company.

C. the weakening of the Chinese resistance.

D. the collection of revenue for Indian administration.

308. While the Company's trade in India was in its full swing, the British manufacturer had been trying to exploit the Company in order

A. to destroy the company's trade in the East.

B. to use the Company's trade for their own ends.

C. to take advantage of the local industries.

D. to replace the political domination in India.

309. Many Britishers (1757-1857) advocated reduction in land revenue in India so that

A. the people of India might feel

B the Indian peasant might be in a better position to buy foreign goods.

C. the threat of a growing Company to the home government be curtailed.

D. the British residents in India is given changes to enjoy light payment.

310. Total destruction of the local industries in India in the early 19th century was the main aim of the British manufacturers mainly

A. to sell their manufacture.

B. to get raw materials for their industries.

C. to keep India industrially backward.

D. to encourage agriculture.

311. The difference in the social structure between the Mughal period and the early British period (1757-1813) was prominently focused in

A. the setting up of a propertied class, the Zamindars.

B. the throwing down of the peasants in the most wretched conditions.

C. the uprooting of the village craftsmen

D. the forcing of the city workers to join the peasant class.

312. The East India Company in supersession of the Act of 1773, accepted the Regulating Act of 1784 because

A. the act established a Board of Control to guide and Control the government of India.

B. the power of the Governor-general had been increased.

C. the East India Company was made the instrument of British national policy.

D. The East India Company was still left with its monopoly of the Indian and Chinese trade.

313. The administrative machinery of the Government of India (1757-1857) laid main emphasis on the maintenance of law and order so that

A. fear and mis-understanding of an alien rule could be removed.

B. economic exploitation could be carried out without disturbance.

C. the Company be politically strengthened to enable it to face threats from inside and outside.

D. the Company could carry out progressive administrative policies, land settlement, development of communication.

314. The great war that broke out in 1939 had tremendously affected the Indian National movement for the latter had for its benefit

A. to seek help of foreign powers to fight the imperialists in India.

B. to come to [illegible] the imp[illegible] India for the cause of democracy.

C. to face Jinnah's demand for the vivisection of India.

D. to concentrate all attention on attaining the political freedom of India as early as possible.

315. The Rowlatt Act 1919 was a watershed in the history of the National movement in India mainly for

A. the nationalist movement no longer confined its struggle to agitation.

B. The unmistakable symptom of a deep seated disease in the governing body was disclosed.

C. it brought [illegible] and the [illegible] together in political agitation.

D. it led to the first major country-wide satyagraha compaign.

316. 'Din-i-Ilahi' was [illegible] a mockery mainly because

A. there was no love lost between the different sects.

B. it brought no perpetual spiritual satisfaction

C. it vanished into thin air along with the death of its founder.

D. It [illegible] sectional feeling through competition.

317. What mainly did Gandhiji contribute to the Indian National Movement?

A. He made the Indian National Movement more truly Indian and

B. He transformed the character of the Congress by giving a new constitution and a new leadership.

C. He expounded mass satyagraha as a new technique of agitation.

D. He advocated ability to feel for the lowliest among them to end class-conflict.

- - - -

PART- B.

1.	C	26.	D
2.	A	27.	A
3.	D	28.	C
4.	C	29.	D
5.	B	30.	D
6.	C	31.	D
7.	B	32.	C
8.	D	33.	A
9.	B	34.	D
10	A	35.	B
11.	B.	36.	D
12.	C	37.	A
13.	D	38.	C
14.	C	39.	B
15.	D	40.	B
16.	A	41.	A
17.	B	42.	D
18.	C	43.	A
19.	D	44.	D
20.	B	45.	C
21.	B	46.	D
22.	A	47.	B
23	D	48.	D
24.	B	49.	D
25.	D	50.	E

51. D
52. D
53. E
54. B
55. A
56. B
57. D
58. A
59. A
60. C
61. A
62. B
63. C
64. D
65. D
66. D
67. A
68. D
69. D
70.B B
71. A
72. D
73. C
74. C
75. D
76. D
77. D
78. D
79. D
80. D
81. D
82. C
83. C
84. D
85. D
86. C
87. D
88. A
89. A
90. A
91. C
92. A
93. B
94. B
95. C
96. A
97. D
98. C
99. A
100. A

101.	A
102.	B
103.	A
104.	A
105.	A
106.	A
107.	B
108.	D
109.	A
110.	D
111.	B
112.	C
113.	D
114.	A
115.	A
116.	A
117.	A
118.	B
119.	A
120.	C
121.	C
122.	D
123.	B
124.	A
125.	C
126.	B
127.	A
128.	C
129.	D
130.	A
131.	C
132.	B
133.	B
134.	C
135.	A
136.	C
137.	C
138.	D
139.	B
140.	A
141.	[illegible]
142.	[illegible]
14[illegible].	C
144.	[illegible]
145.	[illegible]
146.	[illegible]
147.	A
148.	C
149.	C
150.	B

151.	D	176.	A
152.	C	177.	C
153.	C	178.	B
154.	C	179.	B
155.	B	180.	A
156.	A	181.	D
157.	C	182.	A
158.	C	183.	D
159.	C	184.	C
160.	D	185.	D
161.	D	186.	A
162.	C	187.	C
163.	C	188.	B
164.	C	189.	B
165.	C	190.	C
166.	B	191.	C
167.	C	192.	A
168.	B	193.	A
169.	C	194.	C
170.	A	195.	D
171.	D	196.	C
172.	D	197.	D
173.	D	198.	B
174.	B	199.	D
175.	C	200.	D

No.	Answer
201.	C
202.	C
203.	C
204.	D
205.	B
206.	C
207.	D
208.	D
209.	A
210.	A
211.	B
212.	C
213.	D
214.	B
215.	B
216.	B
217.	C
218.	B
219.	B
220.	B
221	B
222	B
223	C
224	D
225	A
226.	A
227.	C
228.	B
229.	C
230.	C
231.	B
232.	D
233.	A
234.	B
235.	D
236.	C
237.	C
238.	A
239.	D
240.	D
241.	C
242.	B
243.	A
244.	C
245.	B
246.	A
247.	B
248.	D
249.	D
250	B

251. D
252. A
253. A
254. B
255. A
256. D
257. B
258. A
259. D
260. A
261. D
262. C
263. A
264. A
265. A
266. D
267. A
268. A
269. C
270. C
271. B
272. D
273. C
274. C
275. B
276. C
277. B
278. B
279. A
280. D
281. C
282. D
283. D
284. B
285. C
286. A
287. D
288. A
289. B
290. C
291. D
292. B
293. C
294. A
295. D
296. C
297. A
298. D
299. C
300. A

301. C

302. C

303. C

304. C

305. B

306. A

307. A

308. B

309. B

310. A

311. B

312. D

313. B

314. B

315. D

316. B

317. A

LIST OF PARTICIPANTS

Mr. Nagendra Kumar
Badri Vishal,
P.G. College
Farrukhabad, U.P.

Mr. Daniel D Souza
St. Xauveis College,
Mapusa Goa-403525.

Dr. G.C. Verma,
Principal (Retired)
Jaipur-1.

Miss Leonie Picardo,
Lecturer,
Poona College of Arts,
Sc.& Commerce,
Poona-1.

Miss Savitri Kala
T.G.T. (Hm)
Kendriya Vidyalaya Clement
Town, Dehradun, U.P.

Mrs. Aruna Parashar
P.G.T. (History)
Kendriya Vidyalaya,
New Mahroli Road,
[illegible]

Mrs. Vimlesh Singh Ranawat
T.G.T. So.St.
Kendriya Vidyalay,
New Mahroli Road,
New Delhi(JNU)

Dr.(Miss) Sushma J.Varma
Lecturer in History
History Dept. Poona
University, Pune-411007.

Dr.Ashraf Sulaiman Sharique
Reader, Department of
Education, A.M.U. Aligarh.

Mr. M.Qasim Siddiqi
Principal +2,
4 Shibli Road A.M.U. Aligarh.

Mr. P.N. Dua
Senior Lecturer in History
Govt. National College,
Sirsa (Haryana).

Mr. T.H. Rizvi
P.G.T. History
Anglo Arabic
S.S.School, Ajmeri Gate,
Delhi.

Mr. Safdar Naqvi,
Principal,
Shafiq Memorial
Sr. Sec. School
Bara Hindu Rao, Delhi.

14. Mr. Satish Prasad
P.G.T. History
Pitts Modern School Gomia
P.O. IEL Gomia, DT-Giridih
(Bihar) Pin-829112.

15. Mr. Tajuram Barzari
Asstt. Teacher,
Hem Baruah Higher Secondary
School, Ghoramari,
P.O. Ghoramari,
Dist. Sonitpur, Assam.

16. Mr. R.K. Manisana Singh
Sr. Lecturer,
G.P. Women's College,
Imphal, Manipur,

17. Mr. C.P. Jha
Professor,
C.P. Jha, Dept. of History
University of Allahabad,
Allahabad-2.

18. Dr. C.L. Verma,
Reader & Head,
Deptt. of Ancien Indian
History Culture &
Archaeology, Nagpur
University, Nagpur.

19. Dr. B. Virottam
Univ. Prof. of History
Deptt. of History,
Ranchi University,
Ranchi

20. Mr. M.V. Somasundram
Sr. Master
Amaravathinagar-642102.

21. Dr. Tej Kumar Mathur,
Lecturer in History
Government College, Ajmer.

22. Dr.R.M. Chowdhuri
Retired Director of College
Education, Rajasthan, Ajmer.

23. Mr. Mahesh Chand Maheshwar
Senior Lecturer,
University College, Rohtak.

24. Mr.Harish Chandra Jain
S.T.C. Training School,
Jugal Road, Bikaner (Rajasthar

25. Mr. Dipak Kumar Chaudhuri
Lecturer in History
Tripura University,
Agartala, Tripura-799004.